श्री शारिका सहस्रनामस्तोत्रम्
स्वाहाकार निरूपणम्
एवं श्रीचक्र स्तुतिः

ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः ॥

सम्पादन एवं अनुवाद

डॉ. चमन लाल रैना

प्रकाशक

Jagat Guru Bhagavaan Gopinath Ji Charitable, Cultural and Research Foundation (Regd.), Uttam Nagar Delhi-59
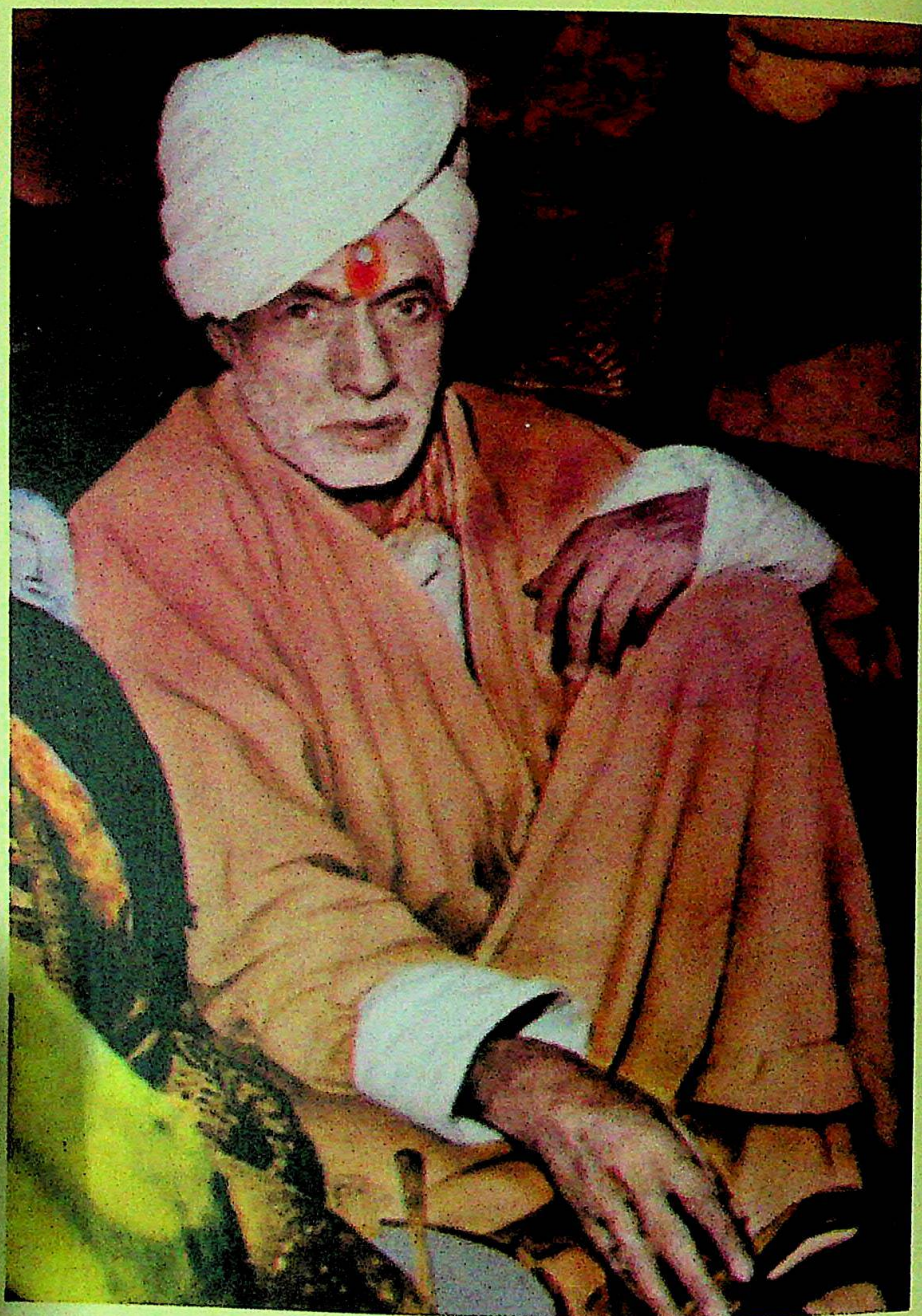
अरविन्द स्वरूपाय श्री गोपीनाथाय नमो नमः।

श्री शारिका सहस्रनामस्तोत्रम्
स्वाहाकार निरूपणम्
एवं श्रीचक्र स्तुतिः

ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः ॥
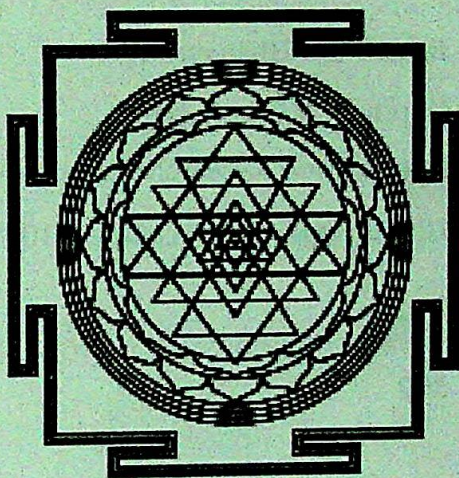
सम्पादन एवं अनुवाद

डॉ. चमन लाल रैना

प्रकाशक

जगद्गुरु भगवान गोपीनाथ जी चैरिटेबल,
कल्चरल एण्ड रिर्सच फॉउन्डेशन (रजि.)
उत्तम नगर, नई दिल्ली - 110 059

मूल्य 150/- रु.

प्रकाशन वर्ष: 2017

प्रकाशक : Jagat Guru Bhagavaan
Gopinath Ji Charitable,
Cultural and Research Foundation (Regd),
Uttam Nagar, New Delhi - 110 059

प्रतियाँ : 300

मूल्य : 150`

मुद्रक : जॉब ऑफसेट प्रिन्टर्स, ब्रह्मपुरी, अजमेर

अनुक्रमणिका

प्रकाशन वर्ष: 2017

प्रकाशक : Jagat Guru Bhagavaan
Gopinath Ji Charitable,
Cultural and Research Foundation (Regd),
Uttam Nagar, New Delhi - 110 059

प्रतियाँ : 300

मूल्य : 150`

मुद्रक : जॉब ऑफसेट प्रिन्टर्स, ब्रह्मपुरी, अजमेर

अनुक्रमणिका

राष्ट्रपति - सम्मानित | अध्यक्ष, मंजुनाथ स्मृति संस्थान

देवर्षि कलानाथ शास्त्री | जयपुर

(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी एवं
निदेशक, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार)
प्रधान सम्पादक "भारती" संस्कृत मासिक
सदस्य, संस्कृत आयोग, भारत सरकार
अध्यक्ष, आधुनिक संस्कृत पीठ,
प्र.रा. राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

शुभाशंसा

भारत में शक्तिपूजा की परम्परा अनादिकाल से चली आ रही है। मातृपूजा की इस परम्परा की अनेक धाराएँ इस देश में पनपी हैं। तान्त्रिक परम्परा में दश महाविद्याओं की उपासना सुदीर्घकाल से प्रचलित है। पौराणिक परम्परा में नव दुर्गाओं की उपासना भी लोकप्रिय है। दुर्गासप्तशती समूचे देश में दुर्गापूजा की आधार भूमि बनी हुई है। हमारी आराध्या इस शक्ति के अनेक रूप हैं, अनेक मूर्तियाँ हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि शक्ति साधना को समर्पित विश्वविदित विद्वान् डॉ. चमनलाल रैना शक्ति पूजा की परम्परा के अध्ययन, प्रसार और प्रकाशन के कार्य में अनेक दशकों से लगे हुए हैं। अजमेर से लेकर अमेरिका तक इन्होंने हमारी साधना-परम्पराओं का प्रसार किया है। कुछ दशक पूर्व इन्होंने दुर्गासप्तशती का अंग्रेज़ी संस्करण प्रकाशित किया था, जिसका समस्त विश्व में स्वागत हुआ।

शक्ति का एक स्वरूप अष्टादशभुजाधारिणी श्यामसुन्दरी देवी शारिका के रूप में भी पूजा जाता है। काश्मीर प्रदेश में इनकी उपासना प्रचलित रही है। 'शारिका' को कश्मीरी भाषा में (हॉर) कहा जाता है; जो उड़ कर कहीं भी पहुँच सकती है। वह श्यामवर्ण होती है, मधुरभाषिणी होती है। उसी का रूप धारण कर भक्तों को उत्तम फल देने वाली देवी शारिका की पूजा परम्परा भी प्रचलित है, कुछ स्त्रोत्र भी प्रचलित हैं। उनके सहस्रनाम का प्रकाशन प्रो. चमनलाल रैना द्वारा किया जा रहा है, यह हर्षप्रद समाचार है। शक्ति पूजकों द्वारा इसका भरपूर स्वागत किया जाएगा। इस प्रकाशन के उपलक्ष्य में मेरी हार्दिक शुभाशंसाएँ प्रेषित हैं।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सं. 2074 | देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(नववर्षारम्भ दिवस)

समर्पणम्

भगवान गोपीनाथ जी मुनियों में श्रेष्ठ, शब्दों से बहे हुए तथा अमृत के निधि हैं।

भगवान जी माता शारिका के साक्षात्कार से अनुगृहीत हुए थे। ये प्रतिवर्ष एक दो महीने श्री राम जू –पुजारी श्री प्रद्युम्न पीठ/शारिका पीठ के घर में जो शारिका पीठ की सीढ़ियों के पास ही था, रहा करते थे। इस मकान की ऊपरी मंज़िल में जिसकी खिड़किया श्री प्रद्युम्न पीठ की शिला की ओर खुली रहती थी, बाहिर मातृ तेज से प्रज्वलित दीखने वाले और अन्तर्तरंगहीन सागर की तरह शान्त, भगवान जी का दर्शन यहाँ अलौकिक होता था। कभी कभार उनके होठों की फिसलाहट से ऐसा प्रतीत होता था कि वे माता शारिका के साथ आनन्द मग्न होके संलाप करते हैं। कई भक्तों के साथ कभी कभार वे शिला की ओर उपर जाते थे जहाँ हमवार चट्टान पर कुछ देर बैठ कर आनन्द लेते थे।

एक बार भक्तों के आग्रह पर आषाढ़ शुकलपक्ष द्वादशी/हार बाह पर भगवान गोपीनाथ जी जयन्ती का आयोजन श्री राम जू पुजारी के घर पर ही हुआ। समा सुन्दर तथा शान्त वातावरण में चला। यहाँ उत्साह पूर्ण भक्तों ने झीलडल से 'ख्यल' मंगाए और भक्तों की काफी संख्या ने खाना इन्हीं पतलों पर प्रेम पूर्वक लिया, सेवक को भी इस में बैठने का सौभाग्य मिला।

1948 ई. में जब पाकिस्तान व भारत के बीच काश्मीर के सरहदों पर घमासान युद्ध चल रहा था, तो काश्मीर के भक्तजनों ने एक चण्डी यज्ञ का आयोजन श्री शारिका पीठ के आंगन में अपनी तोर से हालात को शांत करने के लिए किया। चूंकि भगवान जी कभी परिक्रमा हेतु दिन को हारी पर्वत आते थे तो उन्होंने देवी आंगन में यज्ञ को करते देख उसी तरफ रुख किया। यहाँ आयोजकों, श्रद्धालुओं तथा भक्तजनों ने खड़े होकर भगवान जी से प्रार्थना की, कि देश पर आफत आ पड़ी है, उन्हें सहारा चाहिए। इस पर भगवान जी ने उन्हें ढाढ़स बांधी और कहा कि चिन्ता की कोई बात नहीं, वह स्वयं ही सरहदों की देखरेख करते हैं।

राष्ट्रपति - सम्मानित | अध्यक्ष, मंजुनाथ स्मृति संस्थान
देवर्षि कलानाथ शास्त्री | जयपुर
(भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी एवं
निदेशक, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार)
प्रधान सम्पादक "भारती" संस्कृत मासिक
सदस्य, संस्कृत आयोग, भारत सरकार
अध्यक्ष, आधुनिक संस्कृत पीठ,
प्र.रा. राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय

शुभाशंसा

भारत में शक्तिपूजा की परम्परा अनादिकाल से चली आ रही है। मातृपूजा की इस परम्परा की अनेक धाराएँ इस देश में पनपी हैं। तान्त्रिक परम्परा में दश महाविद्याओं की उपासना सुदीर्घकाल से प्रचलित है। पौराणिक परम्परा में नव दुर्गाओं की उपासना भी लोकप्रिय है। दुर्गासप्तशती समूचे देश में दुर्गापूजा की आधार भूमि बनी हुई है। हमारी आराध्या इस शक्ति के अनेक रूप हैं, अनेक मूर्तियाँ हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि शक्ति साधना को समर्पित विश्वविदित विद्वान् डॉ. चमनलाल रैना शक्ति पूजा की परम्परा के अध्ययन, प्रसार और प्रकाशन के कार्य में अनेक दशकों से लगे हुए हैं। अजमेर से लेकर अमेरिका तक इन्होंने हमारी साधना-परम्पराओं का प्रसार किया है। कुछ दशक पूर्व इन्होंने दुर्गासप्तशती का अंग्रेज़ी संस्करण प्रकाशित किया था, जिसका समस्त विश्व में स्वागत हुआ।

शक्ति का एक स्वरूप अष्टादशभुजाधारिणी श्यामसुन्दरी देवी शारिका के रूप में भी पूजा जाता है। काश्मीर प्रदेश में इनकी उपासना प्रचलित रही है। 'शारिका' को कश्मीरी भाषा में (हॉर) कहा जाता है; जो उड़ कर कहीं भी पहुँच सकती है। वह श्यामवर्ण होती है, मधुरभाषिणी होती है। उसी का रूप धारण कर भक्तों को उत्तम फल देने वाली देवी शारिका की पूजा परम्परा भी प्रचलित है, कुछ स्त्रोत्र भी प्रचलित हैं। उनके सहस्त्रनाम का प्रकाशन प्रो. चमनलाल रैना द्वारा किया जा रहा है, यह हर्षप्रद समाचार है। शक्ति पूजकों द्वारा इसका भरपूर स्वागत किया जाएगा। इस प्रकाशन के उपलक्ष्य में मेरी हार्दिक शुभाशंसाएँ प्रेषित हैं।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सं. 2074 | देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(नववर्षारम्भ दिवस)

समर्पणम्

भगवान गोपीनाथ जी मुनियों में श्रेष्ठ, शब्दों से बहे हुए तथा अमृत के निधि हैं।

भगवान जी माता शारिका के साक्षात्कार से अनुगृहीत हुए थे। ये प्रतिवर्ष एक दो महीने श्री राम जू –पुजारी श्री प्रद्युम्न पीठ/शारिका पीठ के घर में जो शारिका पीठ की सीढ़ियों के पास ही था, रहा करते थे। इस मकान की ऊपरी मंज़िल में जिसकी खिड़किया श्री प्रद्युम्न पीठ की शिला की ओर खुली रहती थी, बाहिर मातृ तेज से प्रज्वलित दीखने वाले और अन्तर्तरंगहीन सागर की तरह शान्त, भगवान जी का दर्शन यहाँ अलौकिक होता था। कभी कभार उनके होठों की फिसलाहट से ऐसा प्रतीत होता था कि वे माता शारिका के साथ आनन्द मग्न होके संलाप करते हैं। कई भक्तों के साथ कभी कभार वे शिला की ओर उपर जाते थे जहाँ हमवार चट्टान पर कुछ देर बैठ कर आनन्द लेते थे।

एक बार भक्तों के आग्रह पर आषाढ़ शुकलपक्ष द्वादशी/हार बाह पर भगवान गोपीनाथ जी जयन्ती का आयोजन श्री राम जू पुजारी के घर पर ही हुआ। समा सुन्दर तथा शान्त वातावरण में चला। यहाँ उत्साह पूर्ण भक्तों ने झीलडल से 'ख्यल' मंगाए और भक्तों की काफी संख्या ने खाना इन्हीं पतलों पर प्रेम पूर्वक लिया, सेवक को भी इस में बैठने का सौभाग्य मिला।

1948 ई. में जब पाकिस्तान व भारत के बीच काश्मीर के सरहदों पर घमासान युद्ध चल रहा था, तो काश्मीर के भक्तजनों ने एक चण्डी यज्ञ का आयोजन श्री शारिका पीठ के आंगन में अपनी तोर से हालात को शांत करने के लिए किया। चूंकि भगवान जी कभी परिक्रमा हेतु दिन को हारी पर्वत आते थे तो उन्होंने देवी आंगन में यज्ञ को करते देख उसी तरफ रुख किया। यहाँ आयोजकों, श्रद्धालुओं तथा भक्तजनों ने खड़े होकर भगवान जी से प्रार्थना की, कि देश पर आफत आ पड़ी है, उन्हें सहारा चाहिए। इस पर भगवान जी ने उन्हें ढाढ़स बांधी और कहा कि चिन्ता की कोई बात नहीं, वह स्वयं ही सरहदों की देखरेख करते हैं।

भगवान जी ने कई योग्य भक्तों को इसी परिसर में शारिका माता का दर्शन बच्चियों के स्वरूप में कराया। कदाचित् वह देवी के सूक्ष्म स्वरूप के दर्शन को सहन नहीं कर सकते थे। अतः उन्हें मानव-रूप में दर्शन प्राप्त हुए। भगवान जी सूर्य से देदीप्यमान और चन्द्रमा से शीतल है। उनमें सागर की गहराई और आकाश का विस्तार है।

सत्य का ज्ञान प्राप्त कराना, लोगों के दुःख दूर करना और साधना के इच्छुकों का आध्यात्मिक मार्ग दर्शन करना ही उनका उद्देश्य था।

2016 ई. में भगवान जी की कृपा से हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में बसने वाले काश्मीरी लोगों से हमारा संपर्क हुआ, जो अब से बहुत पहले काश्मीर से विस्थापित हुए थे। इस मेल ने हमारे में नई आस जगाई और फलस्वरूप 'प्रद्युम्न पीठ, शारिका पीठ' और जगद्गुरु भगवान गोपीनाथ मन्दिर कमेटी गांव समलोटी, तहसील नगरोटा बगवां की स्थापना हुई, जिसमें एक पूजा स्थल, माता व भगवान जी की मूर्तियां स्थापित हुई हैं। और बड़े प्रेम तथा विधि विधान से पूजा अर्चना आरम्भ हुई है।

इसमें डा. अश्विनी बज़ाज, श्री अरुण धर, केप्टिन महेश चन्द्र शर्मा, श्री शाम प्रसाद एवं फाउंडेशन के सदस्य और बहुत सारे धन्यवाद के पात्र सिद्ध हुए हैं। अब डा. चमन लाल रैणा जो आध्यात्मिक क्षेत्र के शोधकर्ता रहे हैं इस समय अजमेर में निवास करते हैं, ने इस प्रयास में ''शारिका निरूपणम्'' पुस्तक को बनाने का प्रयास किया, जो उन्होंने अपने पूर्वजों के सुन्दर भंडार में से मां शारिका की पूजा पद्धति व रहस्य विश्लेषण पूर्ण साधकों के हेतु जगत् गुरु भगवान गोपीनाथ जी चैरिटेबल कल्चरल और रिसर्च फाउन्डेशन को समर्पित किया, हम उन्हें धन्यवाद कहते हैं। आशा करते हैं कि यह पुस्तक सारे भक्तों विशेषकर विस्थापित बन्धुओं के लिए शुभ तथा लाभदायक सिद्ध होगी। तथास्तु

-प्राणनाथ कौल
अध्यक्ष फाउन्डेशन

प्राक्कथन

कश्मीर भारत की हिमालय पर्वतीय घाटी है, अति सुन्दर और रमणीय, जहाँ के कण-कण में प्रकाश स्वरूप **शिव** और **विमर्श** के रूप में शक्ति है। इसमें कोई भी संदेह नहीं है, कि प्राचीन काल से ही कश्मीर शैव शास्त्रों के साथ-साथ **आगम** विद्या का भी प्रमुख केन्द्र रहा है, जिसका सम्बंध आचार्य **अभिनवगुप्त** कृत तन्त्रालोक तथा रुद्रयामल तंत्रों पर आधारित शक्ति-**देवी भवानी** के सहस्रनामों एवं रहस्यों से है। इस समय भी पञ्चदेव पूजा, अर्चना, होम-यज्ञ में श्रीगणेश, शिव, शक्ति, विष्णु तथा सूर्य की विधिवत, पञ्चोपचार, षोडशोपचार एवं पञ्चदशोपचार से होती है। काश्मीर की पूजा-पद्धति को ऋषि लौघाषि ने वेदों तथा शैव-शाक्त आगम शास्त्रों के मंत्रों को समन्वयित रूप से निरूपित किया, जो सनातन धर्म की एक विशेष कृत्ति है। दार्शनिक एवं वैचारिक रूप से कश्मीर के सनातन धर्मी शैव सम्प्रदाय से प्रभावित है, परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से शाक्त हैं। व्रतों से, गायत्री उपनयन संस्कार से एक ओर वैदिक परम्परा को अपना रहे हैं..., जैसे सौलह संस्कारों में सर्वप्रथम कलश पूजा में-इन्द्र कलश तथा ब्रह्म कलश के साथ आगम शास्त्रों पर आधारित विभिन्न यंत्र बनाये जाते हैं, तो दूसरी ओर विधिवत कलश में वेदों की कुछ ऋचाएं निवेदित कर फिर आगम शास्त्र के श्लोकों द्वारा कलश में **अक्षोट**-अखरोटों की, जिसे ऋतुफल भी कहते हैं, विशेष पूजा भी होती है। किस पूजा में, किस पुष्प का प्रयोग होता है, परम्परा से यह बात सभी को विदित है। इस परम्परा में मिट्टी का दीपक आग्नेय कोण में स्थापित करना अनिवार्य है। दीपक में सरसों का तेल ही प्रयोग में

लाया जाता है। कलश **ईशान कोण** में स्थापित किया जाता है। पूर्व में इष्ट देवी तथा उसी के साथ दो कांस्य कटोरियों अथवा कश्मीरी **'खोस'** में क्षेत्रपालों की पूजा की जाती है। प्रणीत पात्र का होना अनिवार्य है।

कश्मीरी परम्परा में अग्नि कुण्ड एवं वेदी दोनों प्रचलित हैं। लघुकाय संस्कारों में ईंट की वेदी ही प्रयोग में लाई जाती है, जबकि सामूहिक यज्ञों में, यज्ञोपवीत संस्कार में इष्टकाओं से निर्मित **अग्निकुण्ड** ही वाञ्छनीय है, अथवा समय-काल-दिशा के अनुसार उसमें व्यवस्था दी जाती है।

यज्ञ-होम में यज्ञ-कुण्ड के मध्य (पश्चिम) में **श्रीफल** स्थापित किया जाता है, जो **श्री गणेश** का प्रतीक है। प्रत्येक होम में श्री गणेश साक्षी होते हैं।

अग्नि का आह्वान, वैदिक अनुष्ठान द्वारा किया जाता है, परन्तु गणेश जी का स्वाहाकार शर्कर/शकर से, लड्डू से करना अनिवार्य है, शिव स्वाहाकार में नबात, काली मिर्च, गुगल आदि से निवेदित किया जाता है। भगवान **विष्णु, सूर्य** और **शक्ति** (इष्ट देवी) को अक्षत-चावल, जौ (यव), नारियल, बादाम, खर्जूर, मेवा-ड्राई फ्रुट (शुष्क फल) मिलाकर एक एक हज़ार आहुतियाँ निवेदित की जाती है।

होम की प्रक्रिया में **आज्य होम**-घृत द्वारा, **अन्न होम** चावल से एवं **यवतिल** - जौ और तिल से आहुति देना आवश्यक है। इनमें **नवग्रह शान्ति, रौद्री, पुरुष सूक्त, देव्यथर्व शीर्ष, गणपत्यथर्व-शीर्ष** के मंत्रों से होम किया जाता है। समय समय पर भिन्न-भिन्न आचार्यों ने पूर्णत्व की प्राप्ति के लिए और आध्यात्मिक चेतना को प्रसुप्तावस्था से संवित् शक्ति एवं कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करने के लिए, इष्ट देवी का सहस्रनाम से पूजा-अर्चना के साथ साथ विधिवत होम अनुष्ठान करने की विधि दी है।

होम तीन प्रकार के होते हैं–१. **अग्नि होत्र - नित्य होम**, २. **पक्षाग्नि**, ३. **यज्ञानुष्ठान-नैमितिक**-जागत् कल्याण के लिए अथवा किसी कामना की अभीष्ट सिद्धि के लिए। काश्मीर में मुख्यतः सामूहिक अथवा आश्रम सम्बंधित यज्ञों का सम्पादन होता है। इस कोटि में **क्षीर भवानी, शारिका पर्वत** (हारी परबत / पोखरी बल), **ज्येष्ठा भगवती, भद्रकाली, बाला देवी, त्रिपुरसुन्दरी** के यज्ञ किये जाते हैं। मुख्यतः **भवानी सहस्त्रानाम, राज्ञी भगवती** (राज्ञा सहस्त्रनाम) तथा **श्री शारिका भगवती सहस्त्रनाम** का अनुष्ठान किया जाता है।

आगम कहता है–"**संविदेव हि भगवती वस्तूपगमे कारणम्।**" संवित् शक्ति ही किसी भी अभीष्ट वस्तु को प्राप्त करने के लिए निमित्त कारण है। इसका तात्पर्य है–सूक्ष्म ज्ञानामृत की प्राप्ति एवं **धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष** की प्राप्ति।

लौगाक्षि ऋषि की पद्धति के अनुसार जिस किसी भी देव अथवा देवी का होम/यज्ञ करना अभीप्सित है, उसी देवी/देवता के बीजाक्षर-बीज मंत्र के द्वारा, अनुष्ठान स्वरूप में प्रायोजित करना है। **चैतन्यमात्मा** एवं **संवित् शक्ति** में किसी भी प्रकार का द्वैत नहीं है। बीजाक्षर **हिरण्यगर्भ** का अक्षर ज्ञान है। इन अक्षरों में ध्वनि का आलोक भी है, तथा अर्थ का गाम्भीर्य भी। भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ मातृकाओं का शब्द शरीर धारण कर अनुष्ठान में प्रकट रहती है। "यह मातृकाएं '**देशिक रूपेण दर्शिताभ्युदयाम**'–देशिक अर्थात गुरु रूप से आकर अभ्युदय का मार्ग दिखाने वाली होती है।" (श्री शङ्कराचार्य देवी स्तुतिः से उदृत) प्रस्तुत पुस्तक में निवेदित है–

ॐ श्री शारिकायै नमः। अभीष्ट देवी शारिका को नमन हो।

१. ॐ ह्रीं श्रीं हूँ फ्रां आं शां शारिकायै नमः/स्वाहा

ॐ प्रणव स्वरूप एकाक्षर ब्रह्म है। इसी में ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर का नादात्मक स्वरूप सन्निहित है। **ह्रीं लज्जाबीज** है। **श्रीं वैखरी** स्वरूप बीजाक्षर है, हूँ-आहुति स्वरूप प्रस्तुति एवं नियंत्रण शक्ति, **फ्रां** कीलक अर्थात कील द्वारा बद्धमुद्रा में डालना है। **आं**-सर्वत्र व्याप्त दीप्ति, **शां**-शारिका का **जगन्मातृ स्वरूप** है। **नमः** नमस्कार से वन्दनीय एवं **स्वाहा** से आहुति प्रदान कर निमंत्रण प्रदान करना है।

(वास्तव में गुरु कृपा से ही बीजाक्षरों का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।) बीजाक्षर–'**अरण्यबीजाञ्जलिदान लालिताः**' अर्थात् अरण्य क्षेत्र में अञ्जलि (जल) आदि से पोषित बीज, अङ्कुरित होता है। बीजाक्षरों का आह्वान करना, उनके साथ तादात्म्य स्थापित करना, श्रीस्वरूपा देवी को प्रिय है। इसलिए **श्रीचक्र** स्तुति में कहा गया है– "**श्रीचक्रप्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्रीराजराजेश्वरी।**" जल की अञ्जलि से पृथ्वी तत्व में बीज स्थापित होकर फलीभूत होता है। बीजाक्षर का एक **आदि वर्ण** तथा अन्त **अनुस्वार** होता है। प्रत्येक शक्ति का अपना शक्तिमान होता है। जैसे श्रीमहाराज्ञी **देवी के** भूतेश्वर, श्रीशारिका देवी के श्रीमहादेव, ज्येष्ठा भगवती के ज्येष्ठेश्वर, श्रीकाली के महाकाल, श्री त्रिपुरसुन्दरी के श्रीत्रिपुरारि शङ्कर है, इसी प्रकार **प्रद्युम्नपीठ** पर **स्वयंभू चक्रेश्वर** की शक्ति श्री चक्रेश्वरी है। आध्यात्मिक दृष्टि से प्रमाण :

चक्रेश्वरं सचन्द्रेशं कश्यपेशं विलोहितम्।
कामेशं सवासिष्ठेशं भूतेशं सगणेश्वरम्॥
दुर्गां गौरीं सुविजयां शकुनीं ब्रह्मचारिणीम्।
चक्रेश्वरीं तथा दृष्ट्वा मनोरथमावाप्नुयात्॥

–नीलमीत पुराण (1060, 1053 श्लोक)

चक्रेश्वर एवं चक्रेश्वरी का स्वरूप नित्य अभेद है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, जिस प्रकार शब्द का अर्थ से सम्बंध है, इसी प्रकार शारिका देवी का स्वरूप श्रीचक्ररूप-चक्रेश्वरी में चक्रेश्वर, चार चक्रों में व्याप्त है, और स्वयं चक्रेश्वरी पाँच चक्रों की स्वामिनी है।

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं,
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।
अतस्त्वामाराध्या हरि हर विरिञ्च्यादिभिरपि-
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृत पुण्यः प्रभवति॥

–सौन्दर्यलहरी श्लोक

परात्पर ब्रह्म, शिव निष्क्रिय, निरञ्जन एवं शान्त होते हुए भी पराशक्ति के आश्रय से ही त्रिगुणात्मक स्वरूप को धारण करते हुए सृष्टि, स्थिति एवं लय में संलग्न रहते हैं। अतः शिव शक्ति से युक्त होकर ही सृष्टि आदि का निर्माण करते हैं, अन्यथा स्वयं शिव असमर्थ होते हैं। जो पराशक्ति हरि, हर तथा ब्रह्मा द्वारा भी आराध्या देवी है, अतः साधारण जीवात्मा-मानव शरीर धारी, पुण्यहीन मनुष्य के लिए पराशक्ति की स्तुति करना कठिन कार्य है। तो भी आप करुणा की निधि होते हुए, अनुकम्पा के सहारे, इस **सौंदर्य लहरी** का आरम्भ करता हूँ। वास्तव में कोई पुण्यात्मा ही परा भट्टारिका श्री राजराजेश्वरी की स्तुति में प्रयत्नशील रहता है।

प्रथम शारदीय नवरात्र
–सप्तऋषि संवत् 5093
28 अप्रेल, 2017
अजमेर

–चमन लाल रैना

ॐ श्रीं शार्यै नमः
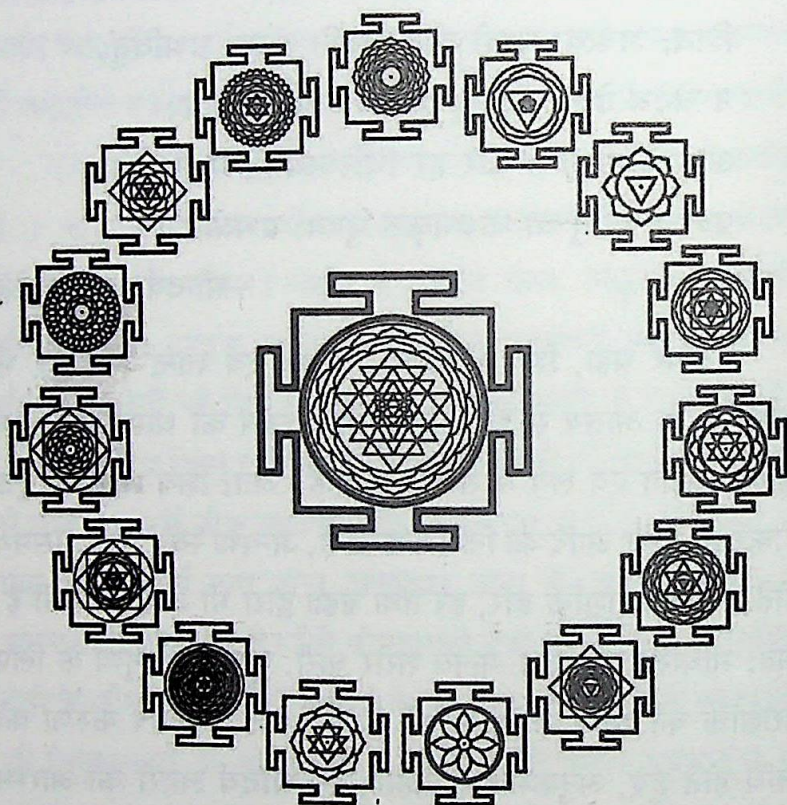
सर्व यंत्रमयी देवी
नित्य स्वरूपा श्री शारिका
पातु नः

श्री शारिका सहस्त्रनाम-एक निरूपणम्

श्रीशारिका सहस्त्रनाम के ऋषि वामदेव हैं। अनुष्टुप छन्द में वर्णित श्री शारिका भगवती स्वयं इस सहस्त्रनाम की अधिष्ठात्री देवी है, '**शां**' बीज रूप में है, **श्रीं शक्ति** है तथा '**फ्रां**' शब्द से कीलित अर्थात् सुरक्षित हुई शारिका का विनियोग निवेदित किया जाता हैं। विनियोग अभीष्ट सिद्धि के लिए प्रयोग में लाया जाता है। '**शां**' शब्द व्यंजनों में 49 वां वर्ण हैं **श** वर्ण से **आ** एवं अनुस्वार लगाकर बीज अंकुरित होता है। तालु से इस व्यंजन का उच्चारण है। **शकार** के रूप में इस व्यंजन का निर्देश होता है। दुर्गा सप्तशती कवचम् के आधार पर "**महामाया तु तालुके**" के अनुसार '**श**' वर्ण में महामाया का वास है। '**श**' **शिव** है। शम्-कल्याण सुख शान्ति कारक है। **शां** शब्द दुर्गा का बीजवर्ण है। **पार्वती** एक गुण है जिसके कारण शाम्भवी अवस्था का आभास मिल सकता है। श्री शक्ति स्वरूपा श्रेयस देने वाली महालक्ष्मी का बीजाक्षर है, विनियोग द्वारा **शां-श्रीं** बीज का **फ्रां** तत्व से **कीलन** अथवा कीलित किया जाता है। **फ्रां** शब्द का '**फ**' संस्कृत वर्णमाला का अड़तीसवां वर्ण है, व्यंजनों में स्पर्श वर्ण है। इसका उच्चारण ओष्ठों के परस्पर सम्पर्क से होता है, तंत्र के मंत्रो में 'फ' - फ्+अ के संयुक्त भाव से अणुप्राणित शब्द **फ्रां** शिव, शक्ति, अग्नि तथा वषट्कार का नाद रूप है।

शारिका सहस्त्रनाम में देवी का भव्य स्वरूप विश्वधारा की भान्ति मधुरमय इस प्रकार वर्णित है-

या सा देवी पुराख्याता शारिका रूपधारिणी।
जालन्धर राक्षसघ्नी प्रद्युम्नशिखरे स्थिता।
तस्या नाम सहस्त्रं मे मंत्र गर्भं जयावहम्॥

प्रद्युम्न पर्वत के शिखर पर अपना आसन धारण किये हुए जो देवी आदिकाल, पुरातन समय से विख्यात है, वही श्री शारिका का रूप धारण करती है। जालन्धर राक्षस का संहार करने वाली देवी शारिका सहस्त्रनाम से अलंकृत है, वहीं सहस्त्रनाम समस्त मन्त्रों का हिरण्यगर्भ

है। वही सदा सर्वदा जय तथा विजय प्रदान करने वाली है। इस सहस्रनाम में महादेव **श्री भैरव** के स्वरूप में प्रकट होकर **श्री भैरवी को** इस प्रकार निवेदन करते हैं–

इस स्तोत्र का पाठ, अर्चना, होम, ध्यान करना कितना श्रेयस्कर है, इसका अनुमान साधकों की श्रीशारिका पर्वत की परिक्रमा करने से, ध्यान से, नित्य होम से देखना होगा।

श्रीशारिका में आसीन देवी अष्टादश भुजा के सन्दर्भ में क्या कहा जाए, जिसके मुख्य द्वार पर स्वयं **श्री गणेश** विराजमान हैं। **श्रीशारिका श्यामसुन्दरी** नाम से पूजित है। यही **भुवनेश्वरी** भी है और **शिव शक्ति की अभिन्न स्वरूपा शिला चक्रेश्वर** भी है। इसी शिला का **श्री राजराजेश्वरी** मन्त्रों से अभिषेक किया जाता है। जिसका क्रम–

"**क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं**" है।

यह श्रीविद्या का बीजमंत्र है। इसी शिला में वाक्माला से अलंकृत **आदिक्षान्तं अक्षर मूर्ति**, जो **अ** वर्ण से लेकर **क्ष** वर्ण तक **श्री चक्रस्वरूप** के आकार स्वरूप में है। यही काम कला में विलास करने वाली कामेश्वर और कामेश्वरी का युगल पाषाण विग्रह है। पूर्णेश्वरी के रूप में ओम्कार स्वरूप से विद्यमान होकर वेदमाता गायत्री का मांत्रिक रूप धारण करती है। मुख्यतः श्रीशारिका का सात्विक **लज्जा बीज 'ह्रीं'** है। यह बीज मध्यकूट से पूजा जाता है।

प्रज्वलन करने वाली देवी **ह्रीं** बीज के द्वारा ही मूलाधार में निवास करती है। इस चक्रेश्वरी की ज्योति चैतन्यमयी है, अतः शैव शास्त्रों में **प्रकाश** और **विमर्श** के दो अन्योन्य पूरक **शिव** और **शक्ति** है। आगम और तन्त्र शस्त्रों की कुञ्जिका स्वयं **शिला शारिका** है। इसी लिए हमारे पूर्वजों ने साधना के आधार पर, तपस्वी बने सन्तों ने साक्षात्कार किये। समय-समय पर शैवाचार्यों के अतिरिक्त स्वामी **साहिब कौल, पण्डित कृष्ण जू कार, ऋषिपीर साहिब, अलखेश्वरी माता रूपाभवानी, महामाहेश्वराचार्य स्वामी श्रीराम, स्वामी विद्याधर**

जी, तथा बब भगवान गोपीनाथ जी ने शक्ति रूपिणी शारिका से शक्तिपात प्राप्त किया। यही श्री शारिका का दिव्य प्रभाव है।

श्रीचक्र समस्त चक्रों का सिरमोर है। चक्रेश्वर समस्त बीजाक्षरों का सार है। **ऊँ ह्रीं श्रीं हूँ आं शां श्रीशारिकायै नमः** शब्द रूप से इसी महान चक्र में वैदिक ऋचाओं को आमंत्रित करता है। **'श'** वर्ण पर सुशोभित श्रीशारिका भगवती शारिका सहस्रनाम के विविध स्वरूपों की देवता है। देवता शब्द संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से स्त्रीलिंग है। देवता में दिव्य तत्त्व तथा देवत्व होता है।

शारिका स्तुतिः में देवी का स्वरूप इस प्रकार है-

बीजैः सप्तभिरूज्जवला कृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः
सप्तर्षि प्रणताङ्घ्रिपंकज युगा या सप्तलोकार्ति हृत।
काश्मीर प्रवरेश मध्य नगरे प्रद्युम्नपीठे स्थिता
देवी सप्तकसंयुता भगवती श्री शारिका पातुः नः।

देवी श्री शारिका हम सभी की रक्षा करे! यही देवी सात बीजाक्षरों से देदीप्यमान है। इसकी द्युति प्रकाश सूर्य की सात किरणों से अति सुशोभनीय है। सप्तर्षि सदैव ही नतमस्तक होकर तेरे कमल जैसे पादों की सेवा में रत रहते हैं। कश्मीर के भव्य मध्य नगर में स्थित **प्रद्युम्नपीठ** पर आसीन **श्रीचक्रेश्वरी** देवी सप्तक के सभी रहस्यों को जानती है।

श्रीशारिका की शिला के श्रीविग्रह में ही पूजा होती है। इसी लिए पण्डित कृष्णजू कार की स्तुति में कहा गया है-

श्री वर्णात्मिकायै शारिका देव्यै नमः

शारिका सहस्रनाम के तृतीय नामावली में **"श्री शिलायै स्वाहा"** नाम से श्री शारिका के निमित्त होम द्वारा आहुति दी जाती है। यह गौरी है, जो पीत वस्त्र धारिणी है। इसकी प्रभा अनार के पुष्प की लालिमा से युक्त है।

'अ' वर्ण से आद्या, अचिन्त्या, अलका, अनन्ता, अप्रमेया, अनन्ता अग्नितर्पिता, आनन्दकन्दला, अयाजका, आहुत्या, आकृत्या, अरूपा, अलम्भसा, अकारा, अक्षरा, अमा, अपराजिता, अम्बिका, अनन्तगुणमेखला,

आद्रिकन्या, अट्टहासा, अजरा, अरुन्धती, अब्जा, अम्बुजसंस्थिता, अब्जहस्ता, अब्जपादा, अकारमातृका, आनन्दसुन्दरी, आर्या, आघूर्णा, आदिदेवी, अनन्तक्रूरा, आदित्यकुलभूषणा, आम्बीज-मण्डला, आकारमातृका, आस्वादा, आदित्यप्रभा, अःस्वरूपा, आद्यबीजा, अभया, नामावली से आहुतियाँ दी जाती हैं।

'श' वर्ण से श्यामसुन्दरी, शारी, शुक्या, शान्तमानसगोचरा, शान्तिस्था, शान्तिदा, शान्तिः श्यामपयोधरा, शशांकबिम्बाढ्या, शशांककृतशेखरा, शान्ताशोभलावण्या, शार्दुलवाहा, शार्दूलचर्मवासा, शिवा, शिवाश्रया, शरच्छान्ता, शची, शिवालया, शिलारूपा, श्रुतिधरा, श्रुति, शास्त्रार्थकोविदा, श्रीदा, श्रीतश्रीदा, शतायुधा नामों से आहुतियाँ समर्पित की जाती हैं।

'अ' और 'श' वर्ण की विशेषता-अ से तात्पर्य अनन्त वैष्णवी शक्ति है। अ-प्रणव अ, उ, म् का आदि बीज है। 'अ' संस्कृत वर्णमाला का प्रथम अक्षर व प्रथम स्वर है, जो कण्ठ से उच्चारित होता है। 'अ' शिव स्वरूप है। अतः प्रकाश का आदि स्रोत है। 'अ' अभाव के कारण अक्षर न समास होने वाला वर्ण भी हैं अक्षरमूर्ति वर्णमाला का प्रथम वर्ण होने से 'अ' का स्थान चक्रेश्वर में बिन्दु है। 'अ' अमा कला का भी प्रतीक है। शास्त्रों में कहा गया है-

अकारो विष्णुरुद्दिष्ट उकारस्तु महेश्वरः।
मकारस्तु स्मृतो ब्रह्मा प्रणवस्तु त्रयात्मकः॥

अकार विष्णु का ध्वन्यात्मक स्पन्दन है, उकार महेश्वर का लयात्मक नर्तन है। मकार में ब्राह्मी स्थिति होती है। यही प्रणव होने का एकाक्षर स्वरूप है।

'श' वर्ण शान्ति प्रदा है। 'श' में शैवी शक्ति स्वयमेव निहित है। 'श' प्रसन्नता का प्रतीक भी है। ऐन्द्री शक्ति का आदिकारण 'श' वर्ण है।

शारिका दुर्गा है। रुद्रयामल तन्त्र में शारिका से सम्बन्धित स्तोत्र एवं नामावली प्राप्त होती है। यह सहस्रनाम मन्त्र स्वरूप गर्भ के 'श्रेयस' नाम से प्रसिद्ध है। परा विद्या शिवा, शारिका के रूप में अवतरित होकर चक्रेश्वर के स्वयंभू शिला में प्रवेश करती है।

या देवी चेतना लोके शिलारूपास्ति शारिका,
सृजत्यवति सा विश्वं संहरिष्यति तामसी।
रजोगुणेन सृजति सत्वेनावति संसृतिम्,
तमसा संहरेत् सैव त्रिब्रह्म रूपधारिणी॥
सैव संसारिणां देवी परमैश्वर्या दायिनी
परं पदं प्रदास्यन्ती महाविद्यात्मिका शिला
यो रसं पिबति मूर्धसरोजात् सोमपोऽयमनघः प्रयतात्मा।
अग्निहोत्रमखिलेश्वरी नित्यं मूलकुण्ड दहन सितिरस्य॥

–उमासहस्त्रम् 15–10

उमा ही माता शारिका है। 'उ' का शाब्दिक अर्थ वैष्णवी शक्ति और 'मा' का तात्पर्य लय होने की स्थिति है। उमा जब जब वैष्णवी स्वरूप अर्थात् स्थितिभाव में अवतीर्ण होती है, तब तब वह शारिका के रूप में अवतरित होकर अपनी इच्छा शक्ति से चक्रेश्वर का उर्द्धव रेखांकित करती है। श्री चक्रेश्वर ऋद्धि तथा सिद्धि को प्रदान करता है। काश्मीर मण्डल के सन्त महात्मा शक्ति पद्धति को अपना कर **श्रीशारिका** की तपस्या में रम गये थे। आधुनिक समय में **भगवान गोपीनाथ जी** ने माता शारिका के देवी–आंगन में **ॐ ह्रीं शक्ति श्री शारिका** में लय होकर साक्षात्कार प्राप्त किया।

शास्त्र प्रमाण है–

प्रकृति द्वे तु देवस्य जडा चैवा जडा तथा।
अव्यक्ताख्या जड़ा सा च सृष्टया भिन्नऽष्टधा पुनः॥

–नारदीय पुराण

जड तथा चेतन सृष्टि ब्रह्माण्ड का ही शरीर है, जिसको क्षेत्र नाम से जाना जाता है। सकल चराचरात्मक क्षेत्र को शक्ति ने अष्टब्ध अर्थात् आठ प्रकारों से बना कर व्यापक बना दिया है। वही चैतन्यमयी है, वही क्षेत्र भी है। परमात्मा–तत्त्व और शक्तितत्त्व की अनादि मूल प्रकृति दोनों अव्यक्त है। परमात्म–तत्त्व को कोई 'पर–ब्रह्म' अथवा आदि तत्व कहता है, वेद इन तत्व के स्वरूप को निराकार कहते हैं, परन्तु आगम शास्त्र इस तत्त्व को महादेव और शक्ति का समन्वयात्मक

रूप समझते हैं। उसी की पूजा करते हैं। साधक सर्वभूतहित के लिए मन, वाणी तथा कर्म से सदा प्रयत्नशील रहकर, शक्ति रूपा शारिका की जीवन पर्यन्त उपासना करते रहते हैं। यही आगम शास्त्रों का सार है जिसको **महादेव-मन्त्र महेश्वर** नाम से पुकारते हैं।

ब्रह्म तथा शक्ति में कोई भेद नहीं है। शब्द का ब्रह्मनाद के साथ ऊँकार का सम्बन्ध है। चित, अचित् तथा नित्यता रूपी त्रितत्व परब्रह्म में ही निहित हैं। अत: नित्यता के कारण निष्कल है, परन्तु भगवान बब जी के स्वरूप में स्थित होने के कारण शिव तथा शक्ति में समावेश करते हैं। **भगवान गोपी नाथ जी** श्री शारिका देवी को ब्रह्म शक्ति ही मानते थे। यही कश्मीर की शाक्त परम्परा रही है। जहाँ पण्डित कृष्ण जू कार ने अपनी लीला में कहा है-

वन्दे शिलातन ईश्वरी श्री शारिका देवी नमः।
मेहरे चराचर ईश्वरी श्री शारिका देवी नमः॥

कोई इसे पराशक्ति, ज्ञान शक्ति, इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति कहते हैं। कोई इस परा-शक्ति को चिति शक्ति कहकर पुकारते हैं। बब जी बड़े प्यार से **देवी शारिका** कहकर उसका ध्यान करते रहे। तन्त्र के अनुसार परमगुरु, देवी के साथ एकरूपता कराने के लिए देवी के दरबार में ही दीक्षा देते हैं। देवी का प्रकाश पुंज मन्त्र-नाद तत्त्व से मिलकर सम्पुटित बनता है। शिष्य अथवा भक्त के पाशविक वृत्तियों का हनन तत्क्षण होता है। यही दीक्षा है। विश्व-सार तंत्र के अनुसार देवी दिव्य ज्ञान प्रदान करती है, उसके पश्चात् पापों का क्षय करती है। **बब जी** भी साक्षात रूप से अपने भक्तों को कृपा का पात्र समझकर दीक्षा-प्रदान करते रहे। सहज भाव की दीक्षा है। **'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'** यह सहजयोग से संबंधित, वर्णमाला से अलंकृत दीक्षा कल्याणकारी है। **बब भगवान गोपीनाथ जी** ने माता शारिका के श्री चरणों में बैठकर अपने भीतर **ह्रीं शक्ति** को अपने दिव्य जीवन का मंत्र मान लिया। **यही शारिका सहस्त्रनाम की अद्भुत शक्ति है।**

(संदर्भ लेख : भगवान गोपीनाथ जी का आध्यात्मिक चिंतन लेखिका : जया सिबू)

ॐ श्रीशारिकासहस्त्रनामस्तोत्रम् नामावली च॥

श्रीभैरवी।

श्री भैरवी बोली-

या सा देवी पुरा ख्याता शारिका रूपधारिणी।
जालन्धर राक्षसघ्नी प्रद्युम्नशिखरे स्थिता॥१॥

पूर्व काल में जिस प्रकार कहा गया है, कि उस देवी से श्री शारिका का रूप धारण किया गया। वही देवी प्रद्युम्नशिखर पर स्थित होकर जालन्धर राक्षस का संहार करने वाली है।

तस्या नामसहस्त्रं मे मन्त्रगर्भं जयावहम्।
कथयस्व महादेव यद्यस्ति मयि ते दया॥

उसके सहस्त्रनाम, जो मंत्र रूपी गर्भ में स्थित है, और जो विजय दिलाने वाली है; हे महादेव! यदि आपकी मुझ पर दया है, तो कृपया मुझे बता दीजिए।

श्रीभैरवः।

श्री भैरव बोले

या देवदेवी भद्राख्या त्रिकोटि देवसंयुता।
महासुर विनाशाय शारिका रूपधारिणी॥

जिसको देवता और देवी, एवं त्रिकोटि देव सामूहिक रूप से **भद्र-कल्याण कारिणी** नाम से सम्बोधित करते हैं, तथा जो महासुर के विनाश के लिए शारिका का रूप धारण करने वाली नाम से प्रसिद्ध है।

कूटं सुमेरोः चच्ञ्चवग्रे समादायागताम्बिका।
त्रयस्त्रिंशतिकोट्यश्च देवानां वै समागताः॥

सुमेरू पर्वत का कूट (शिखर) जिसमें **त्रयस्त्रिशति** कोटि-तेंसीस करोड़ (३३,००,००,०००) (330 मिलियन) देवी देवताओं का वास रहता है। . अम्बिका ने चोंच के अग्रभाग से सुमेरू पर्वत का कूट / एक भाग लाकर स्थापित किया।

तस्या नामसहस्त्रं ते मन्त्रगर्भं जयावहम्।
कथयामि परां विद्यां सहस्त्राख्या भिधां शिवे॥

हे शिवे! मैं उसी शारिका देवी के मंत्रगर्भ रूप का सहस्त्रनाम

तुम्हें बता देता हूँ। पराविद्या से समाहृत एक सहस्त्र नाम का बखान करता हूँ।

शिलाया: शारिका-ख्याया: परां सर्वस्वरूपिणीम्।
विना नित्यक्रियां देवि विना न्यासं विनार्चनम्॥

शारिका का आख्यान, परा शक्ति स्वरूपा, सर्व स्वरूप वाली की शिला, (सुमेरू पर्वत) के उसी शिखर पर है। बिना नित्य क्रिया, बिना किसी न्यास के, बिना अर्चना के.....,

विना पुरस्क्रियां देवि होमार्चादि विना परम्।
विना श्मशानगमनं विना समयपूजनम्॥

... बिना किसी पूर्व-क्रिया के होम-अर्चना आदि के भी, एवं श्मशान गमन (अघोरी क्रिया) के बिना भी अथवा समयाचार पूजा विधि के बिना भी जो देवी शारिका का (स्मरण) करते हैं,

यया लभेत्फलं सर्वं तां विद्यां श्रृणु पार्वती।
या देवी चेतना लोके शिला रूपास्ति शारिका॥

मैं उस विद्या का वर्णन तुम्हारे समक्ष करता हूँ, जिस से समस्त फल प्राप्त होते हैं। यह **शारिका देवी चैतन्य शिला** का रूप धारण की हुई **चैतन्यमयी** देवी है।

सृजत्यवति सा विश्वं संहरिष्यति तामसी।
रजोगुणेन सृजति सत्त्वेनावति संसृतिम्॥

वही देवी इस जगत का सृजन भी करती है तथा तामसी बनकर संहार भी करती है। रजोगुण से सृजन, तथा सत्त्व रूप से संसृति-स्थिति कराती है।

तमसा संहरेत्सैव त्रिब्रह्म रूपधारिणी।
सैवं संसारिणां देवी परमैश्वर्य दायिनी॥

वही शारिका देवी त्रिब्रह्म रूप धारिणी-**महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती** के रूपों में प्रकट होकर, तामसी देवी बनकर संहार करती है। सांसारिक जन समुदाय के लिए, वही देवी परम-ऐश्वर्य दायिनी भी है।

परं पदं प्रदास्यन्ती महाविद्यात्मिका शिला।
तस्या नामसहस्त्रं ते वर्णयामि सहस्त्रकम्॥

परम् पद को देने वाली **महाविद्या** का आत्मस्वरूप बन कर **शारिका** विराजमान है। उसी देवी के नाम सहस्त्र पूर्णत: तुझे बताता हूँ।

रहस्यं मम सर्वस्वं सकलाचार वल्लभम्।
यो जपेत्परमां विद्यां पठेन्नाम सहस्रकम्॥

सकल आचार-(**समयाचार, कुलाचार, दक्षिणाचार**) आदि आचारों से सहित यह रहस्य मेरा ही **स्वात्म प्रिय स्वरूप** है। जो भी इस पराविद्या का जाप करता है, एवं सहस्रनाम का पाठ करता है।

धारयेत्कवचं दिव्यं पठेत्स्तोत्रेश्वरं परम्।
किं तस्य दुर्लभं लोके नाप्नुयाद्यद्यदीश्वरि॥

हे महेश्वरी! वे दिव्य कवच को धारण किया करें तथा स्तोत्रेश्वर-स्तोत्रराज का पाठ / अर्चना करें। उस भक्त के लिए, कुछ भी इस जगत् में दुर्लभ नहीं है, अर्थात् सर्वत्र वह भक्त सिद्धि प्राप्त करता है।

॥अस्य श्रीशारिकाभगवती नामसहस्रस्य, महादेव ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः,श्रीशारिकाभगवतीदेवता, शां बीजं, श्रीं शक्तिः, फ्रां कीलकं, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं-श्रीशारिकादेवी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं पाठे होमे वा विनियोगः॥ श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः इतिन्यासः एवं प्राणायामः

क्रमशः अङ्गुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठका, करतल इसी प्रकार हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र तथा अस्त्रायफट करना है।

इस **श्रीशारिका भगवती नाम सहस्र के ऋषि महादेव हैं, छन्द त्रिष्टुप्, देवता स्वयं शारिका भगवती** है, **'शां' बीज है, 'श्रीं' शक्ति, 'फ्रां' कीलक है**, अपने आत्मस्वरूप के उदय के लिए, वाणी, मन तथा शरीर के पापों के निवारण हेतु इस सहस्रनाम का पाठ / होम / अर्चना का विनियोग डाला जाता है। (**श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः** से न्यास एवं प्राणायाम करना है।

॥ ध्यानं ॥

ध्यान श्लोक :

बालार्क-कोटिद्युति-मिन्दुचूडां वरासि चक्राभय बाहुमाद्याम्।
सिंहाधिरूढां शिव-वाम देहलीनांभजे चेतसि शरिकेशीम्॥

जिस देवी की बालार्क-अरूणोदय कालीन कोटि सूर्य की प्रभा है तथा चन्द्र मुकुट धारिणी, वरदा, खड्ग, चक्र तथा अभय मुद्रा धारण करने वाली, सिंह के ऊपर आसीन, शिव के वाम-बाऐं भाग में विराजमान, ऐसी लीन हुई शारिका देवी महाभट्टारिका को अपने चित में भजता हूँ-ध्यान धारण करता हूँ।

मूलं।

ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः॥

शारिकायै विद्महे, पञ्चदशाक्षर्यै धीमहि, तन्नः शारी प्रचोदयात्३॥

मूल मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं हूँ फ्रां आं शां शारिकायै नमः
(108 बार, अथवा दस बार जाप करें)

ॐ ह्रींश्रीं हूं फ्रां आं शां श्रीशारिका श्यामसुन्दरी।
शिला शारी शुकी शान्ता शान्तमानसगोचरा॥

शान्तिस्था शान्तिदा शान्तिः श्यामा श्यामपयोधरा।
देवी शशाङ्क-बिम्बाढ्या शशाङ्क कृतशेखरा॥

शशाङ्क-शोभि-लावण्या शशाङ्क-मध्यवासिनी।
शार्दूलवाहा देवेशी शार्दूल चर्मवाससी॥

गौरी पद्मावती पीना पीनवक्षोज कुट्मला।
पीताम्बरा रक्तदन्ता दाडिमीकुसुमपप्रभा॥

स्फुरद्रत्नांशु-खचिता रत्नमण्डल विग्रहा।
रक्ताम्बरधरा क्षीवा रत्नमाला विभूषणा॥

रत्नसंमूर्च्छिताभाऽढ्या दीप्ता दीप्तशिखा दया।
दयावती कल्पलता कल्पान्त दहनोपमा॥

भैरवी भीमनादा च भयानक मुखी भगा।
कारा कारुण्यरूपा च भगमाला विभूषणा॥

भगेश्वरी भगस्था च कुरुकुल्यां कृशोदरी।
कादम्बरी कचोत्कृष्टा परमा परमेश्वरी॥

सती सरस्वती सत्याऽसत्या सत्य स्वरूपिणी।
परम्परा पटाकारा पाटला पाटल-प्रभा॥

पद्मिनी पद्मवदना पद्मा पद्मकरा शिवा।
शिवाश्रया शरच्छान्ता शची रम्भा विभावरी॥

द्युमणिः प्रस्तरा पाठा पीठेशी पीवराकृतिः।
अचिन्त्या मुसलाधारा मातङ्गी मधुरस्वना॥
वीणा गीतप्रिया गाथा गारुडी गरुडध्वजा।
अतीव सुन्दराकारा सुन्दरी सुन्दरालका॥
अलका नाकमध्यस्था नाकिनी नाक पूजिता।
पातालेश्वर संपूज्या पातालतलचारिणी॥
अनन्ताऽनन्तरूपा च स्वज्ञाता ज्ञानवर्धिनी।
अमेया चाप्रमेया च ह्यनन्तादित्यरूपिणी॥
द्वादशादित्यसं-पूज्या शमी श्यामाक बीजिनी।
विभासा भास्वराऽवर्णा समस्तासुर घातिनी॥
सुधामयी सुधामूर्तिः सुधा सर्वप्रियङ्करी।
सुखदा च सुरेशानी कृशानुवल्लभा हविः॥
स्वाहा स्वाहेशनेत्रा च वह्निवक्त्राग्नि तर्पिता।
सूर्याग्नि सोम नेत्रा च भूर्भुवःस्वः स्वरूपिणी॥
भूमिर्भूदेव संपूज्या स्वयम्भूः स्वात्म पूजका।
स्वयम्भू पुष्प मालाढ्या स्वयम्भू पुष्पवल्लभा॥
आनन्दकन्दली कन्दा स्कन्दमाता शिवालया।
शिलारूपा शिलेशानी शिला पूजन हर्षिता॥
चेतना चिद्भवाकारा भवपत्नी भयापहा।
विघ्नेश्वरी गणेशानी गण-माता गणप्रसूः॥
गणेशमुख्य-सम्पूज्या विघ्नविध्वंसिनी निशा।
वश्या वश्यजन-स्तुत्या स्तुतिः श्रुतिधरा श्रुतिः॥
श्रुतिशास्त्र विधानज्ञा शास्त्रार्थ कोविदा रमा।
वेद्या विद्यामयी विद्या विधातृ वरदा वधूः॥
वधूरूपा वधूपूज्या वधूपान प्रतर्पिता।
वधूपूजन सन्तुष्टा वधूमाला विभूषणा॥

मूलं।

ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः॥

शारिकायै विद्महे, पञ्चदशाक्षर्यै धीमहि, तन्नः शारी प्रचोदयात्३॥

मूल मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं हूँ फ्रां आं शां शारिकायै नमः
(108 बार, अथवा दस बार जाप करें)

ॐ ह्रींश्रीं हूं फ्रां आं शां श्रीशारिका श्यामसुन्दरी।
शिला शारी शुकी शान्ता शान्तमानसगोचरा॥

शान्तिस्था शान्तिदा शान्तिः श्यामा श्यामपयोधरा।
देवी शशाङ्क-बिम्बाढ्या शशाङ्क कृतशेखरा॥

शशाङ्क-शोभि-लावण्या शशाङ्क-मध्यवासिनी।
शार्दूलवाहा देवेशी शार्दूल चर्मवाससी॥

गौरी पद्मावती पीना पीनवक्षोज कुट्मला।
पीताम्बरा रक्तदन्ता दाडिमीकुसुमप्रभा॥

स्फुरद्रत्नांशु-खचिता रत्नमण्डल विग्रहा।
रक्ताम्बरधरा क्षीवा रत्नमाला विभूषणा॥

रत्नसंमूर्च्छिताभाऽद्या दीप्ता दीप्तशिखा दया।
दयावती कल्पलता कल्पान्त दहनोपमा॥

भैरवी भीमनादा च भयानक मुखी भगा।
कारा कारुण्यरूपा च भगमाला विभूषणा॥

भगेश्वरी भगस्था च कुरुकुल्यां कृशोदरी।
कादम्बरी कचोत्कृष्टा परमा परमेश्वरी॥

सती सरस्वती सत्याऽसत्या सत्य स्वरूपिणी।
परम्परा पटाकारा पाटला पाटल-प्रभा॥

पद्मिनी पद्मवदना पद्मा पद्मकरा शिवा।
शिवाश्रया शरच्छान्ता शची रम्भा विभावरी॥

वामा वामेश्वरी वाम्या वामाचार प्रियङ्करी।
वामाचारा वामदेवपूज्या वामस्थिताऽर्थदा॥

वामदेवेश्वरी देवी कुलाकुल विचारिणी।
वितर्कतर्क निलया प्रलयानल सन्निभा॥

यज्ञेश्वरी यज्ञमुखा यज्ञाङ्गी यज्ञवर्धिनी।
याजकाऽयाजका ऽराध्या यजना यानपात्रका॥

यक्षेश्वरी यक्षदात्री यक्ष नायक पूजिता।
पर्वतस्था पर्वतजा पार्वती पर्वताश्रया॥

पिलम्पिला पदस्थाना पददा नरकान्तका।
नारी नर्मप्रिया श्रीदा श्रीदश्रीदा शतायुधा॥

कामेश्वरी रति-र्हूतिराहुति-र्हव्यवाहना।
हरेश्वरी हर वधूर्हाटकाङ्गद मण्डिता॥

पुरुष्या स्वर्गति वैद्या सुमुखा च महौषधिः।
सर्वरोगहरा माध्वी मधुपान परायणा॥

मधुस्थिता मधुमयी मददान विशारदा।
मधुतृप्ता मधुरूपा मधूक कुसुम प्रभा॥

माधवी माधवीवल्ली मधुमत्ता मदालसा।
मारप्रिया मारपूज्या मारदेव प्रियङ्करी॥

मारेशी च मृत्युहरा हरकान्ता मनोन्मना।
महावैद्यप्रिया वैद्या वैद्याचारा सुरार्चिता॥

सुरेशी सुरसंपूज्या सुरमान्या सुरेश्वरी।
सुरापानरता साध्वी पात्रसिद्धि प्रदायिनी॥

सामन्ता पीनवपुषी गुटी गुर्वी गरीयसी।
कालान्तका कालमुखी कठोर करुणामयी॥

नीला नाडी च वागीशी दूर्वाख्याता सरस्वती।
अपारपारगा गम्या गतिः प्रीतिः पयोधरा॥

पयोद सदृशच्छाया पारदाऽकृतिरालसा।
सरोजनिलना नीतिः कीर्तिः कीर्तिकरी कथा॥

काशी काम्या कपर्दाऽशा काशपुष्पोपमा रमा।
रामा रामप्रिया रामभद्रा देवसमर्चिता॥

रामसम्पूजिता रामसिद्धिदा रामकार्यदा।
रामभद्रार्चिता रेवा देवकी देववत्सला॥

देवपूज्या देववन्द्या देवदानव चर्चिता।
द्रुतिर्द्रुत गतिर्दम्भा दामिनी विजया जया॥

अशेष सुर सम्पूज्या निःशेषासुर सूदिनी।
वटिनी वटमूलस्था लास्य हास्यैक वल्लभा॥

अरूपा निर्गुणा सत्या सदा सन्तोष वर्धिनी।
सौम्या यजुर्वहा याम्या यमुना यामिनी यमी॥

क्षमा दक्षा वराम्बोधि दाल्भ्य सेव्या दरी पुरी।
पौरन्दरी पुलोमेशी पौलोमी पुलकाङ्कुरा॥

पुरस्था वनभूर्वन्या वानरी वनचारिणी।
समस्त वर्णनिलया समस्तवर्ण पूजिता॥

समस्तवर्ण वर्णाढ्या समस्तगुरु वत्सला।
समस्त मुण्ड मालाढ्या मालिनी मधुपस्वना॥

कोशप्रदा कोशवासा चमत्कृतिर लम्बुसा।
हास्यदा सदसद्रूपा सर्ववर्णमयी स्मृतिः॥

सर्वाक्षरमयी विद्या मूलविद्या विदीश्वरी।
अकारा षोडशाकारा कारावन्ध विमोचिनी॥

ककार व्यञ्जनाक्रान्ता सर्वमंत्राऽक्षरालया।
अमाऽणुरूपा विमला त्रैगुण्या चापराजिता॥

अम्बिकाऽम्बालिका चाऽम्बाप्यनन्त गुणमेखला।
अपर्णा पर्णशाला च साट्टहासा हसन्तिका॥

हसन्ती च हस्तिमुखा हस्तिपादा मनोरमा।
अद्रिकन्याऽट्टहासा च त्वजरास्याप्य रुन्धती॥

अब्जाक्षी त्वब्जिनी देवी चाम्बुजासन संस्थिता।
अब्जहस्ताऽब्ज पादा च त्वब्जपूजन तोषिता॥

अकार मातृकादेवी सर्वानन्दकरी कला।
आनन्दसुन्दरी चार्या चाघूर्णारूण लोचना॥

आदिदेवाऽन्तक क्रूरा चादित्य कुल भूषणा।
आं बीज मण्डलादेवी त्वाकार मातृकावलिः॥

इन्द्रस्तुतेन्दु बिम्बास्या त्विन कोटि समप्रभा।
इन्दिरा मन्दिरा शाला चेति हासकथा मतिः॥

इलेक्षुर सदाऽस्वादा त्विकाराक्षर भूषिता।
इन्द्रस्तुतेन्द्रसंपूज्या त्विनभद्रात्विनेश्वरी॥

इ भ-स्थितिरिभांगीना चेकाराक्षर-मातृका।
ईश्वरी वैभव ख्याता चेशानीश्वर वल्लभा॥

ईशा कामकला चैन्द्री त्वीकाराक्षर मातृका।
उग्रप्रभोग्रचिन्तोग्रवामाङ्गवासिनी त्वुषा॥

उग्रा वैष्णव संपूज्या चोग्रतारोल्मुकानना।
उमेश्वरी गुणश्रेष्ठो स्त्रोदेश्वर्युदक प्रिया॥

उदका च्छोदक दात्री चोकारोद्भव मातृका।
ऊष्मोपा चोषणा सीता दितिराऽदित्य सुप्रभा॥

ऋणहर्त्री ह्यृणर्णेशी ऋलृवर्णा लृवर्णभाक्।
लृकारा भ्रुकुटिर्बाला बालादित्य समप्रभा॥

एनाङ्क मुकुटेहात्मा चैकाराक्षर बीजिता।
एनप्रियैनाङ्क मध्यस्थितैन मध्यवासिनी॥

एनेद्रवत्सला चैनी चैकारोद्भास मातृका।
ओकार शेखराभासा त्वौचित्या मदमण्डिता॥

अम्भोज निलया स्वस्था अःस्वरूपा चिदात्मिका।
षोडश स्वररूपा च षोडश स्वरगायनी॥

षोडशी षोडशाकारा कमला कमलोद्भवा।
कामेश्वरी कलाभिज्ञा कुमारी कुटिलालका॥

कुटिला कुटिलाकारा कुटुम्बिनी कृतिः शिवा।
कुलाकुलोपदेशानी कुलेशी कुब्जिका कला॥

कामा कामप्रिया कीरा कमनीया कपालिनी।
कालिका भद्रकाली च काला कामान्त कारिणी॥

कपर्दिनी कपालेशी कर्पूरचय चर्चिता।
कादम्बरी कोमलाङ्गी काश्मीरी कुङ्कुमद्युतिः॥

कुन्ता कूर्चाऽद्यबीजाड्या कमनीया कुलाकुला।
करालास्या करालाक्षी कामिनी कामपालिनी॥

कन्थाधरा कृपाकर्त्री ककाराक्षर मातृका।
खड्गहस्ता खर्परेशी खेचरी खगगामिनी॥

खेचरी मुद्रयायुक्ता खेचरत्व प्रदायिनी।
खगासना खलोलाक्षी खेटेशी खलनाशिनी॥

खेटकायुध हस्ता च खरांशुद्युति सन्निभा।
खाता खबीजनिलया खकारोल्लास मातृका॥

वैखरी बीजनिलया ख स्था खेचरवल्लभा।
गुण्या गजास्य जननी गणेशवरदा गया॥

गोदावरी गदाहस्ता गदाधरप्रिया गतिः।
गीता गोवाहनेशानी गरलाशन विग्रहा॥

गाम्भीर्यभूषणा गङ्गा गायत्री गजवाहना।
घोना घोनाकर स्तुत्या घुर्घुरा घोरनादिनी॥

घटस्था घटजसेव्या घटपूजन लोलुपा।
घटामय रसप्रीता घनरूपा घनेश्वरी॥

घनवाहन सेव्या च घकाराक्षर मातृका।
ङान्ता ङवर्णनिलया ङानुरूपा ङनालया॥
ङेज्ञानिनी ङनाजाप्या ङवर्णाक्षर मातृका।
चामीकर रुचिश्चान्द्री चन्द्रिका चन्द्ररागिणी॥
चला चेला चञ्चला च चञ्चरी कालक प्रभा।
चञ्चरीक स्वरालापा चमत्कार स्वरूपिणी॥
चटुला चाटुकी चार्वी चम्पा चम्पकसन्निभा।
चीनांशुकधरा चित्रा चकाराक्षर मातृका॥
छत्री छत्रधराच्छन्ना छिन्नमस्ता च्छुरच्छविः।
छायासुत प्रिया छाया छवर्णामल-मातृका॥
जगदम्बा जगज्ज्योति ज्योतीरूपा जटाधरा।
जयदा जयकर्त्री च जयस्था जयहासिनी॥
जयेशी जयधर्त्री च जगत्कर्त्री जगत्प्रिया।
जगत्पूज्या जगद्वासा जगद्रक्षा जरातुरा॥
ज्वरघ्नी जम्भदमनी जगत्प्राणा जयावहा।
जैत्रा जम्भारिवरदा जीवना जीव वाक्प्रदा॥
जागृतिश्च जगन्निद्रा जगद्योनिर्जलन्धरा।
जालन्धरजया जाया जकाराक्षर मातृका॥
झम्पा झिञ्झेश्वरी झान्ता झकाराक्षर मातृका।
ञानुरूपा ञिनावासा ञकारेशी ञणायुधा॥
ञवर्ण बीजभूषाढ्या ञकाराक्षर मातृका।
टङ्कायुधा टकाराढ्या टोटाक्षी टसुकुन्तला॥
टङ्काश्रया टलीरूपा टकाराक्षर मातृका।
ठकुरा ठकुरेशानी ठकार त्रितयेश्वरी॥
ठस्वरूपा ठवर्णाढ्या ठकाराक्षर मातृका।
डक्का डक्केश्वरी डिम्बा डवर्णाक्षर मातृका॥

ढिणी ढेया ढिल्लहस्ता ढकाराक्षर मातृका।
णेशा णान्ता णवर्णात्मा णकाराक्षर भूषणा॥

तुरी तुर्या तुलारूपा त्रिपुरा तामसप्रिया।
तोतुला तारिणी तारासप्तविंशति-रूपिणी॥

त्रिस्वरा त्रिगुणिध्येया त्र्यम्बकेशी त्रिलोकधृत्।
त्रि-वर्गेशा त्रयी त्र्यक्षा त्रिपदा त्रेतरूपिणी॥

त्रिलोक जननी त्रेता त्रिपुरेश्वर पूजिता।
त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रि कोणान्तर्निवासिनी॥

त्रिकोण पूजनतुष्टा त्रिकोण पूजन प्रिया।
वसुकोण स्थिता वश्या वसुकोणार्थ वादिनी॥

वसुकोणासने संस्था षट्चक्रक्रम-पूजिता।
नागपत्र स्थिता शारी त्रिवृत्त पूजनार्थदा॥

चतुर्द्वाराग्र गा चक्र बाह्यान्तर निवासिनी।
तामसी तुम्बुरु स्तुत्या तोमरायुध मण्डिता॥

तुला कोटिस्वना तापी तपसः फलदायिनी।
तरिस्तरणि रूपा च तारकासुर घातिनी॥

तरलाक्षी तमोहन्त्री तकाराक्षर मातृका।
स्थली स्थविर रूपा च स्थूला स्थाली स्थलाब्जिनी॥

स्थविरेशी स्थूलमुखी थकाराक्षर मातृका।
दूतिका शिवदूती च दण्डायुध धरा द्युतिः॥

दीपा दनानुकम्पा च दम्भोलिधर वल्लभा।
देशानुचारिणी द्रेक्का द्राविडेशी दवीयसी॥

दाक्षायणी द्रुमलता देवमाता ऽदिदेवता।
दधिजा दुर्लभादेवी देवता परमाक्षरा॥

दामोदर सुपूज्या च दामोदर वरप्रदा।
दण्डहस्ता दण्डिपूज्या दकाराक्षर मातृका॥

धर्म्या च धर्ममूर्धन्या धनदा धनवर्धिनी।
धृतिर्धूता धन्य वधूर्धकाराक्षर मातृका॥
नलिनी नलिनहस्ता नाराचायुध धारिणी।
नीपोपवनमध्यस्था नगरेशी नरोत्तमा॥
नरेश्वरी नृपाराध्या नृपपूज्या नृपार्थदा।
नृपसेव्या नृपवन्द्या नरनारायण प्रसूः॥
नर्तकी नीरजाक्षी च नवर्णाक्षर भूषणा।
पद्मेश्वरी पद्ममुखी पत्रियाना परापरा॥
पारावतसुता पेया परवर्ग विमार्दिनी।
त्रिपुरारि वधूः पम्पा पत्री पत्रीश वाहना॥
पीवरांसा पतिप्राणा पीतलाक्षी पतिप्रिया।
पाठा पीठस्थिता पीत वस्त्रालङ्कार भूषणा॥
पुरूरव स्तुता पात्री पुत्रिका पुत्रदा प्रजा।
पुष्पोत्तमा पुष्पवती पुष्पमाला विभूषिता॥
पुष्पमालाधिशोभाढ्या पकाराक्षर मातृका।
फलदा स्फीतवस्त्रा च फेरुराव विभूषणा॥
फल्गुनी फल्गुतीर्थस्था फ वर्गाकृत मण्डना।
बलदा बालखिल्या च बाला बल रिपुप्रिया॥
बाल्यावस्था बन्धरेशी बकाराकृति मातृका।
भद्रिका भीमपत्नी च भीमा भर्गशिखाऽभया॥
भयघ्नी भीमनादा च भयानक मुखेक्षणा।
भिल्लेश्वरी भीतिहरा भद्रदा भाग्य वर्धिनी॥
भगमाला भगावासा भवानी भव तारिणी।
भग योनिर्भगाकारा भगस्था भग रूपिणी॥
भगलिङ्गामृत प्रीता भकाराक्षर मातृका।
मान्या मानप्रदा मीना मीनकेतन लालसा॥

मदोद्धता मनोतीता मेना मैनाक वत्सला।
मांसाहारा मांसप्रीता मत्स्यघाता महत्तरा॥
मेरुशृङ्गाग्र तुङ्गस्था मोदकाहार पूजिता।
मातङ्गिनी मदोन्मत्ता मधुमत्ता मठेश्वरी॥
मज्जा मुग्धानना मुग्धा मकाराक्षर भूषणा।
यशस्विनी यतीशानी यत्नकर्त्री यजुःप्रिया॥
यज्ञदात्री यज्ञफला यजुर्वेदफला यतिः।
यशोदा यतिसेव्या च यात्रा यात्रिक वत्सला॥
योगीश्वरी योगगम्या योगीन्द्र जन वत्सला।
यदुपुत्री यमघ्नी च यकाराक्षर मातृका॥
रत्नेश्वरी रमानाथ सेव्या रथ्या रजस्वला।
राज्यदा राजराजेशी रोगहर्त्री रजोवती॥
रत्नाकरसुता रम्या रात्री रात्रीपति प्रभा।
रक्षोघ्नी राक्षसेशानी रक्षोनाथ समर्चिता॥
रतिप्रिया रतिसुखा रकार कृत शेखरा।
लम्बोदरी ललज्जिह्वा लास्य तत्पर मानसा॥
लूतातन्तु वितानास्या लक्ष्मीर्लज्जा लया ऽलिनी।
लोकेश्वरी लोकदात्री लाटस्था लक्ष्मणाकृतिः॥
लम्बा लम्बक चोल्लासा लकाराक्षर वर्धिनी।
लिङ्गप्रीता कलिङ्गेशी लिङ्गस्था लिङ्गलिङ्गिनी॥
लक्ष्मीरूपा रसोल्लासा रामा रेवा रजोवती।
लयदा लक्ष्मणा लोला लकाराक्षर मातृका॥
वाराही वरदात्री च वीरसूर्वर दायिनी।
वीरेश्वरी वीरजन्या वरचर्वण चर्चिता॥
वरायुधा वराका च वामना वामनाकृतिः।
वधूता वधकावध्या वध्य भूर्वणिज प्रिया॥

वसन्त लक्ष्मीर्वटुकी वटुका वटुकेश्वरी।
वटुप्रिया वामनेत्रा वामाचारैक लालसा॥
वात्या वाम्या वरारोहा वेदमाता वसुन्धरा।
वयोयाना वयस्या च वकाराक्षर मातृका॥
शम्भुप्रिया शरच्चर्चा शाद्वला शशिवत्सला।
शीत द्युतिः शीतरसा शोणोष्ठी शीकर प्रभा॥
श्रीवत्सलाञ्छना शर्वा शर्व वामाङ्ग वासिनी।
शशाङ्कामलशोभाढ्या शार्दूल तनुर द्विजा॥
शेषहर्त्री शमीमूला शकारकृत शेखरा।
षोडशाक्षर मन्त्रेशी षाढा षोडा षडानना॥
षट्कूटा षड्रसास्वादा षडशीति मुखाम्बुजा।
षडास्यजननी षष्ठा षवर्णाक्षर मातृका॥
सरस्वतीप्रसूः सर्वा सर्वगा सर्वतोमुखा।
समा सीमा सतीमाता सागराभय दायिनी॥
समस्त पापशमनी सालभञ्जी सुदक्षिणा।
सुषुप्तिः सरसा साध्वी सामगा सामवेदजा॥
सत्यप्रिया सोममुखी सूत्रस्था सूतवल्लभा।
सनकेशी सुनन्दा च सवर्णा स्वास्थ्य दायिनी॥
हाहा हूहू स्वरूपा च हलदात्री हलिप्रिया।
हं क्षःस्वरूपानुगता सर्वमातृक पूजिता॥
हरिदीश्वर पूज्यात्मा हविष्याहुतिवल्लभा।
ॐ ऐं सौःह्रीं महाविद्या आं शां ह्रां हूं स्वरूपिणी१००० ॥

इति सहस्त्रनामस्तुतिः॥

अथ सहस्त्रनामावली॥

(नोट–यदि आप अर्चना करते हैं तो नमः नमः करना है और यदि हवन करना है, तो स्वाहा-स्वाहा शब्द का प्रयोग करना है।)

या देवी चेतना लोके शिलारूपास्ति शारिका,
सृजत्यवति सा विश्वं संहरिष्यति तामसी।
रजोगुणेन सृजति सत्वेनावति संसृतिम्,
तमसा संहरेत् सैव त्रिब्रह्म रूपधारिणी॥
सैव संसारिणां देवी परमैश्वर्या दायिनी
परं पदं प्रदास्यन्ती महाविद्यात्मिका शिला
यो रसं पिबति मूर्धसरोजात् सोमपोऽयमनघः प्रयतात्मा।
अग्निहोत्रमखिलेश्वरी नित्यं मूलकुण्ड दहन सितिरस्य॥

–उमासहस्त्रम् 15-10

उमा ही माता शारिका है। 'उ' का शाब्दिक अर्थ वैष्णवी शक्ति और 'मा' का तात्पर्य लय होने की स्थिति है। उमा जब जब वैष्णवी स्वरूप अर्थात् स्थितिभाव में अवतीर्ण होती है, तब तब वह शारिका के रूप में अवतरित होकर अपनी इच्छा शक्ति से चक्रेश्वर का उर्द्धव रेखांकित करती है। श्री चक्रेश्वर ऋद्धि तथा सिद्धि को प्रदान करता है। काश्मीर मण्डल के सन्त महात्मा शक्ति पद्धति को अपना कर **श्रीशारिका** की तपस्या में रम गये थे। आधुनिक समय में **भगवान गोपीनाथ जी** ने माता शारिका के देवी-आंगन में **ॐ ह्रीं शक्ति श्री शारिका** में लय होकर साक्षात्कार प्राप्त किया।

शास्त्र प्रमाण है–

प्रकृति द्वे तु देवस्य जडा चैवा जडा तथा।
अव्यक्ताख्या जड़ा सा च सृष्टया भिन्नऽष्टधा पुनः॥

–नारदीय पुराण

जड तथा चेतन सृष्टि ब्रह्माण्ड का ही शरीर है, जिसको क्षेत्र नाम से जाना जाता है। सकल चराचरात्मक क्षेत्र को शक्ति ने अष्टब्ध अर्थात् आठ प्रकारों से बना कर व्यापक बना दिया है। वही चैतन्यमयी है, वही क्षेत्र भी है। परमात्मा-तत्त्व और शक्तितत्त्व की अनादि मूल प्रकृति दोनों अव्यक्त है। परमात्म-तत्त्व को कोई 'पर-ब्रह्म' अथवा आदि तत्व कहता है, वेद इन तत्व के स्वरूप को निराकार कहते हैं, परन्तु आगम शास्त्र इस तत्त्व को महादेव और शक्ति का समन्वयात्मक

रूप समझते हैं। उसी की पूजा करते हैं। साधक सर्वभूतहित के लिए मन, वाणी तथा कर्म से सदा प्रयत्नशील रहकर, शक्ति रूपा शारिका की जीवन पर्यन्त उपासना करते रहते हैं। यही आगम शास्त्रों का सार है जिसको **महादेव-मन्त्र महेश्वर** नाम से पुकारते हैं।

ब्रह्म तथा शक्ति में कोई भेद नहीं है। शब्द का ब्रह्मनाद के साथ ऊँकार का सम्बन्ध है। चित, अचित् तथा नित्यता रूपी त्रितत्व परब्रह्म में ही निहित हैं। अतः नित्यता के कारण निष्कल है, परन्तु भगवान बब जी के स्वरूप में स्थित होने के कारण शिव तथा शक्ति में समावेश करते हैं। **भगवान गोपी नाथ जी** श्री शारिका देवी को ब्रह्म शक्ति ही मानते थे। यही कश्मीर की शाक्त परम्परा रही है। जहाँ पण्डित कृष्ण जू कार ने अपनी लीला में कहा है–

वन्दे शिलातन ईश्वरी श्री शारिका देवी नमः।
मेहरे चराचर ईश्वरी श्री शारिका देवी नमः॥

कोई इसे पराशक्ति, ज्ञान शक्ति, इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति कहते हैं। कोई इस परा-शक्ति को चिति शक्ति कहकर पुकारते हैं। बब जी बड़े प्यार से **देवी शारिका** कहकर उसका ध्यान करते रहे। तन्त्र के अनुसार परमगुरु, देवी के साथ एकरूपता कराने के लिए देवी के दरबार में ही दीक्षा देते हैं। देवी का प्रकाश पुंज मन्त्र-नाद तत्त्व से मिलकर सम्पुटित बनता है। शिष्य अथवा भक्त के पाशविक वृत्तियों का हनन तत्क्षण होता है। यही दीक्षा है। विश्व-सार तंत्र के अनुसार देवी दिव्य ज्ञान प्रदान करती है, उसके पश्चात् पापों का क्षय करती है। **बब जी** भी साक्षात रूप से अपने भक्तों को कृपा का पात्र समझकर दीक्षा-प्रदान करते रहे। सहज भाव की दीक्षा है। '**ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय**' यह सहजयोग से संबंधित, वर्णमाला से अलंकृत दीक्षा कल्याणकारी है। **बब भगवान गोपीनाथ जी** ने माता शारिका के श्री चरणों में बैठकर अपने भीतर **ह्रीं शक्ति** को अपने दिव्य जीवन का मंत्र मान लिया। **यही शारिका सहस्त्रनाम की अद्भुत शक्ति है।**

(संदर्भ लेख : भगवान गोपीनाथ जी का आध्यात्मिक चिंतन लेखिका : जया सिबू)

ॐ श्रीशारिकासहस्त्रनामस्तोत्रम्
नामावली च॥

श्रीभैरवी।

श्री भैरवी बोली-

या सा देवी पुरा ख्याता शारिका रूपधारिणी।
जालन्धर राक्षसघ्नी प्रद्युम्नशिखरे स्थिता॥१॥

पूर्व काल में जिस प्रकार कहा गया है, कि उस देवी से श्री शारिका का रूप धारण किया गया। वही देवी प्रद्युम्नशिखर पर स्थित होकर जालन्धर राक्षस का संहार करने वाली है।

तस्या नामसहस्त्रं मे मन्त्रगर्भं जयावहम्।
कथयस्व महादेव यद्यस्ति मयि ते दया॥

उसके सहस्त्रनाम, जो मंत्र रूपी गर्भ में स्थित है, और जो विजय दिलाने वाली है; हे महादेव! यदि आपकी मुझ पर दया है, तो कृपया मुझे बता दीजिए।

श्रीभैरवः।

श्री भैरव बोले

या देवदेवी भद्राख्या त्रिकोटि देवसंयुता।
महासुर विनाशाय शारिका रूपधारिणी॥

जिसको देवता और देवी, एवं त्रिकोटि देव सामूहिक रूप से **भद्र-कल्याण कारिणी** नाम से सम्बोधित करते हैं, तथा जो महासुर के विनाश के लिए शारिका का रूप धारण करने वाली नाम से प्रसिद्ध है।

कूटं सुमेरोः चच्ञ्चवग्रे समादायागताम्बिका।
त्रयस्त्रिंशतिकोट्यश्च देवानां वै समागताः॥

सुमेरू पर्वत का कूट (शिखर) जिसमें **त्रयस्त्रिशति** कोटि-तेंसीस करोड़ (३३,००,००,०००) (330 मिलियन) देवी देवताओं का वास रहता है। अस अम्बिका ने चोंच के अग्रभाग से सुमेरू पर्वत का कूट / एक भाग लाकर स्थापित किया।

तस्या नामसहस्त्रं ते मन्त्रगर्भं जयावहम्।
कथयामि परां विद्यां सहस्त्राख्या भिधां शिवे॥

हे शिवे! मैं उसी शारिका देवी के मंत्रगर्भ रूप का सहस्त्रनाम

तुम्हें बता देता हूँ। पराविद्या से समाहृत एक सहस्र नाम का बखान करता हूँ।

शिलायाः शारिका-ख्यायाः परां सर्वस्वरूपिणीम्।
विना नित्यक्रियां देवि विना न्यासं विनार्चनम्॥

शारिका का आख्यान, परा शक्ति स्वरूपा, सर्व स्वरूप वाली की शिला, (सुमेरू पर्वत) के उसी शिखर पर है। बिना नित्य क्रिया, बिना किसी न्यास के, बिना अर्चना के.....,

विना पुरस्क्रियां देवि होमार्चादि विना परम्।
विना श्मशानगमनं विना समयपूजनम्॥

... बिना किसी पूर्व-क्रिया के होम-अर्चना आदि के भी, एवं श्मशान गमन (अघोरी क्रिया) के बिना भी अथवा समयाचार पूजा विधि के बिना भी जो देवी शारिका का (स्मरण) करते हैं,

यया लभेत्फलं सर्वं तां विद्यां शृणु पार्वती।
या देवी चेतना लोके शिला रूपास्ति शारिका॥

मैं उस विद्या का वर्णन तुम्हारे समक्ष करता हूँ, जिस से समस्त फल प्राप्त होते हैं। यह **शारिका देवी चैतन्य शिला** का रूप धारण की हुई **चैतन्यमयी** देवी है।

सृजत्यवति सा विश्वं संहरिष्यति तामसी।
रजोगुणेन सृजति सत्त्वेनावति संसृतिम्॥

वही देवी इस जगत का सृजन भी करती है तथा तामसी बनकर संहार भी करती है। रजोगुण से सृजन, तथा सत्त्व रूप से संसृति-स्थिति कराती है।

तमसा संहरेत्सैव त्रिब्रह्म रूपधारिणी।
सैव संसारिणां देवी परमैश्वर्य दायिनी॥

वही शारिका देवी त्रिब्रह्म रूप धारिणी-**महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती** के रूपों में प्रकट होकर, तामसी देवी बनकर संहार करती है। सांसारिक जन समुदाय के लिए, वही देवी परम-ऐश्वर्य दायिनी भी है।

परं पदं प्रदास्यन्ती महाविद्यात्मिका शिला।
तस्या नामसहस्त्रं ते वर्णयामि सहस्त्रकम्॥

परम्‌पद को देने वाली **महाविद्या** का आत्मस्वरूप बन कर **शारिका** विराजमान है। उसी देवी के नाम सहस्त्र पूर्णतः तुझे बताता हूँ।

रहस्यं मम सर्वस्वं सकलाचार वल्लभम्।
यो जपेत्परमां विद्यां पठेन्नाम सहस्त्रकम्॥

सकल आचार-(**समयाचार, कुलाचार, दक्षिणाचार**) आदि आचारों से सहित यह रहस्य मेरा ही **स्वात्म प्रिय स्वरूप** है। जो भी इस पराविद्या का जाप करता है, एवं सहस्त्रनाम का पाठ करता है।

धारयेत्कवचं दिव्यं पठेत्स्तोत्रेश्वरं परम्।
किं तस्य दुर्लभं लोके नाप्नुयाद्यद्यदीश्वरि॥

हे महेश्वरी! वे दिव्य कवच को धारण किया करें तथा स्तोत्रेश्वर-स्तोत्रराज का पाठ / अर्चना करें। उस भक्त के लिए, कुछ भी इस जगत् में दुर्लभ नहीं है, अर्थात् सर्वत्र वह भक्त सिद्धि प्राप्त करता है।

॥अस्य श्रीशारिकाभगवती नामसहस्त्रस्य, महादेव ऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः,श्रीशारिकाभगवतीदेवता, शां बीजं, श्रीं शक्तिः, फ्रां कीलकं, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं-श्रीशारिकादेवी-प्रसाद-सिद्यर्थं पाठे होमे वा विनियोगः॥ श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः इतिन्यासः एवं प्राणायामः

क्रमशः अङ्गुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठका, करतल इसी प्रकार हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र तथा अस्त्रायफट करना है।

इस **श्रीशारिका भगवती नाम सहस्त्र के ऋषि महादेव हैं, छन्द त्रिष्टुप्, देवता स्वयं शारिका भगवती** है, **'शां' बीज है, 'श्रीं' शक्ति, 'फ्रां' कीलक है**, अपने आत्मस्वरूप के उदय के लिए, वाणी, मन तथा शरीर के पापों के निवारण हेतु इस सहस्त्रनाम का पाठ / होम / अर्चना का विनियोग डाला जाता है। (**श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः** से न्यास एवं प्राणायाम करना है।

॥ ध्यानं ॥

ध्यान श्लोक :

बालार्क-कोटिद्युति-मिन्दुचूडां वरासि चक्राभय बाहुमाद्याम्।
सिंहाधिरूढां शिव-वाम देहलीनांभजे चेतसि शरिकेशीम्॥

जिस देवी की बालार्क-अरूणोदय कालीन कोटि सूर्य की प्रभा है तथा चन्द्र मुकुट धारिणी, वरदा, खड्ग, चक्र तथा अभय मुद्रा धारण करने वाली, सिंह के ऊपर आसीन, शिव के वाम-बाऐं भाग में विराजमान, ऐसी लीन हुई शारिका देवी महाभट्टारिका को अपने चित में भजता हूँ-ध्यान धारण करता हूँ।

मूलं।

ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः॥

शारिकायै विद्महे, पञ्चदशाक्षर्यै धीमहि, तन्नः शारी प्रचोदयात्३॥

मूल मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं हूँ फ्रां आं शां शारिकायै नमः

(108 बार, अथवा दस बार जाप करें)

ॐ ह्रींश्रीं हूं फ्रां आं शां श्रीशारिका श्यामसुन्दरी।
शिला शारी शुकी शान्ता शान्तमानसगोचरा॥

शान्तिस्था शान्तिदा शान्तिः श्यामा श्यामपयोधरा।
देवी शशाङ्क-बिम्बाढ्या शशाङ्क कृतशेखरा॥

शशाङ्क-शोभि-लावण्या शशाङ्क-मध्यवासिनी।
शार्दूलवाहा देवेशी शार्दूल चर्मवाससी॥

गौरी पद्मावती पीना पीनवक्षोज कुट्मला।
पीताम्बरा रक्तदन्ता दाडिमीकुसुमपप्रभा॥

स्फुरद्रत्नांशु-खचिता रत्नमण्डल विग्रहा।
रक्ताम्बरधरा क्षीवा रत्नमाला विभूषणा॥

रत्नसंमूर्च्छिताभाऽद्या दीप्ता दीप्तशिखा दया।
दयावती कल्पलता कल्पान्त दहनोपमा॥

भैरवी भीमनादा च भयानक मुखी भगा।
कारा कारुण्यरूपा च भगमाला विभूषणा॥

भगेश्वरी भगस्था च कुरुकुल्यां कृशोदरी।
कादम्बरी कचोत्कृष्टा परमा परमेश्वरी॥

सती सरस्वती सत्याऽसत्या सत्य स्वरूपिणी।
परम्परा पटाकारा पाटला पाटल-प्रभा॥

पद्मिनी पद्मवदना पद्मा पद्मकरा शिवा।
शिवाश्रया शरच्छान्ता शची रम्भा विभावरी॥

द्युमणिः प्रस्तरा पाठा पीठेशी पीवराकृतिः।
अचिन्त्या मुसलाधारा मातङ्गी मधुरस्वना॥

वीणा गीतप्रिया गाथा गारुडी गरुडध्वजा।
अतीव सुन्दराकारा सुन्दरी सुन्दरालका॥

अलका नाकमध्यस्था नाकिनी नाक पूजिता।
पातालेश्वर संपूज्या पातालतलचारिणी॥

अनन्ताऽनन्तरूपा च स्वज्ञाता ज्ञानवर्धिनी।
अमेया चाप्रमेया च ह्यनन्तादित्यरूपिणी॥

द्वादशादित्यसं-पूज्या शमी श्यामाक बीजिनी।
विभासा भास्वराऽवर्णा समस्तासुर घातिनी॥

सुधामयी सुधामूर्तिः सुधा सर्वप्रियङ्करी।
सुखदा च सुरेशानी कृशानुवल्लभा हविः॥

स्वाहा स्वाहेशनेत्रा च वह्निवक्त्राग्नि तर्पिता।
सूर्याग्नि सोम नेत्रा च भूर्भुवःस्वः स्वरूपिणी॥

भूमिर्भूदेव संपूज्या स्वयम्भूः स्वात्म पूजका।
स्वयम्भू पुष्प मालाढ्या स्वयम्भू पुष्पवल्लभा॥

आनन्दकन्दली कन्दा स्कन्दमाता शिवालयां।
शिलारूपा शिलेशानी शिला पूजन हर्षिता॥

चेतना चिद्भवाकारा भवपत्नी भयापहा।
विघ्नेश्वरी गणेशानी गण-माता गणप्रसूः॥

गणेशमुख्य-सम्पूज्या विघ्नविध्वंसिनी निशा।
वश्या वश्यजन-स्तुत्या स्तुतिः श्रुतिधरा श्रुतिः॥

श्रुतिशास्त्र विधानज्ञा शास्त्रार्थ कोविदा रमा।
वेद्या विद्यामयी विद्या विधातृ वरदा वधूः॥

वधूरूपा वधूपूज्या वधूपान प्रतर्पिता।
वधूपूजन सन्तुष्टा वधूमाला विभूषणा॥

वामा वामेश्वरी वाम्या वामाचार प्रियङ्करी।
वामाचारा वामदेवपूज्या वामस्थिताऽर्थदा॥
वामदेवेश्वरी देवीं कुलाकुल विचारिणी।
वितर्कतर्क निलया प्रलयानल सन्निभा॥
यज्ञेश्वरी यज्ञमुखा यज्ञाङ्गी यज्ञवर्धिनी।
याजकाऽयाजका ऽराध्या यजना यानपात्रका॥
यक्षेश्वरी यक्षदात्री यक्ष नायक पूजिता।
पर्वतस्था पर्वतजा पार्वती पर्वताश्रया॥
पिलम्पिला पदस्थाना पददा नरकान्तका।
नारी नर्मप्रिया श्रीदा श्रीदश्रीदा शतायुधा॥
कामेश्वरी रति-हूंतिराहुति-हंव्यवाहना।
हरेश्वरी हर वधूर्हाटकाङ्गद मण्डिता॥
पुरुष्या स्वर्गति वैंद्या सुमुखा च महौषधिः।
सर्वरोगहरा माध्वी मधुपान परायणा॥
मधुस्थिता मधुमयी मददान विशारदा।
मधुतृप्ता मधुरूपा मधूक कुसुम प्रभा॥
माधवी माधवीवल्ली मधुमत्ता मदालसा।
मारप्रिया मारपूज्या मारदेव प्रियङ्करी॥
मारेशी च मृत्युहरा हरकान्ता मनोन्मना।
महावैद्यप्रिया वैद्या वैद्याचारा सुरार्चिता॥
सुरेशी सुरसंपूज्या सुरमान्या सुरेश्वरी।
सुरापानरता साध्वी पात्रसिद्धि प्रदायिनी॥
सामन्ता पीनवपुषी गुटी गुर्वी गरीयसी।
कालान्तका कालमुखी कठोर करुणामयी॥
नीला नाडी च वागीशी दूर्वाख्याता सरस्वती।
अपारपारगा गम्या गतिः प्रीतिः पयोधरा॥

पयोद सदृशच्छाया पारदाऽकृतिरालसा।
सरोजनिलना नीतिः कीर्तिः कीर्तिकरी कथा॥

काशी काम्या कपर्दाऽशा काशपुष्पोपमा रमा।
रामा रामप्रिया रामभद्रा देवसमर्चिता॥

रामसम्पूजिता रामसिद्धिदा रामकार्यदा।
रामभद्रार्चिता रेवा देवकी देववत्सला॥

देवपूज्या देववन्द्या देवदानव चर्चिता।
द्रुतिर्द्रुत गतिर्दम्भा दामिनी विजया जया॥

अशेष सुर सम्पूज्या निःशेषासुर सूदिनी।
वटिनी वटमूलस्था लास्य हास्यैक वल्लभा॥

अरूपा निर्गुणा सत्या सदा सन्तोष वर्धिनी।
सौम्या यजुर्वहा याम्या यमुना यामिनी यमी॥

क्षमा दक्षा वराम्बोधि दाल्भ्य सेव्या दरी पुरी।
पौरन्दरी पुलोमेशी पौलोमी पुलकाङ्कुरा॥

पुरस्था वनभूर्वन्या वानरी वनचारिणी।
समस्त वर्णनिलया समस्तवर्ण पूजिता॥

समस्तवर्ण वर्णाढ्या समस्तगुरु वत्सला।
समस्त मुण्ड मालाढ्या मालिनी मधुपस्वना॥

कोशप्रदा कोशवासा चमत्कृतिर लम्बुसा।
हास्यदा सदसद्रूपा सर्ववर्णमयी स्मृतिः॥

सर्वाक्षरमयी विद्या मूलविद्या विदीश्वरी।
अकारा षोडशाकारा कारावन्ध विमोचिनी॥

ककार व्यञ्जनाक्रान्ता सर्वमंत्राऽक्षरालया।
अमाऽणुरूपा विमला त्रैगुण्या चापराजिता॥

अम्बिकाऽम्बालिका चाऽम्बाप्यनन्त गुणमेखला।
अपर्णा पर्णशाला च साट्टहासा हसन्तिका॥

हसन्ती च हस्तिमुखा हस्तिपादा मनोरमा।
अद्रिकन्याऽट्टहासा च त्वजरास्याप्य रुन्धती॥
अब्जाक्षी त्वब्जिनी देवी चाम्बुजासन संस्थिता।
अब्जहस्ताऽब्ज पादा च त्वब्जपूजन तोषिता॥
अकार मातृकादेवी सर्वानन्दकरी कला।
आनन्दसुन्दरी चार्या चाघूर्णारूण लोचना॥
आदिदेवाऽन्तक क्रूरा चादित्य कुल भूषणा।
आं बीज मण्डलादेवी त्वाकार मातृकावलिः॥
इन्द्रस्तुतेन्दु बिम्बास्या त्विन कोटि समप्रभा।
इन्दिरा मन्दिरा शाला चेति हासकथा मतिः॥
इलेक्षुर सदाऽस्वादा त्विकाराक्षर भूषिता।
इन्द्रस्तुतेन्द्रसंपूज्या त्विनभद्रात्विनेश्वरी॥
इ भ-स्थितिरिभांगीना चेकाराक्षर-मातृका।
ईश्वरी वैभव ख्याता चेशानीश्वर वल्लभा॥
ईशा कामकला चैन्द्री त्वीकाराक्षर मातृका।
उग्रप्रभोग्रचिन्तोग्रवामाङ्गवासिनी त्वुषा॥
उग्रा वैष्णव संपूज्या चोग्रतारोल्मुकानना।
उमेश्वरी गुणश्रेष्टो स्त्रोदेश्वर्युदक प्रिया॥
उदका च्छोदक दात्री चोकारोद्भव मातृका।
ऊष्मोपा चोषणा सीता दितिराऽदित्य सुप्रभा॥
ऋणहर्त्री ह्यृणर्णेशी ऋलृवर्णा लृवर्णभाक्।
लृकारा भ्रुकुटिर्बाला बालादित्य समप्रभा॥
एनाङ्क मुकुटेहात्मा चैकाराक्षर बीजिता।
एनप्रियैनाङ्क मध्यस्थितैन मध्यवासिनी॥
एनेद्रवत्सला चैनी चैकारोद्भास मातृका।
ओकार शेखराभासा त्वौचित्या मदमण्डिता॥

अम्भोज निलया स्वस्था अःस्वरूपा चिदात्मिका।
षोडश स्वररूपा च षोडश स्वरगायनी॥
षोडशी षोडशाकारा कमला कमलोद्भवा।
कामेश्वरी कलाभिज्ञा कुमारी कुटिलालका॥
कुटिला कुटिलाकारा कुटुम्बिनी कृतिः शिवा।
कुलाकुलोपदेशानी कुलेशी कुब्जिका कला॥
कामा कामप्रिया कीरा कमनीया कपालिनी।
कालिका भद्रकाली च काला कामान्त कारिणी॥
कपर्दिनी कपालेशी कर्पूरचय चर्चिता।
कादम्बरी कोमलाङ्गी काश्मीरी कुङ्कुमद्युतिः॥
कुन्ता कूर्चाऽद्यबीजाड्या कमनीया कुलाकुला।
करालास्या करालाक्षी कामिनी कामपालिनी॥
कन्थाधरा कृपाकर्त्री ककाराक्षर मातृका।
खड्गहस्ता खर्परेशी खेचरी खगगामिनी॥
खेचरी मुद्रयायुक्ता खेचरत्व प्रदायिनी।
खगासना खलोलाक्षी खेटेशी खलनाशिनी॥
खेटकायुध हस्ता च खरांशुद्युति सन्निभा।
खाता खबीजनिलया खकारोल्लास मातृका॥
वैखरी बीजनिलया ख स्था खेचरवल्लभा।
गुण्या गजास्य जननी गणेशवरदा गया॥
गोदावरी गदाहस्ता गदाधरप्रिया गतिः।
गीता गोवाहनेशानी गरलाशन विग्रहा॥
गाम्भीर्यभूषणा गङ्गा गायत्री गजवाहना।
घोना घोनाकर स्तुत्या घुर्घुरा घोरनादिनी॥
घटस्था घटजसेव्या घटपूजन लोलुपा।
घटामय रसप्रीता घनरूपा घनेश्वरी॥

घनवाहन सेव्या च घकाराक्षर मातृका।
ङान्ता ङवर्णनिलया ङानुरूपा ङनालया॥
ङेज्ञानिनी ङनाजाप्या ङवर्णाक्षर मातृका।
चामीकर रुचिश्चान्द्री चन्द्रिका चन्द्रागिणी॥
चला चेला चञ्चला च चञ्चरी कालक प्रभा।
चञ्चरीक स्वरालापा चमत्कार स्वरूपिणी॥
चटुला चाटुकी चार्वी चम्पा चम्पकसन्निभा।
चीनांशुकधरा चित्रा चकाराक्षर मातृका॥
छत्री छत्रधराच्छन्ना छिन्नमस्ता च्छुरच्छविः।
छायासुत प्रिया छाया छवर्णामल-मातृका॥
जगदम्बा जगज्ज्योति र्ज्योतीरूपा जटाधरा।
जयदा जयकर्त्री च जयस्था जयहासिनी॥
जयेशी जयधर्त्री च जगत्कर्त्री जगत्प्रिया।
जगत्पूज्या जगद्वासा जगद्रक्षा जरातुरा॥
ज्वरघ्नी जम्भदमनी जगत्प्राणा जयावहा।
जैत्रा जम्भारिवरदा जीवना जीव वाक्प्रदा॥
जागृतिश्च जगन्निद्रा जगद्योनिर्जलन्धरा।
जालन्धरजया जाया जकाराक्षर मातृका॥
झम्पा झिञ्झेश्वरी झान्ता झकाराक्षर मातृका।
ञानुरूपा ञिनावासा ञकारेशी ञणायुधा॥
ञवर्ण बीजभूषाढ्या ञकाराक्षर मातृका।
टङ्कायुधा टकाराढ्या टोटाक्षी टसुकुन्तला॥
टङ्काश्रया टलीरूपा टकाराक्षर मातृका।
ठकुरा ठकुरेशानी ठकार त्रितयेश्वरी॥
ठस्वरूपा ठवर्णाढ्या ठकाराक्षर मातृका।
डक्का डक्केश्वरी डिम्बा डवर्णाक्षर मातृका॥

ढिणी ढेया ढिल्लहस्ता ढकाराक्षर मातृका।
णेशा णान्ता णवर्णात्मा णकाराक्षर भूषणा॥

तुरी तुर्या तुलारूपा त्रिपुरा तामसप्रिया।
तोतुला तारिणी तारासप्तविंशति-रूपिणी॥

त्रिस्वरा त्रिगुणिध्येया त्र्यम्बकेशी त्रिलोकधृत्।
त्रि-वर्गेशा त्रयी त्र्यक्षा त्रिपदा त्रेतरूपिणी॥

त्रिलोक जननी त्रेता त्रिपुरेश्वर पूजिता।
त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रि कोणान्तर्निवासिनी॥

त्रिकोण पूजनतुष्टा त्रिकोण पूजन प्रिया।
वसुकोण स्थिता वश्या वसुकोणार्थ वादिनी॥

वसुकोणासने संस्था षट्चक्रक्रम-पूजिता।
नागपत्र स्थिता शारी त्रिवृत्त पूजनार्थदा॥

चतुर्द्वाराग्र गा चक्र बाह्यान्तर निवासिनी।
तामसी तुम्बुरु स्तुत्या तोमरायुध मण्डिता॥

तुला कोटिस्वना तापी तपसः फलदायिनी।
तरिस्तरणि रूपा च तारकासुर घातिनी॥

तरलाक्षी तमोहन्त्री तकाराक्षर मातृका।
स्थली स्थविर रूपा च स्थूला स्थाली स्थलाब्जिनी॥

स्थविरेशी स्थूलमुखी थकाराक्षर मातृका।
दूतिका शिवदूती च दण्डायुध धरा द्युतिः॥

दीपा दनानुकम्पा च दम्भोलिधर वल्लभा।
देशानुचारिणी द्रेक्का द्राविडेशी दवीयसी॥

दाक्षायणी द्रुमलता देवमाता ऽदिदेवता।
दधिजा दुर्लभादेवी देवता परमाक्षरा॥

दामोदर सुपूज्या च दामोदर वरप्रदा।
दण्डहस्ता दण्डिपूज्या दकाराक्षर मातृका॥

धर्म्या च धर्ममूर्धन्या धनदा धनवर्धिनी।
धृतिर्धूता धन्य वधूर्धकाराक्षर मातृका॥
नलिनी नलिनहस्ता नाराचायुध धारिणी।
नीपोपवनमध्यस्था नगरेशी नरोत्तमा॥
नरेश्वरी नृपाराध्या नृपपूज्या नृपार्थदा।
नृपसेव्या नृपवन्द्या नरनारायण प्रसूः॥
नर्तकी नीरजाक्षी च नवर्णाक्षर भूषणा।
पद्मेश्वरी पद्ममुखी पत्रियाना परापरा॥
पारावतसुता पेया परवर्ग विमार्दिनी।
त्रिपुरारि वधूः पम्पा पत्री पत्रीश वाहना॥
पीवरांसा पतिप्राणा पीतलाक्षी पतिप्रिया।
पाठा पीठस्थिता पीत वस्त्रालङ्कार भूषणा॥
पुरूरव स्तुता पात्री पुत्रिका पुत्रदा प्रजा।
पुष्पोत्तमा पुष्पवती पुष्पमाला विभूषिता॥
पुष्पमालाधिशोभाढ्या पकाराक्षर मातृका।
फलदा स्फीतवस्त्रा च फेरुराव विभूषणा॥
फल्गुनी फल्गुतीर्थस्था फ वर्गाकृत मण्डना।
बलदा बालखिल्या च बाला बल रिपुप्रिया॥
बाल्यावस्था बन्धरेशी बकाराकृति मातृका।
भद्रिका भीमपत्नी च भीमा भर्गशिखाऽभया॥
भयघ्नी भीमनादा च भयानक मुखेक्षणा।
भिल्लेश्वरी भीतिहरा भद्रदा भाग्य वर्धिनी॥
भगमाला भगावासा भवानी भव तारिणी।
भग योनिर्भगाकारा भगस्था भग रूपिणी॥
भगलिङ्गामृत प्रीता भकाराक्षर मातृका।
मान्या मानप्रदा मीना मीनकेतन लालसा॥

मदोद्धता मनोतीता मेना मैनाक वत्सला।
मांसाहारा मांसप्रीता मत्स्यघाता महत्तरा॥
मेरुशृङ्गाग्र तुङ्गस्था मोदकाहार पूजिता।
मातङ्गिनी मदोन्मत्ता मधुमत्ता मठेश्वरी॥
मज्जा मुग्धानना मुग्धा मकाराक्षर भूषणा।
यशस्विनी यतीशानी यत्नकर्त्री यजु:प्रिया॥
यज्ञदात्री यज्ञफला यजुर्वेदफला यतिः।
यशोदा यतिसेव्या च यात्रा यात्रिक वत्सला॥
योगीश्वरी योगगम्या योगीन्द्र जन वत्सला।
यदुपुत्री यमघ्नी च यकाराक्षर मातृका॥
रत्नेश्वरी रमानाथ सेव्या रथ्या रजस्वला।
राज्यदा राजराजेशी रोगहर्त्री रजोवती॥
रत्नाकरसुता रम्या रात्री रात्रीपति प्रभा।
रक्षोघ्नी राक्षसेशानी रक्षोनाथ समर्चिता॥
रतिप्रिया रतिसुखा रकार कृत शेखरा।
लम्बोदरी ललज्जिह्वा लास्य तत्पर मानसा॥
लूतातन्तु वितानास्या लक्ष्मीर्लज्जा लया ऽलिनी।
लोकेश्वरी लोकदात्री लाटस्था लक्ष्मणाकृतिः॥
लम्बा लम्बक चोल्लासा लकाराक्षर वर्धिनी।
लिङ्गप्रीता कलिङ्गेशी लिङ्गस्था लिङ्गलिङ्गिनी॥
लक्ष्मीरूपा रसोल्लासा रामा रेवा रजोवती।
लयदा लक्ष्मणा लोला लकाराक्षर मातृका॥
वाराही वरदात्री च वीरसूर्वर दायिनी।
वीरेश्वरी वीरजन्या वरचर्वण चर्चिता॥
वरायुधा वराका च वामना वामनाकृतिः।
वधूता वधकावध्या वध्य भूर्वणिज प्रिया॥

वसन्त लक्ष्मीर्वटुकी वटुका वटुकेश्वरी।
वटुप्रिया वामनेत्रा वामाचारैक लालसा॥
वात्या वाम्या वरारोहा वेदमाता वसुन्धरा।
वयोयाना वयस्या च वकाराक्षर मातृका॥
शम्भुप्रिया शरच्चर्चा शाद्वला शशिवत्सला।
शीत द्युतिः शीतरसा शोणोष्ठी शीकर प्रभा॥
श्रीवत्सलाञ्छना शर्वा शर्व वामाङ्ग वासिनी।
शशाङ्कामलशोभाढ्या शार्दूल तनुर द्विजा॥
शेषहर्त्री शमीमूला शकारकृत शेखरा।
षोडशाक्षर मन्त्रेशी षाढा षोडा षडानना॥
षट्कूटा षड्रसास्वादा षडशीति मुखाम्बुजा।
षडास्यजननी षष्ठा षवर्णाक्षर मातृका॥
सरस्वतीप्रसूः सर्वा सर्वगा सर्वतोमुखा।
समा सीमा सतीमाता सागराभय दायिनी॥
समस्त पापशमनी सालभञ्जी सुदक्षिणा।
सुषुप्तिः सरसा साध्वी सामगा सामवेदजा॥
सत्यप्रिया सोममुखी सूत्रस्था सूतवल्लभा।
सनकेशी सुनन्दा च सवर्णा स्वास्थ्य दायिनी ॥
हाहा हूहू स्वरूपा च हलदात्री हलिप्रिया।
हं क्षःस्वरूपानुगता सर्वमातृक पूजिता॥
हरिदीश्वर पूज्यात्मा हविष्याहुतिवल्लभा।
ॐ ऐं सौःह्रीं महाविद्या आं शां ह्रां हूं स्वरूपिणी१०००॥

इति सहस्त्रनामस्तुतिः॥

अथ सहस्त्रनामावली॥

(नोट–यदि आप अर्चना करते हैं तो नमः नमः करना है और यदि हवन करना है, तो स्वाहा–स्वाहा शब्द का प्रयोग करना है।)

अथ कर न्यास:

स्वाहाकार करने से पूर्व ऐं क्लीं सौः के मूल मंत्र से अब न्यास कीजिए।

ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, क्लीं तर्जनीभ्यां नमः, सौःमध्यमाभ्यां नमः,
ऐं अनामिकाभ्यां नमः, क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
सौः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

अथ षडङ्ग न्यास:

ऐं हृदयाय नमः, क्लीं शिरसे नमः, सौःशिखायै वषट्
ऐं कवचाय हुँ, क्लीं नेत्राय वौषट, सौः अस्त्राय फट्
ॐ भूर्भुवः स्वः इति दिग्बंधः

अथ पञ्चपूजा (कलश को गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य इत्यादि निवेदित / समर्पित करना है।)

लं पृथ्व्यात्मिकायै श्री शारिकायै गन्धं समर्पयामि नमः
हं आकाशात्मिकायै श्री शारिकायै पुष्पं समर्पयामि नमः
वं वाय्वात्मिकायै श्री शारिकायै धूपं आघ्रापयामि नमः
रं वह्नि आत्मिकायै श्री शारिकायै नैवेद्यं समर्पयामि नमः
वं अमृतात्मिकायै श्री शारिकायै गंधं नैवेद्यं निवेदयामि नमः
(नोटः मन्त्रोपचार अथवा षोडशापचार से भी निवेदन किया जाता है।)

लक्ष्मी वशी कर्ण चूर्ण सहोदराणि,
त्वत् पाद, पंकज रजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे,
लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुराक्षराणि॥

श्री शारिके शरण्ये त्वां, मयि दासे कृपां कुरु।
ऋणं रोगं भयं शोकं रिपुनाशाय सत्वरम्॥
श्री शारिका देवी प्रसीद प्रसीद परमेश्वरी॥

अथ स्वाहाकार:

१. ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां श्रीशारिकायै स्वाहा

[ॐ ह्रीं श्रीं हूं फ्रां आं शां शारिकायै नमः। यह सप्ताक्षरी बीज मंत्र श्री शारिका का है।] इस बीजमंत्र स्वरूपिणी के लिए स्वाहा।

२. ॐ श्यामसुन्दर्यै स्वाहा

ॐ श्याम वर्णवाली सुन्दर स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३. ॐ शिलायै स्वाहा

शिला रूपिणी श्री शारिका पर्वत स्थित देवी के लिए स्वाहा।

४. ॐ शार्यै स्वाहा

मैना स्वरूप धारण की हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५. ॐ शुक्यै स्वाहा

मेधावी शक्ति का प्रतीक, हरित वर्ण वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६. ॐ शान्तायै स्वाहा

शान्त मूर्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७. ॐ शान्त मानस गोचरायै स्वाहा

ॐ शान्त मन से पृथ्वी पर विचरण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८. ॐ शान्तिस्थायै स्वाहा

शान्ति ही जिसका स्थायी रूप है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९. ॐ शान्तिदायै स्वाहा

शान्ति प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१०. ॐ शान्त्यै स्वाहा

शान्ति प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११. ॐ श्यामायै स्वाहा

श्याम स्वरूपा अष्टादशभुजा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२. ॐ श्याम पयोधरायै स्वाहा

मेघवर्ण स्वरूप साँवला है जिसका वक्षस्थल, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३. ॐ देव्यै स्वाहा

दिव्य स्वरूपा वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४. ॐ शशाङ्कबिम्बा-ढ्यायै स्वाहा

चन्द्रमा जैसे होंठ वाली समृद्ध स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५. ॐ शशांक कृतशेखरायै स्वाहा

अर्ध चन्द्र शेखर को धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६. ॐ शशांक शोभि लावण्यायै स्वाहा

जिसका लावण्य सौंदर्य चन्द्रमा को भी सुशोभित करता है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७. ॐ शशांक मध्य वासिन्यै स्वाहा

चन्द्रमा के भीतर वास है जिसका, ऐसी शारिका देवी के लिएं स्वाहा।

१८. ॐ शार्दूल वाहायै स्वाहा

व्याघ्र वाहन है जिसका, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९. ॐ देवेश्यै स्वाहा

देवी-परापर परमेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२०. ॐ शार्दूल चर्म वासस्यै स्वाहा

व्याघ्र चर्म है वस्त्र जिसके, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२१. ॐ गौर्यै स्वाहा

गौर वर्णा देवी, नव दुर्गा में अष्टम नवदुर्गा देवी गौरी स्वरूपा शारिका के लिए स्वाहा।

२२. ॐ पद्मावत्यै स्वाहा

लक्ष्मी स्वरूपा पद्म (कमल) पर आसीन शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२३. ॐ पीनायै स्वाहा

विशाल आकार वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२४. ॐ पीनवक्षोज कुड्मलायै स्वाहा

विकसित पीन पयोधर वाली, कुड़मला अर्थात् जिसके स्तन द्वयका पूर्ण विकास हुआ हो। वक्षोज-वक्षस्थल से प्राप्त स्तनपान कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२५. ॐ पीताम्बरायै स्वाहा

पीले हैं अम्बर-वस्त्र जिसके, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२६. ॐ रक्तदन्तायै स्वाहा

लाल अनार दाने जैसे दान्तों वाली, श्री चण्डी दुर्गा सप्तशती के एकादश अध्याय में रक्तदन्ता देवी का एक अवतीर्ण नाम है, उस शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२७. ॐ दाडिमी-कुसुम-प्रभायै स्वाहा

जिसकी आभा दाडिमी कुसुम-छोटी इलायची के पुष्प जैसी है। दाडिमा-अनार एवं इलायची को कहते हैं। ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२८. ॐ स्फुरद्रत्नांशु-खचितायै स्वाहा

जिसका स्फुरण रत्नांशु-रत्न किरणों से पूरित है, ऐसा स्फुरण जिसका है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९. ॐ रत्नमण्डल-विग्रहायै स्वाहा

रत्नरूपी मण्डलाकार, विग्रह (मूर्ति) वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३०. ॐ रक्ताम्बर-धरायै स्वाहा

रक्त वर्ण के वस्त्रों को धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३१. ॐ क्षीवायै स्वाहा

मदोन्मत, अति गर्वित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२. ॐ रत्नमाला-विभूषणायै स्वाहा

रत्न मालाओं से विभूषित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३३. ॐ रत्न-संमूर्छिताभायै स्वाहा

रत्नों की आभा से संमूर्छित कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३४. ॐ आद्यायै स्वाहा

आद्या परा शक्ति भट्टारिका शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३५. ॐ दीप्तायै स्वाहा

दीप्ति से परिपूर्ण देवी शारिका के लिए स्वाहा।

३६. ॐ दीप्त-शिखायै स्वाहा

जिसकी ज्योर्तिमयी शिखा प्रज्वलित होती है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३७. ॐ दयायै स्वाहा

अनुकम्पा, सुकुमारता से पूर्ण दयावती शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८. ॐ दयावत्यै स्वाहा

दया की प्रतिमूर्ति, जिसमें करुणा भी है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९. ॐ कल्पलतायै स्वाहा

कल्पवृक्ष की लता, जिसमें देने की शक्ति प्रचुरता से है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४०. ॐ कल्पान्त दहनो-पमायै स्वाहा

कल्प के अन्तिम चरण में समस्त ब्रह्माण्ड को भस्म कराने वाली तथा उपमा में समरूपता रखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४१. ॐ भैरव्यै स्वाहा

भैरव-भरण, रवन, वमन करने की सार्मथ्य रखने वाली, शिव की अभिन्न स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२. ॐ भीम-नादायै स्वाहा

भयानक नाद से हुँकार करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३. ॐ भयानक-मुख्यै स्वाहा

भयानक, भयप्रदा मुख वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४४. ॐ भगायै स्वाहा

द्वादश आदित्यों में एक सूर्य की आभा, एवं कीर्ति तथा सौंदर्य रूपा शारिका, शिवानी देवी के लिए स्वाहा।

४५. ॐ कारायै स्वाहा

भव बंधन से मुक्त कराने वाली ओंकार परा वाक् की अधिष्ठात्री देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४६. ॐ कारुण्य रूपायै स्वाहा

करुणा की ममतामयी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४७. ॐ भगमाला-विभूषणायै स्वाहा

द्वादश सूर्यों की माला को एवं पूर्ण चन्द्रमा को आभूषणों के रूप में धारण करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४८. ॐ भगेश्वर्यै स्वाहा

पूर्ण दिव्य आभा की ईश्वरी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४९. ॐ भगस्थायै स्वाहा

सूर्य माला ही जिसका स्थान है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५०. ॐ कुरुकुल्यायै स्वाहा

कुरु कुल में उत्पन्न हुई देवी, तथा कौरव/पाण्डवों की कुलदेवी शारिका के लिए स्वाहा।

५१. ॐ कृशोदर्यै स्वाहा

कृश एवं पतला है उदर जिसका, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२. ॐ कादम्बर्यै स्वाहा

कदम्बवृक्ष से पास आसन ग्रहण करने वाली एवं विद्या की अधिष्ठात्री देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३. ॐ कचोत्कृष्टायै स्वाहा

उत्कृष्ट अलक/बालों वाली सुन्दरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४. ॐ परमायै स्वाहा

परम सर्वश्रेष्ठ पूर्णा शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५. ॐ परमेश्वर्यै स्वाहा

सर्वेश्वरी, परिपूर्ण सर्वगुण सम्पन्ना देवी शारिका के लिए स्वाहा।

५६. ॐ सत्यै स्वाहा

भगवान शिव की अर्द्धाङ्गिनी दक्षप्रजापति की पुत्री सती देवी शारिका के लिए स्वाहा।

५७. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

सारस्वत कुल से पूजित, सरस्वती नदी, एवं माता शारदा का एक विशिष्ठ नाम वाली, ज्ञानमयी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

५८. ॐ सत्यायै स्वाहा

सत्य स्वरूपा, सत्यलोक की अधीश्वरी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

५९. ॐ असत्यायै स्वाहा

तमस् और असुरों का त्रास देने वाली शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

६०. ॐ सत्य स्वरूपिण्यै स्वाहा

सत्य स्वरूपिणी, जिसकी शाश्वत वास्तविकता है ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६१. ॐ परम्परायै स्वाहा

परम्परा से पूजित, आगम शास्त्रों में निहित देवी शारिका के लिए स्वाहा।

६२. ॐ पटाकारायै स्वाहा

पट का आकार धारण करने वाली, अति कोमल वस्त्र धारण करने वाली, देवी शारिका के लिए स्वाहा।

६३. ॐ पाटलायै स्वाहा

गुलाबी वर्ण वाली एवं गुलाबों से पूजित देवी शारिका के लिए स्वाहा।

६४. ॐ पाटल प्रभायै स्वाहा

गुलाबी पुष्पों जैसी प्रभा से परिपूर्णेश्वरी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

६५. ॐ पद्मिन्यै स्वाहा

पद्मिनी की भांति सूर्य किरणों से उद्भासित, श्री प्रिया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६६. ॐ पद्म-वदनायै स्वाहा

कमल के सदृश है मुख जिसका, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७. ॐ पद्मायै स्वाहा

लक्ष्मी स्वरूपा परा शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६८. ॐ पद्म करायै स्वाहा

कमल का निर्माण करने वाली, वैष्णवी शक्ति श्री लक्ष्मी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९. ॐ शिवायै स्वाहा

शिव की शक्ति शिवा-शिवानी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७०. ॐ शिवा श्रयायै स्वाहा

कल्याण कारिणी भगवती से आश्रित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७१. ॐ शरच छान्तायै स्वाहा

शिव जिस शक्तिमान पर आश्रित है, अर्थात् उसकी अर्द्धाङ्गिनी देवी, जो शरों को धारण की हुई है, और भक्तों के लिए शान्त स्वभाव वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७२. ॐ शच्यै स्वाहा

ऐन्द्री शक्ति, इन्द्राक्षी भगवती शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७३. ॐ रम्भायै स्वाहा

रम्भा अप्सरा जैसी सुर सुन्दरी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७४. ॐ विभावर्यै स्वाहा

वामाचार प्रिया मुखरित स्वरूपिणी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७५. ॐ द्युमणये स्वाहा

मणि से परिपूजित प्रकाश स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७६. ॐ प्रस्तरायै स्वाहा

समतल शिखर – प्रद्युम्न पीठ पर आसीन शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७७. ॐ पाठायै स्वाहा

वेद पाठ से प्रसन्नचित होने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७८. ॐ पीठेश्यै स्वाहा

चक्रेश्वर पीठ पर आसीन देवी स्वरूपा शारिका के लिए स्वाहा।

७९. ॐ पीवरा-कृतये स्वाहा

तरुणी गो माता की आकृति वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

८०. ॐ अचिन्त्यायै स्वाहा

जो अचिन्तन से हैं, जिसका स्वभाव स्वच्छन्द है ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८१. ॐ मुसलाधारायै स्वाहा

बलराम की आधार शक्ति, सदैव मुसल को धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२. ॐ मातङ्ग्यै स्वाहा

मतङ्ग ऋषि की पुत्री के रूप में अवतीर्ण हुई, देवी शारिका के लिए स्वाहा।

८३. ॐ मधुर स्वनायै स्वाहा

मधुर शब्द से आह्लादित कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४. ॐ वीणायै स्वाहा

वाद्य यंत्र के संगीत से प्रकट होने वाली सप्त मातृका देवी स्वरूपा शारिका के लिए स्वाहा।

८५. ॐ गीतप्रियायै स्वाहा

गायन कला में प्रवीण, सामवेद की अधिष्ठात्री देवी शारिका के लिए स्वाहा।

८६. ॐ गाथायै स्वाहा

धार्मिक श्लोक एवं छन्द, जो वेदों से इतर हो, प्राकृत में वर्णित गाथा, काव्य कृति से पूजित देवी शारदा के लिए स्वाहा।

८७. ॐ गारुड्यै स्वाहा

भगवान विष्णु के वाहन गरुड की शक्ति। गारुडी देवी, जो सर्पों की नैसर्गिक शत्रु है, उस शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८८. ॐ गरुड ध्वजायै स्वाहा

भगवान विष्णु का एक विशेषण, उसी ध्वज में विराजमान विजया शक्ति वाली, शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९. ॐ अतीव सुन्दरा-कारायै स्वाहा

बहुत ही सुन्दर, सुशोभित रमणीय आकारवाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९०. ॐ सुन्दर्यै स्वाहा

प्रिया, मनोहर, विद्यादर शक्ति से ओतप्रोत सुन्दरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९१. ॐ सुन्दरा-लकायै स्वाहा

सुन्दर, सुशोभित, लम्बे बालों वाली रमणीय शक्ति शारिका स्वरूपा देवी के लिए स्वाहा।

९२. ॐ अलकायै स्वाहा

कुबेर की शक्ति, सुन्दर अलकों वाली देवी, एवं आठ से दस वर्षों के भीतर की कुमारी देवी के लिए स्वाहा।

९३. ॐ नाक-मध्यस्थायै स्वाहा

अन्तरिक्ष के मध्य में निवास करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

९४. ॐ नाकिन्यै स्वाहा

अन्तरिक्ष की अधिष्ठात्री देवी शारिका के लिए स्वाहा।

९५. ॐ नाक पूजितायै स्वाहा

अन्तरिक्ष में दिव्य शक्तियों से पूजित देवी शारिका के लिए स्वाहा।

९६. ॐ पातालेश्वर-संपूज्यायै स्वाहा

पाताल के स्वामी से सर्वदा पूजित देवी शारिका के लिए स्वाहा।

९७. ॐ पातालतल-चारिण्यै स्वाहा

तल पाताल में विचरण करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

९८. ॐ अनन्तायै स्वाहा

अति अनन्त रूप है जिसका, जहाँ मनः शक्ति भी नहीं जा सकती है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९९. ॐ अनन्तरूपायै स्वाहा

जिस अनन्त का रूप वर्णन केवल देवी ही है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामासि।

१००. ॐ स्वज्ञातायै स्वाहा

जिसका ज्ञान, स्वयं ही उसका अपना स्वरूप है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१०१. ॐ ज्ञान वर्धिन्यै स्वाहा

जिसके कारण पारमार्थिक ज्ञान का वर्धन हो सकता है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१०२. ॐ अमेयायै स्वाहा

सीमा रहित परापर निर्मायामयी शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१०३. ॐ अप्रमेयायै स्वाहा

जो शैव के प्रमेय से भी परे है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१०४. ॐ अनन्तादित्य-रूपिण्यै स्वाहा

अनन्त आदित्यों का रूप धारण करने वाली, सौर मण्डल की ऊर्जा शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१०५. ॐ द्वादशादित्य-संपूज्यायै स्वाहा

बारह आदित्यों-सूर्यों से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१०६. ॐ शम्यै स्वाहा

अग्निगर्भा शमी वृक्ष, जो रगडने से, अग्नि उत्पन्न करने वाली है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१०७. ॐ श्यामाक बीजिन्यै स्वाहा

धान्य सस्यों की बीज तत्त्व शक्ति, श्यामक धान्य का पर्याय शब्द है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१०८. ॐ विभासायै स्वाहा

विशेष रूप की ज्योति तथा उससे परिपूरित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१०९. ॐ भास्वरायै स्वाहा

अति प्रकाशमान ज्योति से पूर्ण विभासा शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

११०. ॐ अवर्णायै स्वाहा

जो किसी भी वर्ण में नहीं आती है, जिसका कोई भी वर्ण (रंग) भेद नहीं, जो वर्णमाला से भी वर्णित नहीं हो सकती है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१११. ॐ समस्तासुर घातिन्यै स्वाहा

समस्त असुरों का नाश करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११२. ॐ सुधामय्यै स्वाहा

अमृत स्वरूपिणी दिव्य शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११३. ॐ सुधामूर्तये स्वाहा

अमृत की मूर्तिमान शक्ति, सञ्जीवनी शक्ति, देवी शारिका के लिए स्वाहा।

११४. ॐ सुधायै स्वाहा

अमृत रूपिणी गङ्गा, वितस्ता, यमुना नदी की स्रोत शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

११५. ॐ सर्व प्रियङ्कर्यै स्वाहा

समस्त जीवात्मा से कृपा करने वाली प्रियङ्करा शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११६. ॐ सुखदायै स्वाहा

सुख देने वाली एवं सुख का अनुभव कराने वाली शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११७. ॐ सुरेशान्यै स्वाहा

देवताओं की ईशानी, ईश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११८. ॐ कृशानुवल्लभायै स्वाहा

कृशानु जो शिव है, उसकी वल्लभा प्रिया शिवानी शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११९. ॐ हविषे स्वाहा

होम हविष्य द्वारा ऊर्जा देने वाली ज्योर्तिमयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२०. ॐ स्वाहायै स्वाहा

अग्निहोत्र, होम यज्ञ में आहुति देकर देवताओं का आह्वान मंत्र 'स्वाहा' शब्द से आहूत शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२१. ॐ स्वाहेश नेत्रायै स्वाहा

स्वाहा जो अग्नि देव की पत्नि है। उसके स्वामी अर्थात् अग्नि के नेत्रों में वास करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१२२. ॐ वह्नि वक्त्रायै स्वाहा

अग्नि के वक्त्र, मुख में ही जो शक्ति है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२३. ॐ अग्नि तर्पितायै स्वाहा

अग्नि द्वारा तर्पित दिव्य स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२४. ॐ सूर्याग्नि सोम नेत्रायै स्वाहा

सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा जिस देवी के नेत्र हैं, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२५. ॐ भूर्भुवःस्वःस्वरूपिण्यै स्वाहा

तीन व्याहृतियों (ॐ भूः भुः स्वः) ही जिसका स्वरूप है, ऐसी त्रिभुवनात्मक शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२६. ॐ भूम्यै स्वाहा

भूमि, पृथ्वी, मेदिनी शक्ति, शैव दर्शन की प्रथम तत्व स्वरूपिणी भू-देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१२७. ॐ भूदेव संपूज्यायै स्वाहा

भगवान विष्णु द्वारा पूजित भूदेवी शक्ति, पृथ्वी माता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२८. ॐ स्वयंभुवे स्वाहा

स्वयं भू शक्ति, शक्तिमान की नैसर्गिक शक्ति, ब्राह्मी शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२९. ॐ स्वात्म पूजकायै स्वाहा

स्वयं ही अपने आपको पूजने वाली अभेद परात्पर श्रेयस्करी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३०. ॐ स्वयम्भू-पुष्पमाला-ढ्यायै स्वाहा

स्वयंभू पुष्पमाला /त्रिगुणात्मक दिव्य शक्तियों से वन्दनीय एवं पूजित ब्राह्मी शक्ति का पुष्प धारण करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१३१. ॐ स्वयम्भू पुष्प वल्लभायै स्वाहा

स्वयंभू पुष्प / ब्रह्मा कमल की वल्लभा कुमुदिनी शक्ति वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३२. ॐ आनन्द कन्दल्यै स्वाहा

आनन्द स्वरूपिणी कन्दला फल वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३३. ॐ कन्दायै स्वाहा

इन्द्र के उद्यान की शोभा एवं कर्पूर की श्वेत वर्ण से उद्दीप्त पराशक्ति वाली पूर्णेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३४. ॐ स्कन्दमात्रे स्वाहा

कुमार कार्तिकेय की जननी पार्वती, नवदुर्गा की षष्टम कन्या स्वरूपा देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१३५. ॐ शिवालयायै स्वाहा

शिव के साथ शिवालय में पूजित योनि मुद्रा में देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१३६. ॐ शिला रूपायै स्वाहा

शिला रूप में वास करने वाली, शैलपुत्री एवं शारिका भवानी चक्रेश्वरी देवी के लिए स्वाहा।

१३७. ॐ शिलेशान्यै स्वाहा

शिला की ईश्वरी देवी स्वयंभू चक्रेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३८. ॐ शिलापूजन-हर्षितायै स्वाहा

श्री चक्रेश्वर शिला के पूजन से हर्षित होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३९. ॐ चेतनायै स्वाहा

चेतना स्वरूपा शक्ति, देवी सूक्त की दूसरी शक्ति शारिका ''या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभि धीयते नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः'' देवी के लिए स्वाहा।

१४०. ॐ चिद्द्रवा-कारायै स्वाहा

चित् से उत्पन्न आकारमयी चैतन्यमयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४१. ॐ भवपत्न्यै स्वाहा

भगवान शिव 'भव' की पत्नी भवानी, श्रीराजराजेश्वरी, श्री शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४२. ॐ भयापहायै स्वाहा

भय को भगाने वाली, भवानी भुवनेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४३. ॐ विघ्नेश्वर्यै स्वाहा

विघ्नों का नाश करने वाली शक्ति-वल्लभा, ऋद्धि-सिद्धि देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१४४. ॐ गणेशान्यै स्वाहा

गणेश की ईश्वरी, जगन्माता पार्वती शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४५. ॐ गणमात्रे स्वाहा

गणों की माता-गणेश, वटुक, नन्दिकेश्वर, वामदेव, तथा अष्टभैरवों की जननी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४६. ॐ गणप्रस्वै स्वाहा

रूद्र गणों द्वारा ऊँची ध्वनि की गई हुँकार स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४७. ॐ गणेशमुख्य-सम्पूज्यायै स्वाहा

गणेश द्वारा मुख्य रूप से षोडशोपचार पद्धति से सम्पूर्णतया पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४८. ॐ विघ्न विध्वंसिन्यै स्वाहा

समस्त विघ्नों को विध्वंस करने वाली **गं गणपतये नमः** से पूजित सप्तमातृका शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४९. ॐ निशायै स्वाहा

रात्रि सूक्त की ऋषिका एवं रात्रि स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५०. ॐ वश्यानै स्वाहा

समस्त ब्रह्माण्ड को अपने वश में रखने का सामर्थ्य एवं समरसता -मयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५१. ॐ वश्यजन स्तुत्यायै स्वाहा

वश में आये हुए जीवात्माओं से पूजित एवं स्तुति प्राप्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५२. ॐ स्तुतये स्वाहा

स्तुति से संतुष्ट होने वाली देवी, स्तुति का स्रोत देवी सूक्त, श्रीसूक्त, दुर्गा सूक्त, पृथ्वी सूक्त एवं सहस्र नामों तथा दुर्गा सप्तशती में वर्णित ध्यान श्लोक देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१५३. ॐ श्रुति धरायै स्वाहा

श्रुति को धारण करने वाली वेदमाता गायत्री देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१५४. ॐ श्रुतये स्वाहा

गोपिकाओं के रूप में अवतरित व्रजकुमारियाँ, वास्तव में वेद की ही श्रुतियाँ हैं, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५५. ॐ श्रुतिशास्त्र-विधानज्ञायै स्वाहा

श्रुति एवं धर्मशास्त्र के विधान की ज्ञानेश्वरी देवी शारदा, जिसमें ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, शास्त्र एवं तर्क, न्याय, षड्दर्शन आदि सम्मिलित हैं, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१५६. ॐ शास्त्रार्थ कोविदायै स्वाहा

शास्त्रार्थ में निष्णात् एवं प्रवीण, तार्किक मेधावी शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१५७. ॐ रमायै स्वाहा

लक्ष्मी, वल्लभा, रमा, स्थिति, शक्ति, संसार को समयाधीन नियंत्रण में रखने की सर्जनात्मक शक्ति वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१५८. ॐ वेद्यायै स्वाहा

शिव के साथ विवाहित शिवानी शक्ति एवं शिक्षिता वेद स्वरूपिणी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१५९. ॐ विद्या मय्यै स्वाहा

विद्यामयी श्री शारदा वरदा देवी सरस्वती स्वरूपा देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१६०. ॐ विद्यायै स्वाहा

देवी अथर्ववेद में वर्णित 'ब्रह्म विद्यास्मि' विज्ञान एवं ज्ञानमयी वेदजननी, ब्राह्मी शक्ति वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१६१. ॐ विधातृ वरदायै स्वाहा

विधाता ब्रह्मा को वरदान देने वाली शक्ति, पूर्ण ब्रह्माण्ड की साम्यावस्था शक्ति वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१६२. ॐ वध्वै स्वाहा

देवी के रूप में ही पुत्रवधु स्नुषा पूज्यनीय है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१६३. ॐ वधूरूपायै स्वाहा

वधु रूप में गृहलक्ष्मी का रूप धारण करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१६४. ॐ वधूपूज्यायै स्वाहा

वधु पूज्यनीय देवी है, यही सृष्टि एवं वंश वृद्धि का कारण भी है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१६५. ॐ वधूपान प्रतर्पितायै स्वाहा

वधु के लिए गृह प्रवेश के समय पेय प्रदान करने से तृप्त होती हुई देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१६६. ॐ वधूपूजन सन्तुष्टायै स्वाहा

वधु के पूजन से संतुष्ट हुई देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१६७. ॐ वधूमाला विभूषणायै स्वाहा

वधु की माला से विभूषित एवं मणिमाला से सुशोभित देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१६८. ॐ वामायै स्वाहा

शिव के साथ वाम भाग में शक्ति के रूप में विराजमान देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१६९. ॐ वामेश्वर्यै स्वाहा

शिव के वाम भाग में देवी पार्वती भवानी भैरवी शारिका के लिए स्वाहा।

१७०. ॐ वाम्यायै स्वाहा

वाम भाग में आसीन होकर शिव की शोभा बढ़ाने वाली स्वच्छन्द प्रिया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७१. ॐ वामाचार प्रियङ्कर्यै स्वाहा

वामाचार पूजा पद्धति से भी हित करने वाली प्रिया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७२. ॐ वामाचारायै स्वाहा

वामाचार द्वारा शक्ति के विभिन्न गुणों से पूजित एवं नमित देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१७३. ॐ वामदेव पूज्यायै स्वाहा

ऋषि वामदेव से पूजित, जो स्वच्छन्द भैरव स्तोत्र के मंत्र दृष्टा कहे जाते हैं, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१७४. ॐ वाम स्थितायै स्वाहा

देवी, शिव के वाम भाग में स्थित होकर अर्द्धनारीश्वर का रूप धारण करती हुई है। ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१७५. ॐ अर्थदायै स्वाहा

अर्थ प्रदान करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१७६. ॐ वामदेवेश्वरी देव्यै स्वाहा

बहुरूप गर्भ स्त्रोत्र में वर्णित भैरवी शक्ति जो वामदेवऋषि की इष्टदेवी है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१७७. ॐ कुलाकुल विचारिण्यै स्वाहा

कुलाचार कौल शैव पद्धति एवं अकुल शक्ति पद्धति से पूजित परा-शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१७८. ॐ वितर्कतर्क-निलयायै स्वाहा

तर्क शास्त्र एवं वितर्क शास्त्रों में वर्णित, जिसका पारस्परिक विलय होता है, ऐसी तार्किक शक्ति सम्पन्न शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७९. ॐ प्रलयानल सन्निभायै स्वाहा

प्रलय काल में अनल-सम्पूर्ण अग्नि का रूप धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८०. ॐ यज्ञेश्वर्यै स्वाहा

यज्ञ की अधिष्ठात्री देवी श्री शारिका सहस्रानाम स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८१. ॐ यज्ञमुखायै स्वाहा

यज्ञ के मुख में सदा विराजमान, जो यज्ञ मण्डप के मध्य भाग में मंत्र साधना से स्थापित की जाती है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१८२. ॐ यज्ञाङ्ग्यै स्वाहा

यज्ञ के अङ्ग–अनुष्ठान, यव तिल होम, आज्य होम, अन्नहोम एवं दशांश द्वारा तर्पण एवं पूर्णाहुति के समय अङ्ग–प्रत्यङ्ग में प्रकट होने वाली शारिका के लिए स्वाहा।

१८३. ॐ यज्ञवर्धिन्यै स्वाहा

यज्ञ में वर्धन करने वाली, पुष्टि प्रदान करने वाली, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्रदान करने वाली शारिका के लिए स्वाहा।

१८४. ॐ याजकायै स्वाहा

यज्ञ कराने वाले आगम शास्त्रज्ञ पण्डित के शब्दों में वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८५. ॐ अयाजकायै स्वाहा

जो आगम शास्त्र से भिन्न पद्धतियों से देवी की अर्चना करते हैं, उनमें वास करने वाली शारिका के लिए स्वाहा।

१८६. ॐ आराध्यायै स्वाहा

चौदह भुवनों में आराधना द्वारा पूजित होने से सर्वाराध्या शक्ति ही है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८७. ॐ यजनायै स्वाहा

यज्ञ करने की क्रिया शक्ति, यज्ञ करने की वेदी में स्थित शारिका के लिए स्वाहा।

१८८. ॐ यान पात्रकायै स्वाहा

नौका एवं पोत में घूमने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१८९. ॐ यक्षेश्वर्यै स्वाहा

कुबेर की ईश्वरी शक्ति कौबेरी, जो स्वर्गीय कोष की अधिष्ठात्री देवी है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९०. ॐ यक्षदात्रै स्वाहा

सुख सम्पदा तथा यज्ञ प्रदत्त ऐश्वर्य को देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९१. ॐ यक्षनायक पूजितायै स्वाहा

यक्ष के नायक कुबेर से पूजित शक्ति, जिसकी पौष कृष्ण पक्ष की अमावस्या के दिन पूजा की जाती है। कश्मीरी भाषा में इस पर्व को '**ख्यचि़ मावस**' कहते हैं, उस कौबेरी शक्ति वाली शारिका के लिए स्वाहा।

१९२. ॐ पर्वतस्थायै स्वाहा

शारिका पर्वत पर विद्यमान पूर्णा प्रकृति में स्थित, शक्ति युक्त शारिका के लिए स्वाहा।

१९३. ॐ पर्वतजायै स्वाहा

पर्वत पुत्र पार्वती, हिमवान एवं मेनका की पुत्री उमा नाम से पूजित महाभट्टारिका दुर्गा तथा स्कन्द को जन्म देने वाली महामाया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९४. ॐ पार्वत्यै स्वाहा

शिव एवं पार्वती के स्वरूप में बहु आयामों से पूजित पार्वती, महिषासुरमर्दिनी नाम से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९५. ॐ पर्वता श्रयायै स्वाहा

हिमालय पर्वत पर शङ्कर को वर स्वरूप प्राप्त करने वाली कठोर तपस्विनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९६. ॐ पिलम्पिलायै स्वाहा

उत्तेजित करने वाले नेत्रों को धारण करने वाली पिलम्पिला शक्ति युक्त देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१९७. ॐ पदस्थानायै स्वाहा

पद प्राप्ति का स्थान प्राप्त कराने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१९८. ॐ पददायै स्वाहा

कैवल्य का परम पद देने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१९९. ॐ नरक्रान्त-कायै स्वाहा

नरकासुर का नाश करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामासि।

२००. ॐ नार्यै स्वाहा

नारी रूप में विद्यमान शक्ति, शास्त्र प्रमाण है ''यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'' ऐसे आमंत्रित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२०१. ॐ नर्म प्रियायै स्वाहा

क्रीढ़ा में रूचि रखने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२०२. ॐ श्रीदायै स्वाहा

श्री सम्पदा को देने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२०३. ॐ श्रीद श्रीदायै स्वाहा

भगवान विष्णु को भी श्री लक्ष्मी प्रदान करने वाली देवी इच्छा शक्ति ही है। अत: संकेत समुन्द्र मंथन का है, ऐसी पूर्णेश्वरी श्रीदा शारिका के लिए स्वाहा।

२०४. ॐ शतायुधायै स्वाहा

एक सैंकडा आयुध रखने वाली शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२०५. ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा

कादि विद्या में वर्णित कामेश्वरी, जिसका संबंध कौलाचार से है, ऐसी पंचादशाक्षरी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२०६. ॐ रत्यै स्वाहा

कामदेव की पत्नी रति स्वरूपा शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२०७. ॐ हूत्यै स्वाहा

अनुष्ठान द्वारा आमंत्रित शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२०८. ॐ आहुत्यै स्वाहा

आहुति से प्रसन्न होने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२०९. ॐ हव्य वाहनायै स्वाहा

हव्य सामग्री से विधि पूर्वक आह्वान की हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२१०. ॐ हरेश्वर्यै स्वाहा

श्रीनगर के हरेश्वर पर्वतीय गुफा में विराजमान देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२११. ॐ हरवध्वै स्वाहा

हर की वधु स्वरूपा वल्लभा एवं ऋद्धि सिद्धि देवी शैलपुत्री शारिका के लिए स्वाहा।

२१२. ॐ हाटकाङ्गद-मण्डितायै स्वाहा

सुवर्ण से जिसके अङ्ग सुशोभित हैं, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२१३. ॐ पुरुष्यायै स्वाहा

मूल प्रकृति नारी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२१४. ॐ स्वर्गतये स्वाहा

स्वर्ग लोक में स्वच्छन्द रूप से जाने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२१५. ॐ वैद्यायै स्वाहा

वैद्यराज को वैद्य चिकित्सा शक्ति प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२१६. ॐ सुमुखायै स्वाहा

सुमुखा सौख्यपूर्ण मुद्रा में विकसित मुख वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२१७. ॐ महौषधये स्वाहा

महौषधि में वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२१८. ॐ सर्व रोगहारायै स्वाहा

सब प्रकार से रोगों का क्षरण अर्थात् नाश करने वाली शारिका जो श्री चक्र में वास करती है, ऐसी देवी के लिए स्वाहा।

२१९. ॐ माध्व्यै स्वाहा

श्रीफल एवं नारियल में वास करने वाली तथा मधूक वृक्ष से प्राप्त होने वाली रसिका से सेवित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२२०. ॐ मधुपान परायणायै स्वाहा

मधुपान में जिसे कुछ भी अप्रीति नहीं है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२२१. ॐ मधुस्थितायै स्वाहा

मधु में स्थित सञ्जीवनी शक्ति वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२२२. ॐ मधुमय्यै स्वाहा

मधु से परिपूर्ण शक्ति शालिनी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२२३. ॐ मददान विशारदायै स्वाहा

मद रूपी व्यसन को तिलाञ्जली देने में चतुर देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२२४. ॐ मधुतृप्तायै स्वाहा

मधुपान से तृप्त होने वाली शक्तिमयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२२५. ॐ मधुरूपायै स्वाहा

मधु के रूप में आसीन शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२२६. ॐ मधूक कुसुम-प्रभायै स्वाहा

मधु पुष्पों की प्रभा से ज्वलन्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२२७. ॐ माध्व्यै स्वाहा

मधु राक्षस को योग विद्या द्वारा नाश करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२२८. ॐ माधवी वल्ल्यै स्वाहा

वासन्ती लता, जिसके सुगंधित पुष्प, देवी को बहुत प्रिय हैं, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२२९. ॐ मधुमत्तायै स्वाहा

मधुपान करके असुरों के नाश करने के लिए उन्मत्त होकर उद्यत होने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२३०. ॐ मदालसायै स्वाहा

मद से निढाल हुई अवस्था में देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२३१. ॐ मार प्रियायै स्वाहा

मार अर्थात् कामदेव की प्रिया रति जैसी, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२३२. ॐ मार पूज्यायै स्वाहा

कामदेव से पूजित भवानी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२३३. ॐ मारदेव प्रियङ्कर्यै स्वाहा

कामदेव की प्रिया, प्रजनन हेतु रति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२३४. ॐ मारेश्यै स्वाहा

कामेश्वरी, जो सदा कामकला विलास से पूजित है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२३५. ॐ मृत्युहरायै स्वाहा

मृत्यु का हरण करने वाली, अमृतेश मुद्रा में दत्तचित अमृतमयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२३६. ॐ हरकान्तायै स्वाहा

संहार करने वाले की कान्ति युक्त प्रिया संहारिणी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२३७. ॐ मनोन्मनायै स्वाहा

मन से ही उन्मत होने वाली शक्ति, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२३८. ॐ महा वैद्युप्रियायै स्वाहा

धन्वन्तरि महावैद्य की प्रिया भवानी, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२३९ ॐ वैद्यायै स्वाहा

स्वयं जगमाता वैद्या बनकर रोग हरण करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२४०. ॐ वैद्याचारायै स्वाहा

वैद्यों का आचरण–वैद्यचिकित्सा दिलाने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२४१. ॐ सुरार्चितायै स्वाहा

दुष्ट दानवों का नाश करने के लिए देवताओं से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२५२. ॐ सुरेश्यै स्वाहा

देवताओं की ईश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२४३. ॐ सुर संपूज्यायै स्वाहा

देवताओं से सम्पूर्ण रूप से पूजित देवी के लिए स्वाहा।

२४४. ॐ सुर मान्यायै स्वाहा

देवताओं द्वारा पूजित एवं मान्या शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२४५. ॐ सुरेश्वर्यै स्वाहा

देवताओं की ईश्वरी श्री दुर्गा देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२४६. ॐ सुरापान रतायै स्वाहा

सुरापान में तत्पर देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२४७. ॐ साध्व्यै स्वाहा

साध्वी स्वरूपा देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२४८. ॐ पात्रसिद्धि प्रदायिन्यै स्वाहा

सुपात्र को सिद्धि देने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२४९. ॐ सामन्तायै स्वाहा

समीपस्थ एवं विश्व व्यापक देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२५०. ॐ पीन वपुष्यै स्वाहा

मोटा शरीर धारण की हुई देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२५१. ॐ गुट्यै स्वाहा

गोलाकार शरीर वाली एवं रेशम के कीड़े का कोया रूपी शरीर धारण करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२५२. ॐ गुरुव्यै स्वाहा

गुरु का व्यवहार करने वाली देवी, ऐसी देवी जिससे भक्त आगम शासत्रों एवं योग में निष्णान्त बन जाए, ऐसी विद्यावती भारती शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२५३. ॐ गरीयस्यै स्वाहा

अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण, गुरु की मध्यमा अवस्था वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२५४. ॐ कालान्तकायै स्वाहा

काल का भी संहार करने वाली महाकाली देवी स्वरूपा शारिका के लिए स्वाहा।

२५५. ॐ कालमुख्यै स्वाहा

काल का मुख धारण करती हुई देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२५६. ॐ कठोरायै स्वाहा

राक्षसों के प्रति कठोर स्वभाव वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२५७. ॐ करुणामय्यै स्वाहा

भक्तों के लिए करुणामयी माता भवानी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२५८. ॐ नीलायै स्वाहा

नील वर्ण वाली, तथा आकाश में व्याप्त देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२५९. ॐ नाड्यै स्वाहा

शरीर में नाडियों द्वारा रक्त सञ्चार करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२६०. ॐ वागीश्यै स्वाहा

वाग्देवी श्री शारदा एवं ब्राह्मी शक्ति देवी सूक्त की ऋषिका वागाम्भृणी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२६१. ॐ दूर्वा ख्यातायै स्वाहा

दूर्वा घास से घोषित की हुई शक्ति अर्थात् दूर्वा घास से अनुष्ठान के वातावरण को शुद्ध करती हुई देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२६२. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

वाग्वादिनी, श्रेयस्करी भगवती शारदा स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२६३. ॐ अपार पारगायै स्वाहा

अपार संसार भवसागर रूपी माया से पार कराने वाली संसृता शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२६४. ॐ गम्यायै स्वाहा

दैवी अनुग्रह से पोषित साधक, माया से पार होकर निवृत्ति मार्ग में जाते हैं, ऐसी दिव्य स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२६५. ॐ गतये स्वाहा

समय की गति में विचरण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२६६. ॐ प्रीत्यै स्वाहा

समस्त भूतों के साथ प्रीति रखने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२६७. ॐ पयोधरायै स्वाहा

भक्तों को दुग्धपान कराने वाली अर्थात् उन्हें अमृतकला की ओर लेने वाली शक्ति स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२६८. ॐ पयोदसदृश-च्छायायै स्वाहा

जिसकी आभा, निर्मल दुग्ध के सदृश है, ऐसी छाया देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२६९. ॐ पारदायै स्वाहा

भवसागर से पार कराने वाली ममता मयी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२७०. ॐ आकृत्यै स्वाहा

पल पल में विश्व को आकार देने वाली शक्ति, जिसके कारण प्रकृति में विकृति भी आती है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२७१. ॐ आलसायै स्वाहा

तामसिक जीवों के लिए आलस्य के रूप में प्रेरित करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२७२. ॐ सरोज निलयायै स्वाहा

कमल में जिसका निवास है, अर्थात् योगिनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२७३. ॐ नीत्यै स्वाहा

नीति शास्त्र की रचना करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२७४. ॐ कीर्त्यै स्वाहा

गीता में वर्णित स्त्रियों में कीर्ति रूप से प्रसिद्ध देवी स्वरूपा शारिका के लिए स्वाहा।

२७५. ॐ कीर्तिकर्यै स्वाहा

कीर्ति प्रदान करने वाली वैभव शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२७६. ॐ कथायै स्वाहा

पौराणिक कथाओं में कही गई, देवी माहात्म्य से गर्भित देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२७७. ॐ काश्यै स्वाहा

काशी विश्वनाथ की नगरी, अति प्रसिद्ध तीर्थ स्थली में प्रयाण करने से मुक्ति दिलाने वाली अम्बिका देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२७८. ॐ काम्यायै स्वाहा

कामाख्या भगवती, कामनाओं को पूर्ण करने वाली पूर्णेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२७९. ॐ कपर्दायै स्वाहा

जटायुक्त शिवानी एवं समुद्र से प्राप्त कर्पदिका-कौड़ी के रूप में भी विलास करती हुई देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२८०. ॐ आशायै स्वाहा

आशा रूपी देवी, आशा के कारण साहस दिलाने वाली मानसिक शक्ति प्रदान करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२८१. ॐ काश पुष्पो-पमायै स्वाहा

काश पुष्प के समान जिसकी द्युति है, ऐसी सौंदर्यपूर्ण दिव्य रूप वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२८२. ॐ रमायै स्वाहा

भगवान विष्णु की वैष्णवी शक्ति, जो सदा रमण करती है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२८३. ॐ रामायै स्वाहा

भगवान विष्णु की शक्ति जो सदा अनुदान प्रिया है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२८४. ॐ राम प्रियायै स्वाहा

सीता माता, अति सौम्या शक्ति पूर्णा प्रकृति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२८५. ॐ रामभद्रायै स्वाहा

भगवान राम की कल्याणकारिणी शक्ति देवी शारिका के लिए स्वाहा।

२८६. ॐ देव समर्चितायै स्वाहा

देवताओं द्वारा समरूप से अर्चित एवं पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२८७. ॐ राम सम्पूजितायै स्वाहा

श्रीराम से सम्पूजित योगिनी सती श्री शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२८८. ॐ राम सिद्धिदायै स्वाहा

श्री राम को सिद्धि प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२८९. ॐ राम कार्यदायै स्वाहा

श्री राम के कार्य को सम्पन्न कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९०. ॐ राम भद्रार्चितार्य स्वाहा

श्री रामभद्र से अर्चित श्री शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९१. ॐ रेवायै स्वाहा

रेवा (नर्मदा) नदी में उपस्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९२. ॐ देवक्यै स्वाहा

देवकी नदी में उपस्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९३. ॐ देव वत्सलायै स्वाहा

देवताओं की वत्सला/अति प्रिय स्नेहशीला शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९४. ॐ देव पूज्यायै स्वाहा

देवताओं से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९५. ॐ देववन्द्यायै स्वाहा

देवताओं से वन्दनीय शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९६. ॐ देव दानव चर्चितायै स्वाहा

दानव और देवताओं से चर्चित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९७. ॐ द्रुतये स्वाहा

द्रूत, शीघ्र गति से रणक्षेत्र में दानवों का संहार करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९८. ॐ द्रुतगतये स्वाहा

शीघ्रता से विचरण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

२९९. ॐ दम्भायै स्वाहा

आत्म श्लाघा स्वभाव वाली इन्द्र को वज्र प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामासि।

३००. ॐ दमन्यै स्वाहा

दमन करने का स्वभाव रखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३०१. ॐ विजयायै स्वाहा

विजयेश्वरी विजया देवी पूर्णेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३०२. ॐ जयायै स्वाहा

रण क्षेत्र में जय प्राप्ति की उत्सुक जया देवी शारिका के लिए स्वाहा।

३०३. ॐ अशेषसुर - सम्पूज्यायै स्वाहा

महिषासुर मर्दन के पश्चात् 'हुतशेष/अशेष'-पूर्णाहिति में सम्पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३०४. ॐ निःशेषासुरदूदिन्यै स्वाहा

सर्वत्र असुरों का नाश करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३०५. ॐ वटिन्यै स्वाहा

वर्तुलाकार/डोरीदार रूप में शारिका कश्मीरी भाषा में 'काजवठ' का रूप धारण करने वाली, विवाह संस्कार के दिव्य समय पर वर-वधु को सौभाग्य का वरदान प्रदान करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा। (यही कश्मीरी पोश पूज़ा का रहस्य है।)

३०६. ॐ वट मूलस्थायै स्वाहा

वट वृक्ष के मूल में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३०७. ॐ लास्य हास्यैक - वल्लभायै स्वाहा

लास्य (नृत्य) एवं हास्य में एकरूपता धारण करने वाली वल्लभा रूपी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३०८. ॐ अरूपायै स्वाहा

वास्तव में अरूपा अर्थात् किसी भी रूप की नहीं होती है जो, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३०९. ॐ निर्गुणायै स्वाहा

देवी निर्गुण-गुणों से रहित है, इच्छानुसार गुण धारण करती है ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३१०. ॐ सत्यायै स्वाहा

सत्य ही स्वभाव है जिसका, वही वैदिक 'सत्यम्' की ऊर्जा है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३११. ॐ सदासन्तोष - वर्धिन्यै स्वाहा

सदा सन्तोष का वर्धन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३१२. ॐ सौम्यायै स्वाहा

सौम्य रूप को धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३१३. ॐ यजु र्वहायै स्वाहा

यजुर्वेद की आहुति से प्रसन्नचित्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३१४. ॐ याम्यायै स्वाहा

रात्रि सूक्त से पूजित यम की शक्ति-याम्या देवी जिसका वर्ण केवल कृष्ण ही है। ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३१५. ॐ यमुनायै स्वाहा

यमुना नदी का रूप धारण की हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३१६. ॐ यामिन्यै स्वाहा

चन्द्रमा जैसी कर्पूर वर्ण वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३१७. ॐ यम्यै स्वाहा

मृत्यु लोक की अधिष्ठात्री शक्ति, यमी रूप में शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३१८. ॐ क्षमायै स्वाहा

क्षमा की मूर्ति, जिसमें अधिक सहिष्णुता है, दुर्गा स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३१९. ॐ दक्षायै स्वाहा

कार्य कुशलता में दक्ष शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२०. ॐ वराम्भोधये स्वाहा

अति सुन्दर एवं वर्षा से परिपूर्ण मेघ वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२१. ॐ दाल्भ्य सेव्यायै स्वाहा

इन्द्र द्वारा सेविता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२२. ॐ दर्यै स्वाहा

प्रद्युम्न पीठ की गुफा / कन्दरा / अन्तर्याग में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२३. ॐ पुर्यै स्वाहा

प्रद्युम्न पीठ के बर्हिर्याग में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२४. ॐ पौरन्दर्यै स्वाहा

पुरन्दर / इन्द्र की पुरी में वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२५. ॐ पुलोमेश्यै स्वाहा

ऐन्द्री के रूप में अवतरित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२६. ॐ पौलोम्यै स्वाहा

शचि, इन्द्राणी के रूप में शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२७. ॐ पुलकाङ्कुरायै स्वाहा

सरसों के अंकुरों से सुशोभित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२८. ॐ पुरस्थायै स्वाहा

श्रीनगर के शारिका पर्वतीय पुर में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३२९. ॐ वनभुवे स्वाहा

वन में उत्पन्न हुई, वन स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३३०. ॐ वन्यायै स्वाहा

विशाल वन, झुरमुटों की समूह, जल राशि एवं जल स्वरूपिणी प्रलयमयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३३१. ॐ वानर्यै स्वाहा

पवनसुत हुनमान अञ्जनी माता रूपी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३३२. ॐ वन चारिण्यै स्वाहा

वन में फिरने वाली, तपस्विनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३३३. ॐ समस्तवर्ण - निलयायै स्वाहा

अ से लेकर क्ष, त्र, ज्ञ वर्णों में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३३४. ॐ समस्तवर्ण - पूजितायै स्वाहा

समस्त वर्णमाला द्वारा पूजित शारिका एवं चतुर्वण द्वारा पूजित देवी के लिए स्वाहा।

३३५. ॐ समस्तवर्ण - वर्णाढ्यायै स्वाहा

समस्त वर्णमाला, वर्णों द्वारा सम्पन्न शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३३६. ॐ समस्तगुरु-वत्सलायै स्वाहा

समस्त गुरुजनों द्वारा वात्सल्य भाव से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३३७. ॐ समस्तमुण्ड-मालाढ्यायै स्वाहा

समस्त मुण्डमालाओं से सुसज्जित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३३८. ॐ मालिन्यै स्वाहा

मालिनी तंत्र द्वारा पूजित शारिका, जिसमें **नफ कोटि समावेश** वर्णमाला गर्भित है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३३९. ॐ मधुप स्वनायै स्वाहा

मधुप (भँवर) जैसी गुँजन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३४०. ॐ कोश प्रदायै स्वाहा

कोश प्रदान करने वाली लक्ष्मी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३४१. ॐ कोश वासायै स्वाहा

कोश में वास करने वाली लक्ष्मी रूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३४२. ॐ चमत्कृत्यै स्वाहा

चमत्कार करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३४३. ॐ अलम्बुसायै स्वाहा

कर्ण छेद वाली, गोरख मुण्डी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३४४. ॐ हास्य दायै स्वाहा

हास्य प्रदान करने वाली देवी के लिए स्वाहा।

३४५. ॐ सदसद्रूपायै स्वाहा

सत् एवं असत् रूप धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३४६. ॐ सर्ववर्ण मय्यै स्वाहा

सब वर्णों को अपने आप में लय करती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३४७. ॐ स्मृत्यै स्वाहा

सभी स्मृतियों की शक्ति स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा

३४८. ॐ सर्वाक्षर मयी विद्यायै स्वाहा

सभी अक्षरों से परिपूर्ण विद्या स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३४९. ॐ मूलविद्यायै स्वाहा

क ए इ ल ह्रीं, ह स क ह ल ह्रीं, स क ल ह्रीं, श्रीं, ऐं क्लीं सौः से सुशोभित शब्द रूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३५०. ॐ विश्वेश्वर्यै स्वाहा

समस्त ब्रह्माण्ड का सञ्चालन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३५१. ॐ अकारायै स्वाहा

अक्षर ब्रहम 'अ' वर्ण - अकारो विष्णुरुद्दिष्ट, अर्थात् अकार भगवान विष्णु का ही शब्द शरीर हे, उसकी भी इष्ट देवी शारिका तुम ही हो, ऐसी देवी के लिए स्वाहा।

३५२. ॐ षोडशाकारायै स्वाहा

षोडशी देवी त्रिपुरा स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३५३. ॐ काराबन्ध-विमोचिन्यै स्वाहा

कारागृह के बंधन से मुक्त कराने वाली श्री शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३५४. ॐ ककारव्यञ्जना-क्रान्तायै स्वाहा

ककार-कादिविद्या का आदि वर्ण एवं व्यञ्जन से उसके विस्तार में शक्ति शालिनी शारिका, कल्याणी कल्याणगुण वाली देवी के लिए स्वाहा।

३५५. ॐ सर्वमन्त्रायै स्वाहा

सभी मंत्रों में समाहित देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३५६. ॐ अक्षरालयायै स्वाहा

अक्षर न्यास में निवास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३५७. ॐ अमायै स्वाहा

अमाकला से युक्त क्षणिक काल में अवस्थित श्री शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३५८. ॐ अणुरूपायै स्वाहा

अणु रूप में महान अणुशक्ति को धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३५९. ॐ विमलायै स्वाहा

विमल स्वरूपा, श्री शारदा स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३६०. ॐ त्रैगुण्यायै स्वाहा

सत्व, रजस्, तमस् रूप में स्थित त्रिगुणात्मिका शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३६१. ॐ अपराजितायै स्वाहा

किसी से भी पराजित न होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३६२. ॐ अम्बिकायै स्वाहा

अम्बिका नाम से पूजित देवी शारिका के लिए स्वाहा।

३६३. ॐ अम्बालिकायै स्वाहा

अम्बालिका नाम से सुशोभित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३६४. ॐ अम्बायै स्वाहा

जगदम्बा नाम से कल्याणकारिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३६५. ॐ अनन्त गुण मेखलायै स्वाहा

अनन्त (शेष नाग) के गुणों से मेखला को धारण करती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३६६. ॐ अपर्णायै स्वाहा

कभी भी नही, किसी भी पर्ण (पत्ते) का आहार करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३६७. ॐ पर्ण शालायै स्वाहा

पर्णशाला में पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३६८. ॐ साट्टहासायै स्वाहा

केवल अट्टहास से हुँकार करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३६९. ॐ हसन्तिकायै स्वाहा

नित्य हसमुख स्वभाव वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३७०. ॐ हसन्त्यै स्वाहा

वर्तमान ही जिसकी हास्य मुद्रा है, उसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३७१. ॐ हस्ति मुखायै स्वाहा

हाथी का मुख वाली, अति सुशोभित कमनीय शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३७२. ॐ हस्ति पादायै स्वाहा

हाथी जैसे सुन्दर पैरों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३७३. ॐ मनोरमायै स्वाहा

मन को रिझाने वाली, मन में ही रमन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३७४. ॐ आद्रि कन्यायै स्वाहा

अद्रि पर्वत पुत्री पार्वती देवी शारिका के लिए स्वाहा।

३७५. ॐ अट्टाहासायै स्वाहा

अट्टहास करने से सर्व हितकारिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३७६. ॐ अजरा स्यायै स्वाहा

कान्तियुक्त अजर मुख वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३७७. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा

अरुन्धती देवी–प्रातः कालीन तारक माला स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३७८. ॐ अब्जाक्ष्यै स्वाहा

कमल नेत्र वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३७९. ॐ अब्जिनीदेव्यै स्वाहा

कुमुदिनी देवी अमृतमयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८०. ॐ अम्बुजासन-संस्थितायै स्वाहा

कमल के आसन पर विराजमान शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८१. ॐ अब्ज हस्तायै स्वाहा

अपने कर में कमल (कर कमला) धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८२. ॐ अब्ज पादायै स्वाहा

कमल पादद्वय से युक्त एवं शोभित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८३. ॐ अब्जपूजन-तोषितायै स्वाहा

कमलों से पूजा करने पर प्रसन्न होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८४. ॐ अकारमातृका-देव्यै स्वाहा

अकार मातृका देवी श्रीशारिका एवं ब्राह्मी शक्ति से परिपूर्ण शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८५. ॐ सर्वानन्दकर्यै स्वाहा

सम्पूर्ण आनन्द देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८६. ॐ कलायै स्वाहा

सम्पूर्ण कलाओं से युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८७. ॐ आनन्दसुन्दर्यै स्वाहा

आनन्द प्रदान करने वाली सौंदर्य युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८८. ॐ आर्यायै स्वाहा

सर्वगुण सम्पन्न एवं सर्वश्रेष्ठ आर्या रूपी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३८९. ॐ आघूर्णा रुण-लोचनायै स्वाहा

अरुण वर्ण नेत्र वाली तथा चारों और घूर-घूर कर कटाक्ष करती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९०. ॐ आदिदेवायै स्वाहा

आदि देव गणेश की पूज्यनीया माता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९१. ॐ अन्तक, क्रूरायै स्वाहा

मृत्यु कालीन यम को क्रूर भाव से देखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९२. ॐ आदित्यकुल-भूषणायै स्वाहा

सूर्य कुल में उत्पन्न हुई तथा चमकती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९३. ॐ आंबीज मण्डला देव्यै स्वाहा

'आं' बीज से शब्द शरीर में उल्लसित मण्डलाकार स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९४. ॐ आकार मातृका-वलये स्वाहा

आकार से युक्त मातृका चक्र में भ्रमण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९५. ॐ इन्द्रस्तुतायै स्वाहा

इन्द्र द्वारा स्तुति से प्रसन्न वदना पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९६. ॐ इन्दु बिम्बास्यायै स्वाहा

चन्द्रमा जैसी मुखाकृति वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९७. ॐ इनकोटि सम-प्रभायै स्वाहा

इन (शक्तिशालिनी) करोड़ आभा वाली प्रभा से युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९८. ॐ इन्दिरायै स्वाहा

इन्द्र की शक्ति ऐन्द्री देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

३९९. ॐ मन्दिरायै स्वाहा

मन्दिर रूपी शारिका पर्वत के आवास में रहने वाली शक्तिमयी देवी चक्रेश्वरी शारिका के लिए स्वाहा।

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामासि।

४००. ॐ शालायै स्वाहा

शारिका पर्वत के तुङ्ग की शाला पर स्थिर भाव से रहने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४०१. ॐ इतिहास कथायै स्वाहा

इतिहास एवं रामायण, महाभारत, पुराण तथा सहस्रनामों से वर्णित कथा रूपी सतसङ्ग में उपस्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४०२. ॐ मत्यै स्वाहा

बुद्धि युक्त विचार रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४०३. ॐ इलायै स्वाहा

पृथ्वी में तथा गो माता के रूप में शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४०४. ॐ इक्षु रसदायै स्वाहा

इक्षु-घने के मधुरतम रस का आस्वादन कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४०५. ॐ आस्वादायै स्वाहा

अमृत रूपी रस का आस्वादन कराने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४०६. ॐ इकाराक्षर भूषितायै स्वाहा

इकार-शक्ति स्वरूपा, शव के साथ इ रूपी 'शिव' स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४०७. ॐ इन्द्रस्तुतायै स्वाहा

इन्द्र के द्वारा स्तुतिगान में लय स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४०८. ॐ इन्द्र संपूज्यायै स्वाहा

इन्द्र द्वारा पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४०९. ॐ इनभद्रायै स्वाहा

इन (सूर्य) की कल्याण रश्मियाँ एवं स्वरूपमयी भद्रावती प्रभा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४१०. ॐ इनेश्वर्यै स्वाहा

सूर्य देव की अधिष्ठात्री देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४११. ॐ इभस्थितये स्वाहा

हथिनी पर सवार होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४१२. ॐ इभांगीनायै स्वाहा

हथिनी जैसी हृष्ट पुष्ट अङ्गों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४१३. ॐ इकाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

इकाराक्षर मयी मातृका शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४१४. ॐ ईश्वर्यै स्वाहा

ईश्वरी स्वरूपा श्रेयस्करी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४१५. ॐ वैभव ख्यातायै स्वाहा

वैभव सम्पन्ना सर्वलोकमयी ख्याति प्राप्ता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४१६. ॐ ईशान्यै स्वाहा

चिदग्नि से प्रतिष्ठित ईशानी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४१७. ॐ ईश्वर वल्लभायै स्वाहा

ईश्वर की वल्लभा अति प्रेयसी शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४१८. ॐ ईशायै स्वाहा

ईश की अर्द्धाङ्गिनी ईशा शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४१९. ॐ कामकलायै स्वाहा

कामकला में सदा विलास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२०. ॐ ऐन्द्यै स्वाहा

इन्द्र की महिषी ऐन्द्री स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२१. ॐ ईकाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

ईकार अक्षर में स्थित ससवर्णा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२२. ॐ उग्रप्रभायै स्वाहा

उग्र प्रभाव से उत्पीढ़न करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२३. ॐ उग्रचिन्तायै स्वाहा

तमस् के कारण राक्षसों में उग्रचिन्ता पैदा करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२४. ॐ उग्र वामाङ्ग वासिन्यै स्वाहा

उग्रस्वरूप अघोरी शिव के वामभाग में वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२५. ॐ उषायै स्वाहा

रात्रि देवी के गर्भाशय में आसीन उषा स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२६. ॐ उग्रायै स्वाहा

उग्र देव वामकेश्वर की शक्ति उग्रा भवानी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२७. ॐ वैशणव पूज्यायै स्वाहा

वैष्णव जन से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२८. ॐ उग्र तारायै स्वाहा

दश महाविद्या में उग्रतारा स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४२९. ॐ उल्मुका ननायै स्वाहा

ज्वाला स्वरूपा, अग्निमुखी रूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३०. ॐ उमेश्वर्यै स्वाहा

उमेश की ईश्वरी पराभट्टारिका शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३१. ॐ गुण श्रेष्ठायै स्वाहा

गुणों में श्रेष्ठ सर्वसम्पन्ना शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३२. ॐ उस्त्रायै स्वाहा

प्रकाश की किरणों को धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३३. ॐ उदेश्वर्यै स्वाहा

मुक्ति दायिनी, अतिशय उच्च देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३४. ॐ उदक प्रियायै स्वाहा

उत्तर दिशा में आसीन पूर्वजों को उदक तर्पण से तृप्त कराने वाली शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३५. ॐ उदकाच्छायै स्वाहा

उत्तरीय भाग में आच्छादित देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३६. ॐ उदकदात्र्यै स्वाहा

जल तत्व प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३७. ॐ उकारोद्भव मातृकायै स्वाहा

उकार से उत्पन्न हुई मातृका देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३८. ॐ ऊष्मायै स्वाहा

ऊष्मा से भरपूर अग्नि तत्त्व शक्ति, शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४३९. ॐ ऊषायै स्वाहा

प्रभात वेला एवं मलयाचल स्थित सौम्य वर्णा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४४०. ॐ ऊषणायै स्वाहा

काली मिर्च और अदरक से प्रसन्न होने वाली एवं ऊषणा शक्ति प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४४१. ॐ सीतायै स्वाहा

रामचन्द्र की शक्ति, सीता माता, शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४४२. ॐ दित्यै स्वाहा

दैत्यों की जननी दिति, वह भी शारिका का ही रूप है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४४३. ॐ आदित्य सुप्रभायै स्वाहा

सूर्य की सुप्रभा से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४४४. ॐ ऋणहर्त्र्यै स्वाहा

ऋणों का हनन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४४५. ॐ ऋणायै स्वाहा

देव ऋण, पितृ ऋण, ऋषि ऋण एवं अतिथि ऋण के स्वरूप में व्याप्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४४६. ॐ ऋणेश्यै स्वाहा

तीन ऋणों की स्वामिनी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४४७. ॐ ॠलृवर्णायै स्वाहा

ॠ लृ वर्णों से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४४८. ॐ लृवर्णभाजे स्वाहा

लृ वर्ण से चक्रेश्वर में पूजी हुई शारिका (भाजा का अर्थ पूजा में है), ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४४९. ॐ लृकारायै स्वाहा

लृ वर्णात्मिका चक्रेश्वरी नवम स्वर में स्पन्दित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४५०. ॐ भ्रुकुटये स्वाहा

भ्रकुटि-बौंहों के कटाक्ष से इंगित होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४५१. ॐ बालायै स्वाहा

'बालहामा' की बाला देवी, शारिका स्वरूपा है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४५२. ॐ बालादित्य-समप्रभायै स्वाहा

बाल रवि से सुप्रकाशित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४५३. ॐ एनाङ्ग मुकुटायै स्वाहा

कई बहिर्ङ्ग अर्थात् ऊष्म और अन्तस्थ, अन्तराङ्ग वर्णों के बने हए मुकुट से सुशोभित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४५४. ॐ ईहात्मने स्वाहा

जगत की आत्मा में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४५५. ॐ एकाराक्षर-बीजितायै स्वाहा

ॐ एकाक्षर ब्रह्म की बीज स्वरूपा प्रणव शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४५६. ॐ एन प्रियायै स्वाहा

कई रंगों को चाहने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४५७. ॐ एनाङ्क मध्यस्थितायै स्वाहा

चक्रेश्वर के वर्णों में बिन्दु के मध्य में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४५८. ॐ एन मध्य वासिन्यै स्वाहा

एन वर्णात्मिका - बहुरंगी पतङ्ग-वत वर्णमाला सुशोभित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४५९. ॐ एनेन्द्र वत्सलायै स्वाहा

इन्द्रधनुष की वत्सला शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४६०. ॐ एन्यै स्वाहा

रंगों में दिखने वाली आभा की किरण से दीप्ति युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४६१. ॐ एकारोद्धा-समातृकायै स्वाहा

एकाकार शब्द ब्रह्म से उद्भासित 'ऐं' बीजमातृका स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४६२. ॐ ओंकार शेखरा-भासायै स्वाहा

विस्मित करने वाले शेखर की आभा से युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४६३. ॐ औचित्यायै स्वाहा

सृष्टि रचना के अन्तर्गत औचित्य की उपमामयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४६४. ॐ मद मण्डितायै स्वाहा

मद से घूर-घूर कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४६५. ॐ अम्भोज निलयायै स्वाहा

कमल के बीज में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४६६. ॐ स्वस्थायै स्वाहा

सदा स्वस्थ रखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४६७. ॐ अःस्वरूपायै स्वाहा

विसर्ग स्वरूपिणी अः में प्रकट हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४६८. ॐ चिदात्मिकायै स्वाहा

चिदाकाश रूपी आत्मा में प्रकट हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४६९. ॐ षोडश स्वर रूपायै स्वाहा

षोडशी स्वर अर्थात कदिविद्या एवं श्रीं बीज में उद्भासित देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४७०. ॐ षोडश स्वर गायन्यै स्वाहा

सोलह स्वर (अ से अः तक) गायन करने वाली सरस्वती रूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४७१. ॐ षोडश्यै स्वाहा

षोडशी मंत्र द्वारा पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४७२. ॐ षोडशा-कारायै स्वाहा

सोलह पद्मपत्रों से श्रीचक्र में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४७३. ॐ कमलायै स्वाहा

लक्ष्मी कमला स्वरूपा, शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४७४. ॐ कमलोद्भवायै स्वाहा

कमल से उत्पन्न हुई लक्ष्मी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४७५. ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा

कामेश्वर (शिव) की अर्द्धाङ्गिनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४७६. ॐ कलाभिज्ञायै स्वाहा

पूर्ण कलाओं की ज्ञान स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४७७. ॐ कुमार्यै स्वाहा

कुमारी के रूप में शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४७८. ॐ कुटिला-लकायै स्वाहा

कुटिल (घुँघराले) बालों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४७९. ॐ कुटिलायै स्वाहा

कुटिल (टेडी) चाल से राक्षसों का नाश करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४८०. ॐ कुटिलाकारायै स्वाहा

कुटिल आकार वाली अर्थात् वामाचार प्रिया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४८१. ॐ कुटुम्बिन्यै स्वाहा

३३ करोड़ देवी-देवताओं के कुटुम्भ की साक्षी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४८२. ॐ कृत्यै स्वाहा

कृतित्व ही जिनकी सौम्य शक्ति है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४८३. ॐ शिवायै स्वाहा

शिव की शक्ति शिवा भगवती शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४८४. ॐ कुला-कुलोप देशान्यै स्वाहा

कुल-अकुल (समयाचार, कौलाचार) की उपदेश देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४८५. ॐ कुलेश्यै स्वाहा

कौचाचार की ईश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४८६. ॐ कुब्जिकायै स्वाहा

कुब्जिका का रूप धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४८७. ॐ कलायै स्वाहा

कला कौशल प्रवीण शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४८८. ॐ कामायै स्वाहा

'क' वर्ण में गुम्फित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४८९. ॐ काम प्रियायै स्वाहा

काम-इच्छा एवं शुभ कामना से प्रिय बिन्दु को धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४९०. ॐ कीरायै स्वाहा

तोते का रूप धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४९१. ॐ कमनीयायै स्वाहा

अति कमनीय सौंदर्य युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४९२. ॐ कपालिन्यै स्वाहा

कपाल माला धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४९३. ॐ कालिकायै स्वाहा

कालिका भगवती, शिला रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४९४. ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा

भद्र काली रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४९५. ॐ कालायै स्वाहा

काल द्वारा संहार करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४९६. ॐ कामान्त कारिण्यै स्वाहा

कामदेव का संहार करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४९७. ॐ कपर्दिन्यै स्वाहा

शिव की कपर्दिनी शिवानी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

४९८. ॐ कपालेश्यै स्वाहा

कपालेश्वर की ईश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

४९९. ॐ कर्पूरचय-चर्चितायै स्वाहा

कर्पूर से पूजी जाने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामासि।

५००. ॐ कादम्बर्यै स्वाहा

कदम्भ पुष्पों से प्राप्त आसव में मस्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५०१. ॐ कोमलाङ्ग्यै स्वाहा

कोमल अङ्गों वाली कमनीय शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५०२. ॐ काश्मीर्यै स्वाहा

काश्मीरी कुंकुम से माथे को सुशोभित करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५०३. ॐ कुंकुमद्युतये स्वाहा

कुंकुम की आभा से द्युति पूर्ण प्रकाश युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५०४. ॐ कुन्तयै स्वाहा

छोटे से कीटाणु में भी व्याप्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५०५. ॐ कूर्चायै स्वाहा

मोर पंख धारण किए हुए, नारियल के पेड़ में वास करती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५०६. ॐ आद्य बीजाढ्यायै स्वाहा

आद्य बीज 'ऐं' से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५०७. ॐ कमनीयायै स्वाहा

अति सुन्दर कमनीय कान्ति वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५०७. ॐ कुलाकुलायै स्वाहा

शैव और शाक्त सम्प्रदाय से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५०९. ॐ करालस्यायै स्वाहा

भयानक आस्य (मुख) वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५१०. ॐ करालाक्ष्यै स्वाहा

भयानक नेत्रों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५११. ॐ कामिन्यै स्वाहा

स्नेहमयी, चन्द्रमा जैसी सुन्दर शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५१२. ॐ काम पालिन्यै स्वाहा

भवचक्र में व्याप्त कामदेव की पालिका शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५१३. ॐ कन्था धरायै स्वाहा

योगिनी का वस्त्र धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५१४. ॐ कृपाकर्त्र्यै स्वाहा

कृपा की कर्त्री–कृपा से अनुगृहीत करने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

५१५. ॐ ककाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

ककार अक्षरों की मातृका देवी कल्याणी, कमनीया, कमलाक्षी, कलिदोष-हरा आदि अठारह नामों से युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५१६. ॐ खड्ग हस्तायै स्वाहा

खड्ग को हाथ में धारण करती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५१७. ॐ खर्परेश्यै स्वाहा

मुण्डमाला धारण की हुई भिक्षुणी रूप में शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५१८. ॐ खेचर्यै स्वाहा

खेचरी मुद्रा में आसीन शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५१९. ॐ खग गामिन्यै स्वाहा

गरुड पर आसीन होकर घूमने वाली वैष्णवी शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२०. ॐ खेचरी मुद्रया-युक्तायै स्वाहा

खेचरी-विशेष मुद्रा से युक्त भी और मुक्त भी अर्थात् परा मुद्रा में लय, शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२१. ॐ खेचरत्व प्रदायिन्यै स्वाहा

आकाश में घूमने/भ्रमण करने की शक्ति प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२२. ॐ खगासनायै स्वाहा

गरुड पक्षी ही जिसका आसन है जिसका, ऐसी नारायणी शक्ति एवं उल्लू पर आसीन लक्ष्मी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२३. ॐ खलोलाक्ष्यै स्वाहा

तेल की तलहट-खली जैसी नेत्रों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२४. ॐ खेटेश्यै स्वाहा

खेटेश-बलराम की अधिष्ठात्री देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२५. ॐ खल नाशिन्यै स्वाहा

दुष्टों का नाश करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२६. ॐ खेटका-युधहस्तायै स्वाहा

गदा का आयुद्ध हाथ में धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२७. ॐ खरांशुद्युति-सन्निभायै स्वाहा

सूर्य की चमक धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२८. ॐ खातायै स्वाहा

तडाग-पोखरीबल-अमृतकुण्ड में वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५२९. ॐ स्वबीज निलयायै स्वाहा

स्वबीज आकाश तत्त्व में निवास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३०. ॐ खकारोल्लास मातृकायै-स्वाहा

'ख' शब्द से उल्लसित मातृका रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३१. ॐ वैखर्यै स्वाहा

वैखरी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३२. ॐ बीज निलयायै स्वाहा

बीज अक्षर स्वरूपा, बीज में आसीन बीजवती शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३३. ॐ स्वस्थायै स्वाहा

सदैव स्वस्थ स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३४. ॐ खेचर वल्लभायै स्वाहा

आकाश में प्रिय रूप से विचरण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३५. ॐ गुण्यायै स्वाहा

सर्वगुण सम्पन्ना शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३६. ॐ गजास्य जनन्यै स्वाहा

श्री गणेश की जननी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३७. ॐ गणेश वरदायै स्वाहा

श्री गणेश को वरदान देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३८. ॐ गयायै स्वाहा

गया क्षेत्र में मोक्ष प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५३९. ॐ गोदावर्यै स्वाहा

गोदावरी में मोक्ष प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४०. ॐ गदाहस्तायै स्वाहा

गदा हाथ में लिए हुए शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४१. ॐ गदाधर प्रियायै स्वाहा

गदाधर भगवान विष्णु की प्रिया लक्ष्मी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४२. ॐ गत्यै स्वाहा

विश्व को गति देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४३. ॐ गीतायै स्वाहा

प्रत्येक गीत में उपस्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४४. ॐ गोवाहनेशान्यै स्वाहा

कामधेनु स्वरूपिणी, पृथ्वी माता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४५. ॐ गरलाशन विग्रहायै स्वाहा

नीलकण्ठ भगवान शंकर की प्रिया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४६. ॐ गाम्भीर्य भूषणायै स्वाहा

गम्भीर आकृति वाले आभूषणों से सुसज्जित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४७. ॐ गङ्गायै स्वाहा

हरमुकुट की गङ्गा प्रवाह में देदीप्यमान शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४८. ॐ गायत्र्यै स्वाहा

पञ्चमुखी गायत्री स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५४९. ॐ गज वाहनायै स्वाहा

हाथी के वाहन पर आसीन ऐन्द्री स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५०. ॐ घोनायै स्वाहा

वाराही रूप धारण की हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५१. ॐ घोनाकर स्तुत्यायै स्वाहा

वाराह रूप से स्तुत्य शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५२. ॐ घुर्घुरायै स्वाहा

घुर्घर नाद करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५३. ॐ घोरन्नादिन्यै स्वाहा

घोर नाद करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५४. ॐ घटस्थायै स्वाहा

घट (कश्मीरी वटुक में) आसीन शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५५. ॐ घटज सेव्यायै स्वाहा

घट से प्रकट हुए वटुकराज भैरव से सेवित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५६. ॐ घटपूजन लोलुपायै स्वाहा

घट पूजन की लालसा रखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५७. ॐ घटामय रस प्रीतायै स्वाहा

घट/कलश पूजा से प्राप्त अमृतमयी रस से प्रीति रखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५८. ॐ घन रूपायै स्वाहा

मेघ रूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५५९. ॐ घनेश्वर्यै स्वाहा

समुद्र से उत्पन्न मेघों की ईश्वरी, ऐन्द्री शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५६०. ॐ घन वाहन सेव्यायै स्वाहा

भगवान शिव एवं इन्द्र द्वारा पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५६१. ॐ घकाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

'घ' से आरम्भ मातृका स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५६२. ॐ ङान्तायै स्वाहा

ङ वर्ण जिसके अन्त में है, वे वर्ण भी शारिका स्वरूपा हैं, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५६३. ॐ ङवर्ण निलयायै स्वाहा

ङ वर्ण में अपना निवास बनाने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५६४. ॐ ङना रूपायै स्वाहा

'ङ न' वर्ण के अनुरूप होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५६५. ॐ ङनालयायै स्वाहा

'ङ न' के वर्ण जिसका निवास स्थान है, उस वर्ण स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५६६. ॐ ङज्ञानिन्यै स्वाहा

'ङ ज्ञान' वर्ण में ज्ञान स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५६७. ॐ ङना जाप्यायै स्वाहा

'ङ तथा ना' वर्णों में जप करती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५६८. ॐ ङ वर्णाक्षर-मातृकायै स्वाहा

'ङ वर्ण' की अक्षर मातृका निवासिनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५६९. ॐ चामीकर रुचये स्वाहा

चामीकर-स्वर्ण की रूचि रखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५७०. ॐ चान्द्रै स्वाहा

चन्द्रमा की शक्ति चैन्द्री रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५७१. ॐ चन्द्रकायै स्वाहा

चन्द्रिका का स्वरूप धारण की हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५७२. ॐ चन्द्र रागिण्यै स्वाहा

चन्द्र रागिणी में गायन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५७३. ॐ चलायै स्वाहा

जो कुछ भी चल/गतिमान है, वही है परम संगीत, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५७४. ॐ चेलायै स्वाहा

सुन्दर वस्त्र धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५७५. ॐ चञ्चलायै स्वाहा

चञ्चल स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५७६. ॐ चञ्चरी-कालक प्रभायै स्वाहा

भ्रामरी (भँवरी) जैसी काली प्रभा वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५७७. ॐ चञ्चरीक स्वरा लापायै स्वाहा

भौंरी के स्वर में आलाप प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५७८. ॐ चमत्कार-स्वरूपिण्यै स्वाहा

चमत्कार स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५७९. ॐ चटुलायै स्वाहा

घुमक्कड़ स्वरूपा, चलायमान शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५८०. ॐ चाटुक्यै स्वाहा

मधुर और प्रिय बोलने वाली आदि शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५८१. ॐ चार्व्यै स्वाहा

बुद्धि, प्रज्ञा स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५८२. ॐ चम्पायै स्वाहा

चम्पा पुष्प से प्रसन्न होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५८३. ॐ चम्पक सन्निभायै स्वाहा

चम्पक पुष्प की भाँति अति सुन्दर शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५८४. ॐ चीनांशुक धरायै स्वाहा

चीनांशुक/रेशमी वस्त्र धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५८५. ॐ चित्रायै स्वाहा

भवचक्र चित्रा नाम की शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५८६. ॐ चकाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

च से आरम्भ अक्षर रूपी मातृका शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५८७. ॐ छत्र्यै स्वाहा

छत्री को धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५८८. ॐ छत्रधरा च्छन्नायै स्वाहा

छत्र से आच्छादित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५८९. ॐ च्छिन्न मस्तायै स्वाहा

च्छिन्नमस्ता नाम से विभूषित दश विद्या स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५९०. ॐ च्छुरच्छवये स्वाहा

उत्कीर्ण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५९१. ॐ छायासुत प्रियायै स्वाहा

सूर्य पुत्र शनि की प्रिया भवानी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५९२. ॐ च्छायायै स्वाहा

सूर्य की पत्नी छाया स्वरूपिणी सौर शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५९३. ॐ च्छवर्णा मल-मातृकायै स्वाहा

च्छवर्णात्मिका मातृका स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५९४. ॐ जगदम्बायै स्वाहा

जगदम्बा श्री अष्टादशभुजा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५९५. ॐ जगज्ज्योतिषे स्वाहा

जगत् की ज्योतिः स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५९६. ॐ ज्योती रूपायै स्वाहा

जगत् की ज्योतिर्मयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५९७. ॐ जटाधरायै स्वाहा

जटाधारिणी भैरवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५९८. ॐ जयदायै स्वाहा

जय प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

५९९. ॐ जयकर्त्र्यै स्वाहा

जय की कार्यकारिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामासि।

६००. ॐ जयस्थायै स्वाहा

जय में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६०१. ॐ जयहासिन्यै स्वाहा

जय जयकार की सुहासिनी देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६०२. ॐ जयेश्यै स्वाहा

जय की ईश्वरी जयेश्वरी देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६०३. ॐ जयधात्र्यै स्वाहा

जयघोष नाद को धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६०४. ॐ जगत्कर्त्र्यै स्वाहा

जगत् का निर्माण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६०५. ॐ जगत्प्रियायै स्वाहा

जगत की प्रियेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६०६. ॐ जगत्पूज्यायै स्वाहा

जगत् में सर्वत्र पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६०७. ॐ जगद्वासायै स्वाहा

जगत् से अभिन्न जगत् में ही वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६०८. ॐ जगद्रक्षायै स्वाहा

जगत् की रक्षा करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६०९. ॐ जरातुरायै स्वाहा

ज-जगत् की रक्षा आतुरता से करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६१०. ॐ ज्वरघ्नयै स्वाहा

ज्वर का नाश करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६११. ॐ जम्भ दमन्यै स्वाहा

तरकस से दमन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६१२. ॐ जगत्प्राणायै स्वाहा

जगत् की पञ्च प्राण स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६१३. ॐ जया वहायै स्वाहा

जया रूपी शक्ति का वहन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६१४. ॐ जैत्रायै स्वाहा

विजेता रूपवती शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६१५. ॐ जम्भारि वरदायै स्वाहा

निम्बू पेड़ में वास करने वाली एवं जम्भासुर के शत्रु इन्द्र को वर देने वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा।

६१६. ॐ जीवनायै स्वाहा

जीव को जीवन प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६१७. ॐ जीववाक् प्रदायै स्वाहा

जीव को वाक् शक्ति प्रदान करने वाली जीवन प्रदा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६१८. ॐ जाग्रत्यै स्वाहा

जाग्रत अवस्था में तत्पर शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६१९. ॐ जग न्निद्रायै स्वाहा

जगत की निद्रा देवी, योग माया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६२०. ॐ जगद्योनये स्वाहा

जगत की विश्वयोनि–हिरण्य गर्भा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६२१. ॐ जलन्धरायै स्वाहा

जलन्धर दैत्य का नाश करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६२२. ॐ जालन्धर जयायै स्वाहा

जालन्धर जलोद्भव पर विजय पाने वाली एवं संहार करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६२३. ॐ जायायै स्वाहा

शिव की पत्नी सुप्रिया स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६२४. ॐ जकाराक्षर मातृकायै स्वाहा

'ज' वर्ण से उद्भव अक्षर मातृका रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६२५. ॐ झम्पायै स्वाहा

पवनसुत हनुमान की जननी अंजनी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६२६. ॐ झिञ्झेश्वर्यै स्वाहा

झिञ्झेश्वरी शाकम्बरी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

६२७. ॐ झान्तायै स्वाहा

'झ' वर्ण अन्त में अर्थ प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६२८. ॐ झकारा-क्षर-मातृकायै स्वाहा

झ वर्ण की अक्षर मातृका स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६२९. ॐ ञा-नुरूपायै स्वाहा

ञ के अनुरूप आकार वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६३०. ॐ ञिना वासायै स्वाहा

ञि/संगति में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६३१. ॐ ञकारेश्यै स्वाहा

ञ कार की टेडी-मेडी चाल वाली ईश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६३२. ॐ ञणा युधायै स्वाहा

ञणा/ऐंडी-बैंडी चाल की आयुद्य धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६३३. ॐ ञवर्णबीज-भूषाढ्यायै स्वाहा

ञ वर्ण बीज से भूषित एवं पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६३४. ॐ ञकाराक्षर मातृकायै स्वाहा

ञकार अक्षर मातृका देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६३५. ॐ टङ्कायुधायै स्वाहा

टङ्क/कुलहाडी का आयुध धारण करती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६३६. ॐ टकाराढ्यायै स्वाहा

ट वर्ण के शब्दों से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६३७. ॐ टोटाक्ष्यै स्वाहा

धनुष की प्रत्यञ्चा के समान नेत्रों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६३८. ॐ टसुकुन्तलायै स्वाहा

घुँघराले बालों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६३९. ॐ टङ्का श्रयायै स्वाहा

कुल्हाडी से आश्रय देने वाली, परषुराम की इष्टदेवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६४०. ॐ टली रूपायै स्वाहा

टली रूपा, अपनी वरद भुजाओं में लिपटती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६४१. ॐ टकाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

टकराक्षर वर्ण वाली अक्षर मातृका रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६४२. ॐ ठकुरायै स्वाहा

ठकुर चक्रेश्वर शिला में मूर्तिमान देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६४३. ॐ ठकुरेशान्यै स्वाहा

विष्णु भगवान की ईश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६४४. ॐ ठकार त्रितयेश्वर्यै स्वाहा

ठकार और मण्डल के त्रिवलय में विभासित त्रिभुवन की शुभङ्करी ईश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६४५. ॐ ठःस्वरूपायै स्वाहा

ठः ठः, तुमुल ध्वनि युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६४६. ॐ ठवर्णा ढ्यायै स्वाहा

ठ वर्ण द्वारा पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६४७. ॐ ठकाराक्षर मातृकायै स्वाहा

ठकार अक्षर मातृका देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६४८. ॐ डक्कायै स्वाहा

वडवाग्नि एवं डाकिनी भुवः स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६४९. ॐ डक्केश्वर्यै स्वाहा

वडवाग्नि को नियंत्रण में डालने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६५०. ॐ डिम्बायै स्वाहा

डिम्बा-कोलाहल पूर्ण कामेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६५१. ॐ डवर्णाक्षर-मातृकायै स्वाहा

ड वर्णाक्षरमयी तम्बूरे में स्थित मातृस्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६५२. ॐ ढिण्यै स्वाहा

सर्प से मण्डित, कुण्डलिनी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६५३. ॐ ढेयायै स्वाहा

ढेय शब्द हुँ हुँ हुंकारिणी में वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६५४. ॐ ढिल्लहस्तायै स्वाहा

विस्तृत हाथ वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६५५. ॐ ढकाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

ढकार अक्षरमयी मातृका भुजग सर्पाकार स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६५६. ॐ णेशायै स्वाहा

ण-प्र, परि, अन्तर उपसर्गों के पूर्व होने पर 'ण' में परिवर्तन लाने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६५७. ॐ णान्तायै स्वाहा

'ण' ही जिसका अन्त है, ऐसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६५८. ॐ णवर्णात्मने स्वाहा

'ण' वर्ण ही आत्मस्वरूप है, ण ही शारिका है, ऐसी परापर देवी शारिका के लिए स्वाहा।

६५९. ॐ णवर्णा क्षरभूषणायै स्वाहा

'ण' वर्ण से अक्षरों की आभूषण माला पहनी हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६६०. ॐ तुर्यै स्वाहा

जुलाहे की नाल से निकलने वाली ध्वन्यात्मक शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा। (कश्मीरी भाषा में तून्त्यकोर की संगीतमयी ध्वनि है)

६६१. ॐ तुर्यायै स्वाहा

तुर्या अवस्था में लीन शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६६२. ॐ तुला रूपायै स्वाहा

तुला से साम्य मिलान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६६३. ॐ त्रिपुरायै स्वाहा

त्रिपुरा-भूः भुवः स्वः की इष्टदेवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६६४. ॐ तामस प्रियायै स्वाहा

जीवों की तामस अवस्था में भी प्रिय स्वरूप रखने वाली, उनका उद्धार करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६६५. ॐ तोतुलायै स्वाहा

साम्यावस्था रूपी तुला की परीक्षा करने वाली शक्ति देवी के लिए स्वाहा।

६६६. ॐ तारिण्यै स्वाहा

भवसागर से तार कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६६७. ॐ तारा सप्तविंशति रूपिण्यै स्वाहा

सत्ताईस नक्षत्रों का ही रूप धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६६८. ॐ त्रि सुरायै स्वाहा

तीन प्रकार के आसव (मदिरा)-गौडी, पैठटी, माधवी नाम के मधुपान से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६६९. ॐ त्रिगुणि ध्येयायै स्वाहा

त्रिगुणात्मक प्रकृति में ध्येय रूप से स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७०. ॐ त्र्यम्बकेश्यै स्वाहा

तीन पंकज नेत्रों वाली त्र्यम्बकेश्वरी देवी, शिला रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७१. ॐ त्रिलोक धृते स्वाहा

तीन लोकों भू: भुव: स्व: लोकों को अपनी योग माया से धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७२. ॐ त्रिवर्गेशायै स्वाहा

तीन वर्णों की स्वामिनी ईशिता माता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७३. ॐ त्रय्यै स्वाहा

ऋक् यजु: सामवेद की जननी विमला वेदत्रयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७४. ॐ त्र्यक्षायै स्वाहा

तीन नेत्र सूर्य, सोम, अग्नि को अपने नेत्रों में समाई हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७५. ॐ त्रिपदायै स्वाहा

गङ्गा नदी के त्रिपदा मन्दाकिनी, भागीरथी, अलकनन्दा नामों से विभूषित हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७६. ॐ त्रेतरूपिण्यै स्वाहा

काल विभाजन के अनुसार त्रेतायुग की अवधि धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७७. ॐ त्रिलोकजनन्यै स्वाहा

तीन भुवनों की मातेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७८. ॐ त्रेतायै स्वाहा
त्रेता युग में अवतीर्ण हुई सीता रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६७९. ॐ त्रिपुरेश्वर पूजितायै स्वाहा
त्रिपुरेश्वर भगवान शङ्कर द्वारा पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६८०. ॐ त्रिकोण स्थायै स्वाहा
चक्रेश्वर के मूल त्रिकोण में वास करने् वाली ईश्वरी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६८१. ॐ त्रिकोणेश्यै स्वाहा
चक्रेश्वर की मूल त्रिकोण की ईशिता ऐं, क्लीं, सौः स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६८२. ॐ त्रिकोणान्त निंवासिन्यै स्वाहा
श्रीचक्र के त्रिकोण में मध्य 'प्रिय बिन्दु तत्परा' में निवास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६८३. ॐ त्रिकोण पूजन-तुष्टायै स्वाहा
मूल त्रिकोण की पूजा करने से तुष्ट होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६८४. ॐ त्रिकोणपूजन-प्रियायै स्वाहा
सृष्टिक्रम द्वारा मूल त्रिकोण की पूजा से प्रसन्न होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६८५. ॐ वसुकोणस्थितायै स्वाहा
वसुकोण में शक्ति स्वरूपा अष्टमातृका देवी शारिका के लिए स्वाहा।

६८६. ॐ वश्यायै स्वाहा
संसार को अपनी प्राकृत एवं वैकृत रहस्य से वश्य में रखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६८७. ॐ वसुकोणार्थ वादिन्यै स्वाहा

वसुकोण (अष्टकोण) का वास्तविक अर्थ बताने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६८८. ॐ वसुकोणासने संस्थायै स्वाहा

वसुकोण में आसीन श्री शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६८९. ॐ षट्चक्रक्रम पूजितायै स्वाहा

मूलाधार से आरम्भ होकर षट्चक्रों के क्रम से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९०. ॐ नागपत्रस्थितायै स्वाहा

पोखरीबल-कुण्ड में स्थित अष्टपद्म पत्र शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९१. ॐ शार्यै स्वाहा

'शारी' को कश्मीरी भाषा में हाऽरी कहते हैं, उस नाम से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९२. ॐ त्रिवृत्त पूजनार्थ दायै स्वाहा

त्रिवृत द्वारा श्री चक्रेश्वर में त्रिवलय रूप महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती इति नाम से अर्थज्ञान कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९३. ॐ चतुर्द्वाराग्रगायै स्वाहा

भूपुर (चतुर्द्वार) चतुर्वेद की अग्रणी शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९४. ॐ चक्रबाह्यान्तर निवासिन्यै स्वाहा

श्री चक्रेश्वर के बहिर्याग एवं अन्तर्याग में निवास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९५. ॐ तामस्यै स्वाहा

तमस् से पूजित श्याम-सुंदरी नीलकृष्ण वर्णा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९६. ॐ तुम्बुरु स्तुत्यायै स्वाहा

तुम्बर नाम के गंधर्व द्वारा तुम्बुरू वाद्य यंत्र से स्तुति की हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९७. ॐ तोमरायुध मण्डितायै स्वाहा

तोमर नाम के आयुध से महिमा मण्डित हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९८. ॐ तुलाकोटि स्वनायै स्वाहा

योगिनियों के नूपर की ध्वनि से आनन्दित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

६९९. ॐ ताप्यै स्वाहा

तपस्या से तपन शीलता में रमी हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामासि।

७००. ॐ तपसः-फलदायिन्यै स्वाहा

भक्तों की गहन् तपस्या से प्रसन्न होकर शुभ फलदायिनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७०१. ॐ तर्यै स्वाहा

भक्तों की नौका को तट पर लाने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७०२. ॐ तरणिरूपायै स्वाहा

जलस्रोत वितस्ता नदी का रूप धारण की हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७०३. ॐ तारकासुर घातिन्यै स्वाहा

तारकासुर को कुमार कार्तिकेय द्वारा घात कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७०४. ॐ तरलाक्ष्यै स्वाहा

ममता के कारण तरल नेत्रों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७०५. ॐ तमोहर्त्र्यै स्वाहा

तमस् का हनन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७०६. ॐ तकाराक्षरमातृकायै स्वाहा

त-अमृत वर्ण से गर्भित अक्षर मातृका द्वारा पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७०७. ॐ स्थल्यै स्वाहा

स्थल भूलोक में दृढ़ विश्वास कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७०८. ॐ स्थविर रूपायै स्वाहा

स्थिर स्वभाव से तरल नेत्रों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७०९. ॐ स्थूलायै स्वाहा

स्थूल रूप से साक्षात्कार देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७१०. ॐ स्थालयै स्वाहा

हवन में अन्न होम के समय स्थालीपाक से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७११. ॐ स्थलाब्जिन्यै स्वाहा

स्थल पर जलस्रोत पोखरी बल से उत्पन्न शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७१२. ॐ स्थविरेश्यै स्वाहा

स्थावर प्रकृति शैलपुत्री की एकमात्र स्वामिनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७१३. ॐ स्थूल मुख्यै स्वाहा

स्थूल मुख वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७१४. ॐ थकारा क्षर मातृकायै स्वाहा

'थकार' सर्वमङ्गला अक्षरमयी मातृका रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७१५. ॐ दूतिकायै स्वाहा

विश्व कल्याण के लिए राक्षसों के पास दूत भेजने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७१६. ॐ शिवदूत्यै स्वाहा

शिव को अपना दूत बनाकर शुम्भ-निशुम्भ के पास दूत भेजने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७१७. ॐ दण्डायुध धरायै स्वाहा

दण्ड का आयुध धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७१८. ॐ द्युतये स्वाहा

प्रकाश पुञ्ज से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७१९. ॐ दीपायै स्वाहा

प्रज्वलित दीप से दीपित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७२०. ॐ दीनानु कम्पायै स्वाहा

दीनों पर अनुकम्पा करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७२१. ॐ दम्भोलिधर-वल्लभायै स्वाहा

इन्द्र की वल्लभा (दम्भोलि-इन्द्र का वज्र धारण की हुई) देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७२२. ॐ देशानुचारिण्यै स्वाहा

देशाचार के अनुसार आचरण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७२३. ॐ द्रेक्कायै स्वाहा

अति प्रसन्नचित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७२४. ॐ द्राविडेश्यै स्वाहा

द्राविड देश (दक्षिण भारत) की महिषी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७२५. ॐ दवीयस्यै स्वाहा

दूर स्थान पर निवास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७२६. ॐ दाक्षायण्यै स्वाहा

दिति जो कश्यप की पत्नि एवं देवताओं की माता पार्वती एवं रेवती नक्षत्र में आसीन शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७२७. ॐ द्रुमलतायै स्वाहा

द्रुमलता जैसी दिखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७२८. ॐ देवमात्रे स्वाहा

देव माता अदिति स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७२९. ॐ आदिदेवतायै स्वाहा

आदि देव की जननी श्री पार्वती स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७३०. ॐ दधिजायै स्वाहा

नवनीत से प्राप्त पदार्थों की प्रेयसी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७३१. ॐ दुर्लभादेव्यै स्वाहा

कठिन साधना के बिना देवी शारिका का साक्षात्कार प्राप्त होना दुर्लभ है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७३२. ॐ देवतायै स्वाहा

दिव्य स्वरूप वाली प्रकाश पुञ्जमयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७३३. ॐ परमाक्षरायै स्वाहा

परमाक्षर ॐ में विराजमान शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७३४. ॐ दामोदर सुपूज्यायै स्वाहा

दामोदर / भगवान कृष्ण से सुपूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७३५. ॐ दामोदर वरप्रदायै स्वाहा

श्रीकृष्ण को वर प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७३६. ॐ दण्ड हस्तायै स्वाहा

अपने वरद हस्त में दण्ड धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७३७. ॐ दण्डि पूज्यायै स्वाहा

दण्डिन् स्वामी से पूजित धर्मदण्ड धारण की हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७३८. ॐ दकारा क्षर मातृकायै स्वाहा

'द' कार अक्षर मातृकामयी दानप्रिया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७३९. ॐ धर्म्यायै स्वाहा

धर्म्म से विभूषित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७४०. ॐ धर्ममूर्धन्यायै स्वाहा

धर्म से सर्वश्रेष्ठ मूर्धन्य स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७४१. ॐ धनदायै स्वाहा

धन को देने वाली अर्थ का प्रसार करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७४२. ॐ धनवर्धिन्यै स्वाहा

धन का वर्धन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७४३. ॐ धृतये स्वाहा

धृति/धारण करने वाली आत्म सयंम प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७४४. ॐ धूर्तायै स्वाहा

धूर्त/धतूरे के पौधे में विराजमान एवं कण्टकों की भक्षण करने वाली शारिका एवं धूर्त विद्या को नियंत्रण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७४५. ॐ धन्य वध्वै स्वाहा

धन्य / धन प्रदान करने वाली, सौभाग्य स्वरूपा वधु रूपी, श्री रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७४६. ॐ धकाराक्षर मातृकायै स्वाहा

धकार ब्राह्मी अक्षर मातृका स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७४७. ॐ नलिन्यै स्वाहा

कमल में स्थित लक्ष्मी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७४८. ॐ नलिन हस्तायै स्वाहा

अपने हाथ में कमल को सुशोभित करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७४९. ॐ नाराचायुध धरिण्यै स्वाहा

नाराच-आयुध को धारण करने वाली भैरवी (कश्मीरी भाषा में इस हथियार को नारुच् कहते हैं), ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७५०. ॐ नीपोपवन-मध्यस्थायै स्वाहा

पर्वतीय तलहटी के मध्य (प्रद्युम्न) पीठ में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७५१. ॐ नगरेश्यै स्वाहा

प्रद्युम्न पीठ श्रीनगर की ईशानी इष्टदेवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७५२. ॐ नरोत्तमायै स्वाहा

नरों में सर्वश्रेष्ठ उत्तम शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७५३. ॐ नरेश्वर्यै स्वाहा

नरेश्वरी देवी जिसकी भव्य स्थली बानु मोहल्ला और फ़तेह कदल के बीच) में स्थित है, हब्बा कदल से परिक्रमा आरम्भ करके, इस पीठ का शारिका के रूप में नमन करते हैं। लौकिक भाषा में इस पीठ का नाम नृपस्थान (नर परिस्तान) है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७५४. ॐ नृपाराध्यायै स्वाहा

नृपों से आराधित महेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७५५. ॐ नृप पूज्यायै स्वाहा

नृपों से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७५६. ॐ नृपार्थ दायै स्वाहा

नृपों को धन एवं अर्थ प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७५७. ॐ नृप सेव्यायै स्वाहा

नृपों से सेवित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७५८. ॐ नृप वन्द्यायै स्वाहा

नृपों द्वारा वंदना की हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७५९. ॐ नरनारायण प्रस्वै स्वाहा

नर तथा नारायण ऋषि को जन्म देने वाली शारिका, यह पर्वतीय स्थान बद्रिकाश्रम हिमालय में है, ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७६०. ॐ नर्तक्य स्वाहा

नर्तृकी का रूप धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७६१. ॐ नीरजाक्ष्यै स्वाहा

कमल जैसी नेत्रों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७६२. ॐ नवर्णाक्षर भूषणायै स्वाहा

नवार्ण अक्षर (ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे) से भूषित चण्डी रूपी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७६३. ॐ पद्मेश्वर्यै स्वाहा

लक्ष्मी स्वरूपा शारिका एवं पद्म से उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा की ईश्वरी देवी अष्टादशभुजा शारिका के लिए स्वाहा।

७६४. ॐ पद्ममुख्यै स्वाहा

पद्म का मुख धारण करने वाली त्रिपुरेशी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७६५. ॐ पत्रि यानायै स्वाहा

पंखों से युक्त वाहन धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७६६. ॐ परापरायै स्वाहा

परा एवं अपरा (आध्यात्मिक तथा भौतिक) जगत की अधिष्ठात्री देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७६७. ॐ पारावत सुतायै स्वाहा

पर्वतराज हिमालय की पुत्रीस्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७६८. ॐ पेपायै स्वाहा

भात के माण्ड को पीने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७६९. ॐ परवर्ग विमर्दिन्यै स्वाहा

शत्रुपक्ष को कुचल देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७७०. ॐ त्रिपुरारि वध्वै स्वाहा

भगवान शङ्कर की प्रेयसि वधु स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७७१. ॐ पम्पायै स्वाहा

दण्डकारण्य के सरोवर पम्पा में वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७७२. ॐ पत्र्यै स्वाहा

पंखों से सुशोभित शारिका तथा सुरम्य पर्वतीय स्थलों पर सुगंधित 'पत्री' से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा। कश्मीरी भाषा में पत्री को पत़र कहते हैं।

७७३. ॐ पत्रीशवाहनायै स्वाहा

पत्रीश/गरुड को ही वाहन धारण करने वाली नारायणी शक्ति स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७७४. ॐ पीवरांसायै स्वाहा

तरुणी मांसल गोमाता स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७७५. ॐ पतिप्राणायै स्वाहा

शङ्कर की प्राणवल्लभा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७७६. ॐ पीतलाक्ष्यै स्वाहा

पीतल रंग की नेत्रों वाली शारिका (कश्मीरी भाषा में काचुर कहते हैं), ऐसी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७७७. ॐ प्रतिप्रियायै स्वाहा

पति शंकर की प्रेयसी वाम भागा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७७८. ॐ पाठायै स्वाहा

शारिका सहस्रनाम के पाठ से प्रसन्न होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७७९. ॐ पीठ स्थितायै स्वाहा

प्रद्युम्न पीठ पर स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७८०. ॐ पीत वस्त्रा लङ्कार-भूषणायै स्वाहा

पीले वस्त्रों से अलंकृत एवं दिव्य भूषणों से आभूषित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७८१. ॐ पुरूरव स्तुतायै स्वाहा

देव लोक से पूजित एवं पुष्प पराग से सुगंधित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७८२. ॐ पात्र्यै स्वाहा

सर्वत्र क्षेमङ्करी देवी, जो पात्रों (साधकों) का कल्याण करने वाली है, उस शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७८३. ॐ पुत्रिकायै स्वाहा

पुत्री जो पिता के घर में वास करती है, अैर उसे पुत्रवत माना जाता है, ऐसी बाल स्वरूपा शारिका स्वरूपिणी देवी के लिए स्वाहा।

७८४. ॐ पुत्रदायै स्वाहा

पुत्र का वरदान देनी वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७८५. ॐ प्रजायै स्वाहा

प्रजा, प्रजनन की देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७८६. ॐ पुष्पोत्तमायै स्वाहा

पुष्पों में उत्तम कमल एवं पाटल वर्णवाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७८७. ॐ पुष्पवत्यै स्वाहा

पुष्पों को अपने आप में समायी हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७८८. ॐ पुष्पमाला-विभूषितायै स्वाहा

पुष्पमाला से विभूषित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७८९. ॐ पुष्पमाला-धिशोभाढ्यायै स्वाहा

पुष्पमाला को समर्पण करने से समृद्ध बनाने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७९०. ॐ पकाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

'पकार' पवित्र अक्षर से वर्णित मातृकामयी देवी शारिका के लिए स्वाहा।

७९१. ॐ फलदायै स्वाहा

शुभ फल एवं मनोवाञ्छित फल को देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७९२. ॐ स्फीत वस्त्रायै स्वाहा

विस्तृत वस्त्रों से सुशोभित देवी के लिए स्वाहा।

७९३. ॐ फेरुराव-विभूषणायै स्वाहा

गीदड की चीत्कार से दहाडती हुई एवं उन प्राणियों से आवृत्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७९४. ॐ फल्गुन्यै स्वाहा

वसन्तोत्सव स्वरूपा एवं फल्गु नदी में श्राद्ध/तर्पण/स्नान करने से पुण्य प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७९५. ॐ फल्गु तीर्थ स्थायै स्वाहा

फल्गु तीर्थ में वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७९६. ॐ फवर्गकृत-मण्डनायै स्वाहा

'फ' विस्तार वर्ग से मण्डित महिमा वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७९७. ॐ बलदायै स्वाहा

बल की स्वामिनी बलदायिनी देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७९८. ॐ बालखिल्यायै स्वाहा

अखिल विश्व में विचरण करने वाली बाला त्रिपुर सुन्दरी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

७९९. ॐ बालायै स्वाहा

'बालहामा' क्षेत्र की त्रिपुरेशी बाला देवी स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामासि।

८००. ॐ बलरिपुप्रियायै स्वाहा

बलरिपु-निर्बल व्यक्ति की आशापुरा प्रिया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८०१. ॐ बाल्यावस्थायै स्वाहा

बालिका भाव में अवस्थित, ब्रह्मा से उद्घोषित नवरात्रदेवी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८०२. ॐ बन्धरेश्यै स्वाहा

मण्डलाकार की स्वामिनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८०३. ॐ बकाराकृति-मातृकायै स्वाहा

'ब' कार जल एवं तरल आकृति वाली मातृका स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८०४. ॐ भद्रिकायै स्वाहा

द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथियों में भद्रिका रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८०५. ॐ भीमपत्न्यै स्वाहा

भीम की पत्नी हिडिम्बना देवी स्वरूपा महाबलशाली घटोत्कच को जन्म देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८०६. ॐ भीमायै स्वाहा

त्रास देने वाली भीमकाया-मयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८०७. ॐ भर्ग शिखायै स्वाहा

मार्तण्ड तीर्थ के पास में भर्ग शिखा शिला रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८०८. ॐ अभयायै स्वाहा

अभय प्रदा वरदायिनी सौम्य शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८०९. ॐ भयघ्न्यै स्वाहा

भय का नाश करने वाली, अभय देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८१०. ॐ भीम नादायै स्वाहा

भयानक ध्वनि-हुँकार निकालने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८११. ॐ भयानक-मुखेक्षणायै स्वाहा

भयानक मुख से असुरों का ईक्षण (निरीक्षण) करने वाली कालिका स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८१२. ॐ भिल्लीश्वर्यै स्वाहा

लोध्रवृक्ष में वास करने वाली तथा घुंघची के पौधे का आभूषण धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८१३. ॐ भीति हरायै स्वाहा

भय का अपहरण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८१४. ॐ भद्रदायै स्वाहा

कल्याण कारिणी भद्रदा शक्ति स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८१५. ॐ भाग्य वर्धिन्यै स्वाहा

भक्तों के भाग्य में सौभाग्य लाने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८१६. ॐ भग मालायै स्वाहा

प्रकाश की माला से आवृत्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८१७. ॐ भगा वासायै स्वाहा

नित्य प्रकाश में आवास करने वाली और प्रकाश ही शिव है, ऐसी ज्ञान दायिनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८१८. ॐ भवान्यै स्वाहा

भव–भुवनेश्वर शिव की शक्ति स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८१९. ॐ भव तारिण्यै स्वाहा

भव सागर से पार कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२०. ॐ भग योनये स्वाहा

प्रकाश की आधार शक्ति, शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२१. ॐ भगा कारायै स्वाहा

विस्तीर्ण आकारों में व्याप्त प्रकाश पुञ्ज स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२२. ॐ भग स्थायै स्वाहा

प्रकाश ही जिसका आश्रय है, उसी तेजस् स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२३. ॐ भग रूपिण्यै स्वाहा

प्रकाश सहित अपना रूप धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२४. ॐ भगलिङ्गा–मृतप्रीतायै स्वाहा

प्रकाश और विमर्श के अमृत का आस्वादन करने वाली प्रीतियुक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२५. ॐ भकाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

'भ' कार मातृका अक्षर रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२६. ॐ मान्यायै स्वाहा

महेश्वर से मान्या शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२७. ॐ मानप्रदायै स्वाहा

मान को प्रदान देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२८. ॐ मीनायै स्वाहा

मत्स्य भगवान की शक्ति स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८२९. ॐ मीनकेतन-लालसायै स्वाहा

कामदेव की लालसा से प्रेरित भक्तों को नियंत्रित करती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८३०. ॐ मदोद्धतायै स्वाहा

मद से उद्यत हुई माता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८३१. ॐ मनोतीतायै स्वाहा

मनोतीत अवस्था से केंद्रित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८३२. ॐ मेनायै स्वाहा

जगन्माता पार्वती की मौलिक जननी मेना स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८३३. ॐ मैनाक वत्सलायै स्वाहा

हिमालय और मेना के पुत्र मैनाक पर्वत की वत्सला शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८३४. ॐ मांसाहारायै स्वाहा

मांसाहार प्रिया श्री शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८३५. ॐ मांसप्रीतायै स्वाहा

मांस से प्रीति रखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८३६. ॐ मत्स्यघातायै स्वाहा

भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार को धारण करने वाली शक्ति स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८३७. ॐ महत्तरायै स्वाहा

राजभवन की महाप्रतिहार (उच्चाधिकारी) की शक्ति स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८३८. ॐ मेरु-शृङ्गाग्र-तुङ्गस्थायै स्वाहा

मेरा शृङ्ग के भी अग्रिम तुङ्ग/शिखर पर स्थापित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८३९. ॐ मोदकाहार पूजितायै स्वाहा

मोदकों के आहार से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४०. ॐ मातङ्गिन्यै स्वाहा

मतङ्ग ऋषि की पुत्री स्वरूपा तथा उसी से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४१. ॐ मदोन्मत्तायै स्वाहा

मद से उन्मत शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४२. ॐ मधुमत्तायै स्वाहा

मादकता से भरी हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४३. ॐ मठेश्वर्यै स्वाहा

मठ की ईश्वरी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४४. ॐ मज्जायै स्वाहा

मज्जा (वसा) में स्थित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४५. ॐ मुग्धाननायै स्वाहा

जिसके मुख पर मुग्ध होते हैं, ऐसी सुशोभित मुखी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४६. ॐ मुग्धायै स्वाहा

मुग्ध होने की भावनामयी माता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४७. ॐ मकाराक्षर-भूषणायै स्वाहा

'म' ममत्व की देवी तथा मकार अक्षर से आभूषित श्री शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४८. ॐ यशस्विन्यै स्वाहा

यशस्विनी एवं यश प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८४९. ॐ यतीशान्यै स्वाहा

यतियों के इन्द्रियों को वश में रखने वालों की ईश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८५०. ॐ यत्न कर्त्र्यै स्वाहा

किसी भी कार्य अनुष्ठान के लिए यत्न कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८५१. ॐ यजुःप्रियायै स्वाहा

यजुर्वेद की प्रिया श्री शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८५२. ॐ यज्ञ दात्र्यै स्वाहा

यज्ञ का फल प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८५३. ॐ यज्ञ फलायै स्वाहा

यज्ञ की फलस्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८५४. ॐ यजु र्वेदफलायै स्वाहा

यजुर्वेद परायण से प्राप्त फल स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८५५. ॐ यतये स्वाहा

अपनी इन्द्रियों को वश में करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८५६. ॐ यशोदायै स्वाहा

यश को प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८५७. ॐ यति सेव्यायै स्वाहा

यतियों से पूजित एवं सेवित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८५८. ॐ यात्रायै स्वाहा

यात्रा में साथ-साथ रहने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८५९. ॐ यात्रिक वत्सलायै स्वाहा

यात्रियों का मार्ग दर्शन कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८६०. ॐ योगीश्वर्यै स्वाहा

योग की ईश्वरी एवं भगवान शिव की प्राण वल्लभा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८६१. ॐ योगगम्यायै स्वाहा

योग के मार्ग पर सदा चलने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८६२. ॐ योगीन्द्रजन-वत्सलायै स्वाहा

योगीन्द्र भगवान शिव की वत्सला राधिका स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८६३. ॐ यदुपुत्र्यै स्वाहा

यदुवंश की पुत्री स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८६४. ॐ यमघ्न्यै स्वाहा

यम के भय का अन्त करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८६५. ॐ यकाराक्षर-मातृकायै स्वाहा

यकार अक्षर में उद्बोधित मातृका स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८६६. ॐ रत्नेश्वर्यै स्वाहा

रत्नों की खान भूमाता स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८६७. ॐ रमानाथ सेव्यायै स्वाहा

रमा नाथ नारायण/विष्णु से सेवित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८६८. ॐ रथ्यायै स्वाहा

राजमार्ग पर उल्लसित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८६९. ॐ रजस्वलायै स्वाहा

प्रजनन के लिए रजस्वला स्वरूपा प्राकृतिक नियमन का पालन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८७०. ॐ राज्यदायै स्वाहा

राज्य प्रदान करने वाली श्री राज्ञीश्वरी (तुलमुल की क्षीर भवानी) शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८७१. ॐ राजराजेश्यै स्वाहा

राजराजेश्वरी माता श्री ललिता तथा ऐं क्लीं सौः स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८७२. ॐ रोगहर्त्र्यै स्वाहा

रोग का हरण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८७३. ॐ रजोवत्यै स्वाहा

रजोवती, प्रजनन स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८७४. ॐ रत्नाकर सुतायै स्वाहा

समुद्रराज की पुत्री तडिताभा स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८७५. ॐ रम्यायै स्वाहा

अति रमणीय भोगियों के हृदय में वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८७६. ॐ रात्र्यै स्वाहा

रात्रि सूक्त की योगमाया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८७७. ॐ रात्रीपति प्रभायै स्वाहा

चन्द्रमा की प्रभा से युक्त आभा वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८७८. ॐ रक्षोघ्न्यै स्वाहा

राक्षसों का नाश करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८७९. ॐ राक्षसेशान्यै स्वाहा

राक्षसों पर विजय प्राप्त करने वाली महामाया स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८८०. ॐ रक्षोनाथ-समर्चितायै स्वाहा

महिषासुर का हनन करने के लिए समस्त देवताओं से समर्चित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८८१. ॐ रतिप्रियायै स्वाहा

रतिप्रिया कुसुमाकर वसन्त की क्रीडामयी निवासनी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८८२. ॐ रतिसुखायै स्वाहा

रति सुख में भावविभोर होने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८८३. ॐ रकार कृत शेखरायै स्वाहा

'रकार' अग्नि से आकृत शेखर (ताज) वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८८४. ॐ लम्बोदर्यै स्वाहा

लम्बोदर गणेश की शक्ति स्वरूपा माता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८८५. ॐ ललज्जिह्वायै स्वाहा

लपलपाने वाली विनोदप्रिया जिह्वा वाली, शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८८६. ॐ लास्यतत्पर मानसायै स्वाहा

लास्य रस से मन को प्रसन्न करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८८७. ॐ लृतातन्तु-वितानास्यायै स्वाहा

लृ आकार वाली रज्जू के रूप में तथा खुले मुख में शोभित देवी, काश्मीरी भाषा में रूई पींजने की तंत्रिका 'तून्त्यकोर' वाली देवी शारिका के लिए स्वाहा। तून्त्यकोर कश्मीरी शब्द है।

८८८. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा

लक्ष्मी स्वरूपा, चक्रेश्वर के निकट में आसीन शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८८९. ॐ लज्जा लयायै स्वाहा

लज्जा बीज जननी ह्रीं स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९०. ॐ अलिन्यै स्वाहा

भ्रामरी रूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९१. ॐ लोकेश्वर्यै स्वाहा

समस्त लोकों की अधीश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९२. ॐ लोकदात्र्यै स्वाहा

लोकों को सृजन स्वरूप का दान देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९३. ॐ लाट स्थायै स्वाहा

जीर्ण शीर्ण वस्त्र पहने हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९४. ॐ लक्ष्मणा कृतये स्वाहा

शुभ लक्षणों से युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९५. ॐ लम्बायै स्वाहा

नीचे पाताल की ओर लटकती हुई राक्षसों को दिग्भ्रमित करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९६. ॐ लम्बकुचोल्लासायै स्वाहा

लटकती हुई कुचा के उल्लास में दिखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९७. ॐ लकाराक्षर वर्धिन्यै स्वाहा

'ल'कार लालिन्य तथा लालित्य अक्षर का वर्धन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९८. ॐ लिङ्गप्रीतायै स्वाहा

पुलिङ्ग एवं स्त्रीलिंङ्ग की आधारशिला शारिका देवी के लिए स्वाहा।

८९९. ॐ कलिङ्गेश्यै स्वाहा

कलिङ्ग प्रदेश अधीश्वरी की महिषी रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामासि।

९००. ॐ लिङ्गस्थायै स्वाहा

शिवलिङ्ग में सदा विराजमान मातृ स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९०१. ॐ लिङ्गलिङ्गिन्यै स्वाहा

लिङ्ग/पुलिङ्ग, स्त्री रूप लिङ्गनी के सायुज्य चक्रेश्वर में प्रकट स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९०२. ॐ लक्ष्मीरूपायै स्वाहा

लक्ष्मी रूपा चक्रेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९०३. ॐ रसोल्लासायै स्वाहा

रस के उल्लास से उल्लसित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९०४. ॐ रामायै स्वाहा

गृहस्वामिनी लक्ष्मी स्वरूपा अन्नपूर्णेश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९०५. ॐ रेवायै स्वाहा

नर्मदा नदी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९०६. ॐ रजोवत्यै स्वाहा

रजोवती, प्रजनन रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९०७. ॐ लयदात्र्यै स्वाहा

शिव के साथ लय कराने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९०८. ॐ लक्ष्मणायै स्वाहा

लक्षणा युक्त तपस्विनी उर्मिला स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९०९. ॐ लोलायै स्वाहा

चंचल नेत्रों वाली, कटाक्ष करती हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११०. ॐ लकारा क्षर मातृकायै स्वाहा

'ल'कार अक्षर में मातृका स्वरूपा दिक्काल शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१११. ॐ वाराह्यै स्वाहा

भगवान विष्णु के तृतीय अवतार वराह की शक्ति वाराही स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११२. ॐ वरदात्र्यै स्वाहा

वर देने वाली अति सुमङ्गला शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११३. ॐ वीरस्वै स्वाहा

वीर पुत्रों को जन्म देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११४. ॐ वरदायिन्यै स्वाहा

वर देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११५. ॐ वीरेश्वर्यै स्वाहा

शिवगण वीरभद्र की ईश्वरी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११६. ॐ वीरजन्यायै स्वाहा

वीरों को जन्म देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११७. ॐ वरचर्वण चर्चितायै स्वाहा

वरप्रद आचम्य से चर्चित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११८. ॐ वरायुधायै स्वाहा

वर देने वाली शक्ति का आयुध धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

११९. ॐ वराकायै स्वाहा

हीरा धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२०. ॐ वामनायै स्वाहा

वामन अवतार की शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२१. ॐ वामना कृतये स्वाहा

वामन आकृति वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२२. ॐ वधूतायै स्वाहा

नव युवती रूपवती स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२३. ॐ वधका वध्यायै स्वाहा

नृशंस का वध करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२४. ॐ वध्यभुवे स्वाहा

मारे जाने के योग्य को मारने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२५. ॐ वणिज प्रियायै स्वाहा

वणिज/तुला राशि में वास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२६. ॐ वसन्त लक्ष्म्यै स्वाहा

वसन्त समय की वासन्ती नवदुर्गा भव्य तथा नव्य रूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२७. ॐ वटुक्यै स्वाहा

वटुकी छोटी बालिका का रूप धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२८. ॐ वटुकायै स्वाहा

वटुका ब्रह्मचारिणी का रूप धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१२९. ॐ वटुकेश्वर्यै स्वाहा

वटुक की ईश्वरी का रूप धारण करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३०. ॐ वटु प्रियायै स्वाहा

वटु की प्रिया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३१. ॐ वामनेत्रायै स्वाहा

अति सुन्दर नयनों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३२. ॐ वामा चारैक-लालसायै स्वाहा

वामाचार में एक प्रकार की लालसा रखने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३३. ॐ वात्यायै स्वाहा

तूफान/वात (वायु) तत्त्व की देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१३४. ॐ वाम्यायै स्वाहा

गौरी, लक्ष्मी, सरस्वती स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३५. ॐ वरारोहायै स्वाहा

पर्वत पुत्री पार्वती त्रिफला से सेवित एवं सुगंधित रूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३६. ॐ वेदमात्रे स्वाहा

वेदजननी गायत्री माता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३७. ॐ वसुन्धरायै स्वाहा

पृथ्वी माता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३८. ॐ वयो यानायै स्वाहा

स्वास्थ्य की शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१३९. ॐ वयस्यायै स्वाहा

प्रौढ़ आयु की देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४०. ॐ वकाराक्षर मातृकायै स्वाहा

'व'कार अक्षर र्वत्तन मातृका रूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४१. ॐ शम्भुप्रियायै स्वाहा

शम्भुप्रिया शाम्भवी शक्तिस्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४२. ॐ शरच्चर्चायै स्वाहा

शरत् कालीन नवदुर्गा चण्डी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४३. ॐ शाद्वलायै स्वाहा

हरियाली युक्त भूमि से आकर्षित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४४. ॐ शशि वत्सलायै स्वाहा

चन्द्रमा की वत्सला रोहिणी रूपी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४५. ॐ शीतद्युतये स्वाहा

शीतल किरणों से युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४६. ॐ शीत रसायै स्वाहा

शीतल रस से युक्त शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४७. ॐ शोणोष्ठ्यै स्वाहा

सुरा से उत्तेजित होंठों वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४८. ॐ शीकर प्रभायै स्वाहा

वायु प्रेरित छींटों से युक्त प्रभावती शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१४९. ॐ श्रीवत्स लाञ्छनायै स्वाहा

श्रीवत्स चिह्न से द्रवित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५०. ॐ शर्वायै स्वाहा

शिव, शर्व की वल्लभा शर्वा देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५१. ॐ शर्ववामाङ्गवासिन्यै स्वाहा

सर्व-शिव के वाम भाग में निवास करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५२. ॐ शशाङ्कामल-शोभाढ्यायै स्वाहा

चन्द्रमा की निर्मल शोभा से सुशोभित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५३. ॐ शार्दुल तनवे स्वाहा

व्याघ्र तनु धारणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५४. ॐ अद्रिजायै स्वाहा

पर्वत पुत्री (आद्रि) हिमालयसुता शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५५. ॐ शेषहर्त्र्यै स्वाहा

शेषनाग को अधीनस्थ करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५६. ॐ शमी मूलायै स्वाहा

शमी वृक्ष की मूलाधारिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५७. ॐ शकार कृत-शेखरायै स्वाहा

'श'कार वर्ण शान्तिः शब्द से बने हुए शिखर वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१५८. ॐ षोडशाक्षर मन्त्रेश्यै स्वाहा

षोडशाक्षर मंत्रमयी ईशानी, कादि-विद्या एवं हादि विद्या एवं सादि देवी शारिका के लिए स्वाहा।

१५९. ॐ षाढायै स्वाहा

छः रागों से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६०. ॐ षोडायै स्वाहा

छः प्रकार के न्यासों से अभिमंत्रित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६१. ॐ षडाननायै स्वाहा

छः मुख वाले कुमार कार्तिकेय की जननी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६२. ॐ षट्कूटायै स्वाहा

छः प्रकार के कूटों से युक्त-आदिकूट, मध्यकूट, शक्तिकूट तथा इनकी शक्तियों से आमंत्रित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६३. ॐ षड्रसा स्वादायै स्वाहा

छः प्रकार के रसों का आस्वादन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६४. ॐ षडशीति-मुखाम्बुजायै स्वाहा

सुकोमल छः पद्म पत्रों से सुशोभित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६५. ॐ षडास्य जनन्यै स्वाहा

छः मुख वाले कुमार की जननी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६६. ॐ षण्ठायै स्वाहा

कृत्तिका देवी षष्ठी देवी की रूपवती सौंदर्य शिला शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६७. ॐ षवर्णा क्षर मातृकायै स्वाहा

'ष' वर्णाक्षर का मातृकामयी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६८. ॐ सरस्वती प्रस्वै स्वाहा

सरस्वती बीजमंत्र 'सौः' से सुशोभित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१६९. ॐ सर्वायै स्वाहा

सर्वेश्वरी, सर्वस्वरूपा सर्वमङ्गला शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७०. ॐ सर्वगार्यै स्वाहा

सर्वत्र सर्वगमनीया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७१. ॐ सर्वतोमुखायै स्वाहा

अपने मुख को सर्वत्र हिलाने वाली शारिका देवी के लिंए स्वाहा।

१७२. ॐ समायै स्वाहा

समास में व्याप्त समस्त पद की एक सूत्रात्मक शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७३. ॐ सीमायै स्वाहा

कन्या-देवगुण संस्कार के समय, नववधु की अलकों की सीमा में प्रदर्शित हुई शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७४. ॐ सतीमात्रे स्वाहा

जग-माता सती शक्ति स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७५. ॐ सागरा भयदायिन्यै स्वाहा

सागर को अभय देने वाली राम के रामत्व की शक्ति, शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७६. ॐ समस्त पाप शमन्यै स्वाहा

समस्त त्रिविध तापों आधि दैविक, आधि भौतिक, आध्यात्मिक का शमन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७७. ॐ सालभञ्ज्यै स्वाहा

सीमाओं का भञ्जन करने वाली अर्थात् ध्यानावस्था को सीमा रहित बनाने में सक्षम शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७८. ॐ सुदक्षिणायै स्वाहा

अच्छी प्रकार से शास्त्रयुक्त दक्षिणा के रूप में शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१७९. ॐ सुषुप्त्यै स्वाहा

सुषुप्ति अवस्था में योगिनी महा माया मधुकैटभ विनशिनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८०. ॐ सरसायै स्वाहा

रस सहित तरल स्वभाव वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८१. ॐ साध्व्यै स्वाहा

साध्वी स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८२. ॐ सामगायै स्वाहा

साम गायन से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८३. ॐ साम वेदजायै स्वाहा

सामवेद की आद्या शक्ति शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८४. ॐ सत्यप्रियायै स्वाहा

सत्यस्वरूप नारायण की नारायणी शक्ति, शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८५. ॐ सोममुख्यै स्वाहा

चन्द्र मुख से कमनीया देवी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८६. ॐ सूत्रस्थायै स्वाहा

ब्रह्मसूत्र (यज्ञोपवीत) संस्कार में स्थित गायत्री स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८७. ॐ सूत वल्लभायै स्वाहा

शौनक आदि सूत की वल्लभा स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१८८. ॐ सनकेश्यै स्वाहा

सनकादि ऋषियों की इष्टदेवी शारिका के लिए स्वाहा।

१८९. ॐ सुनन्दायै स्वाहा

अति आनन्द देने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९०. ॐ सवर्णायै स्वाहा

व्याकरण के सवर्ण अक्षरों में संधि स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९१. ॐ स्वास्थ्य दायिन्यै स्वाहा

स्वास्थ्य दायिनी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९२. ॐ हाहा हूहू स्वरूपायै स्वाहा

गंधर्वों द्वारा हा-हा, हू-हू संगीत ध्वनियों से मुखरित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९३. ॐ हल दात्र्यै स्वाहा

बलराम को हल प्रदान करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९४. ॐ हलि प्रियायै स्वाहा

बलराम की प्रिया इष्ट देवी महामाया शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९५. ॐ हंक्षः स्वरूपा नुगतायै स्वाहा

बीज वर्ण 'हं' तथा क्षः स्वरूप का अनुगमन करने वाली शारिका देवी के लिए स्वाहा।

१९६. ॐ सर्व मातृक पूजितायै स्वाहा

सभी समातृकाओं एवं अष्ट मातृकाओं एवं षोडश मातृकाओं से पूजित शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९९७. ॐ हरिदीश्वर पूज्यात्मने स्वाहा

भगवान विष्णु से पूजित आत्म स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९९८. ॐ हविष्या-हुति वल्लभायै स्वाहा

ओ३म ओं/ॐ द्वारा आहुति ग्रहण करने वाली वल्लभा स्वरूपिणी शारिका देवी के लिए स्वाहा।

९९९. ॐ ऐं सौः ह्रीं महा विद्यायै स्वाहा

ऐं/महाकाली, सौः/महालक्ष्मी, ह्रीं/महासरस्वती दश महाविद्या स्वरूपा शारिका देवी के लिए स्वाहा।

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामासि।

१०००. ॐ आँ शाँ ह्राँ ह्रूँ स्वरूपिण्यै स्वाहा

आं शां ह्रां हूँ स्वरूपवाली शारिका के लिए स्वाहा निवेदित है, ऐसी **श्रीमयी सप्तबीजाक्षरी देवी शारिका के लिए स्वाहा।**

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥१ ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ वह बहिर्जगत् भी पूर्ण है, यह आन्तिरक जगत् भी पूर्ण है। पूर्ण से ही पूर्ण की उत्पत्ति होती है। पूर्ण को पूर्ण निकालने पर भी, केवल पूर्ण ही रहता है। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्ति, यहाँ पूर्ण का अर्थ, परिपूर्णता, सम्पूर्णता है। पूर्ण अखण्ड, समग्र, निखिल, समूचा है। पूर्ण सम्पूर्ण विश्व चेतना है। पूर्ण में ही अभेद पाया जाता है।

तीन बार शान्तिः उच्चारण करने का तात्पर्य आधि भौतिक, आदि दैविक एवं आध्यात्मिक शक्ति के लिए प्रार्थना है, यही परिपूर्णता है।

ॐ वसोः वसोधारा पवित्रमसि शतधारं, वसो पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातुवसोः, पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा॥

वसोधारा का शाब्दिक अर्थ पर्याप्त मात्र में रत्न राशि की धारा। होम इत्यादि अनुष्ठान करने से मनोवाञ्छित फल प्राप्त होते हैं। अतः अग्नि देव के तृप्त करने के लिए घृत धारा, यज्ञ कुण्ड की अग्नि शिखा पर डाला जाता है।

यह वसोधारा पवित्र रूप से शतधारा, सहस्रधारा है। भगवान सूर्य, दिव्य प्रकाश पुञ्जकी आभा वाले वसु-ऐश्वर्य, धन, मान, मर्यादा आदि की वृद्धि करें!

शतधारा की पवित्रता से कामधेनु रूपा समस्त वसु रूपेण देवताओं के आशीष से मनोकामना सफलीभूत हो जाए।

ॐ तनूपा अग्नेऽसि, तन्वं मे पाहि।

ॐ आयुर्दा अग्नेऽसि, आयुर्मे देहि॥

ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि, वर्चामे देहि।

ॐ अग्ने यन्मे तन्वाऽ, ऊनन्तन्मऽ आपृण॥

ॐ मेधां मे देवी, सरस्वती आदधातु।

ॐ मेधां में अशिवनौ, देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजै॥

हे अग्नि देव। तुम स्वयं शरीर में तेजस स्वरूप हो, मेरे शरीर के तेज की रक्षा करो!

हे अग्निदेव। तुम आयु वर्धन करने वाले हो, मुझे भी (शतायु) प्रदान करो।

हे अग्निदेव! तुम स्वयं वाक् स्वरूप हो, मुझे भी शरीर में जो भी न्यूनता है, उसकी पूर्ति अपने तेजस से पोषण करके वाक् प्रदान करो। हे अग्नि देव! जो कुछ भी मेरे शरीर में न्यूनता है, उसकी पूर्ति अपने तेजस से पोषण करके, हे सूर्य देव मुझे मेधाविन् बनाओ। हे सरस्वती देवी! मुझे अपना वरदान दो। हे अश्विनी देवो! मुझे कमल की भांति विकसित कर पूर्ण मेधावी बनाओ। अथ त्र्यायुषं (त्रि + आयुषम्)

ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेः, इति ललाटे (मस्तक पर भस्म लगाते हुए)

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं, इति ग्रीवायाम् (ग्रीवा में)

ॐ यद्देवेषु आयुषम्, इति दक्षिणबाहुमूले (ये दक्षिण कंधे पर)
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्, इति हृदि (वक्षस्थल पर)

आयुष–तीन प्रकार के स्वास्थ्य वर्धक दिव्य अनुग्रह है–भौतिक, दैविक एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से पूर्ण, चेतना की आधारभूत ज्योति यज्ञ से प्राप्त हुतशेष में है।

आयुष की विधि को कश्मीरी भाषा में अग्नट्योक (अग्नि टीका)/ अग्नि तिलक कहते हैं।

अर्थ तर्पणमः–

अनेन श्री शारिका सहस्त्रनाम होमेन ॐ ह्रीं श्रीं हूँ फ्रां आं शां शारिका भगवती प्रीयतां प्रीतास्तु।

अथ शान्ति मंत्र (कलश के जल से लव देते हुए पढ़ें)

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वꣳ शान्ति, शान्तिरेव शान्ति, सा मा शान्तिरेधि॥

ॐ शान्तिः, शान्ति शान्तिः। सर्वारिष्ट–सुशान्तिर्भवतु॥

तत्पश्चात, दोनों हाथों में पुष्प लेते हुए अग्नि कुण्ड की परिक्रमा करते हुए पढ़े, तथा परिक्रमा के पश्चात पुष्प अग्नि कुण्ड में निवेदित करें :

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः, तानि धर्माणि प्रथमान्यासान्।
ते हि नाकं महिमानः सचन्त, यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

(ॐ यज्ञ के कारण ही, यज्ञ से ही, यज्ञ स्वरूप देवता प्रकट होते हैं, वही देवता धर्म की स्थापना करते हुए, उस परम धर्म को धारण करते हैं। वे ही महान् अन्तरिक्ष में विचरण करते हैं, जहाँ सृष्टि से पूर्व भी देवता सिद्धि को प्राप्त किए हुए, सिद्धि के प्रणेता बने रहते हैं।

अब कलश डून (कलश में पूजित अखरोटों का वितरण करें)

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अथ फलश्रुतिः

पुण्यं पुण्यजनस्तुत्यं नुत्यं वैष्णवसंमितम्।
इदं यः पठते देवि श्रावयेद्वा शृणोति च।
स एव भगवान्देवः सत्यं सत्यं महेश्वरि॥१॥

हे महेश्वरी! पुण्य स्वरूप, पुण्य जनों से स्तुति की गयी एवं प्रणमित-प्रणाम की गई, वैष्णव जन वैष्णवी शक्ति के उपासकों से भी सम्मत, तुम्हारा सहस्रनाम स्वरूप है। जो इस सहस्रनाम स्तोत्रावली का पाठ करता है, सुनता है या सुनाता है, वह ही भगवान शंकर महादेव की भांति सत्य स्वरूप ही बन जाता है।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं पठते नरः।
वामाचारपरो देवि तस्य पुण्यफलं शृणु।
मूकत्वं बधिरत्वं च कुष्टं हन्याच्च श्वित्रिकाम्॥२॥

एक काल में, दो काल में अथवा त्रिकाल में जो भी इस सहस्रनाम का पाठ करता है, उस साधक को वामचार पद्धति से भी अधिक फल प्राप्त होता है। (समयाचार)/कादि विद्या से इस स्तोत्र पद्धति का अनुसरण करना वरेण्य है। चाहे मूक-घूँधा हो, या बधिर-बहरा हो, कुष्ट रोगी हो, इन सभी के रोगों एवं विकृतियों का यह स्तोत्र निवारण करता है।

वातपित्तकफान् गुल्मान्रक्त-स्रावं विषूचिकाम्।
सद्यः शमयते देवी श्रद्धया यः पठेन्निशि।
अपस्मारं कर्णपीडां शूलं रौद्रभगन्दरम्॥३॥

वात्, पित्त, कफ, गुल्मा/तिल्ली के रोग से ग्रस्त, रक्तस्राव-न ठीक होने वाला व्रण विषूचिका हैज़ा आदि व्याधियों का शमन होता है। रात्रि काल में श्रद्धा एवं भक्ति से इस महास्तोत्र का पाठ करने से यह व्याधियाँ समाप्त होती हैं।

मासमात्रं पठेद्यस्तु स रोगैर्मुच्यते ध्रुवम्।
भौमे शनिदिने वापि चक्रमध्ये पठेद्यदि।
सद्यस्तस्य महेशानी शारिका वरदा भवेत्॥४॥

एक मास तक इस स्तोत्र का पाठ करने से, निश्चय ही रोगों से

मुक्ति मिलती है। मङ्गलवार, शनिवार के दिन भी चक्रेश्वर के मध्यस्थान पर (बिन्दु केन्द्रित होकर) इसका पाठ करना वाञ्छनीय है। (चक्र का मध्य मूल त्रिकोण बिन्दु सहित कहलाता है)। निश्चय ही सदा सर्वदा महेशानी-महेश्वरी शारिका उस साधक को वर प्रदान करती है।

चतुष्पथे पठेद्यस्तु त्रिरात्रं रात्रिवृत्तये।
दत्त्वा बलिं सुरां क्षौद्रं समत्स्यमांसभक्तकम्।
वर्ब्बोलत्वग्रसाकीर्णं शारी प्रादुर्भविष्यति ।।५ ।।

चौराहे पर भी तीन रात्रियों में महास्तोत्र का पाठ वरप्रदान करने वाला है, रात्रिवृत्त से इस का पारायण अभीप्सित है। (रात्रि वृत से तात्पर्य रात्रिकाल में अनुष्ठान डालना है)।

बलि, सुरा, मत्स्य, मांस क्षौद्र निम्न स्तर के कर्म ही माने जाते हैं। यह सभी तमस् प्रदान है। वर्ब्बोलत्वग्रसा-हिलने डुलने से रेंघते हुए परिक्रमा करने से शारिका रूपिणी शारी (कश्मीरी में हॉरी) का प्रादुर्भाव अवश्य दिखता है।

यः पठेद्देवि लीलायां चितायां शवसन्निधौ।
पाठमात्रं त्रिवारं तु तस्य पुण्यफलं शृणु।
ब्रह्महत्यां गुरोर्हत्यां सुरापानं तु गोवधम् ।।६ ।।

श्मशान में भी, शव की चिता के समक्ष लीला रूपिणी देवी शारिका का पाठ करते हैं। (लीला शब्द किसी से दूर रहने के कारण, जो भाव उत्पन्न होते हैं, उस बिछुडने की भावना को 'लोल' कहते हैं, इस में वेदना भी है, और मिलने की अभिप्सा और आशा भी।) देवी के लिए लालयित होने के कारण देवी को लीलाभगवती भी कहते हैं। तीन बार देवी का पाठ करने पर पाठ का फल इस प्रकार मिलता है, अतः भैरवी देवी सुनो!

ब्रह्महत्या, गुरु हत्या, सुरापान तथा गौहत्या तथा महापापों से द्रवित एवं दूषित पापों का शमन होता है।

महापातकसङ्घातं पातकं चोपपातकम्।
स्तेयं च हेमहारित्वोद्भवं पापं हि नाशयेत्।
स एव हि रमापुत्रो यशस्वी लोकपूजितः ।।७ ।।

तथा उनसे संबंधित उपपाप, चोरी करना, स्वर्ण राशि/मुद्रा की चोरी से उत्पन्न पाप कर्मों का नाश होता है। वह लक्ष्मी पुत्र धनवान, यशस्वी बनकर लोक-लोकान्तर में पूजित होता है।

वरदानक्षमो देवि वीरेशो भूतवत्सलः।
चक्रार्चने पठेद्यस्तु साधकः शक्तिसन्निधौ।
त्रिकालं श्रद्धया युक्तः स भवेद्भैरवेश्वरः॥८॥

वरदा, क्षमा स्वरूपिणी देवी साधकों की साधना में धैर्य प्रदान करती है। महादेव शिव उन साधकों को पुत्रवान, धनवान, सत्यवादी, सदाचार में तत्पर बना देता है। (शिव और शक्ति अभेद अवस्था ही हैं, उनमें द्वैतभाव कदापि नहीं होता है)। वही भैरवेश्वर कहलाता है।

किं किं न लभते देवि साधको धीरसाधकः।
पुत्रवान्धनवांल्लोके सत्याचारपरः शिवः।
शक्तिं सम्पूज्य देवेशि पठेत्स्तोत्रवरं शुभम्॥९॥

शक्ति की विधिपूर्वक पूजा करने से देवी श्री शारिका स्तोत्र का पाठ शुभ फल देने वाला है। वह साधक इस भौतिक जगत में सुखी होकर, अन्त में दिव्यलोक अर्थात् शिव-शक्ति के साथ एकाकार हो जाता है। यह शारिका सहस्रनाम मनोरथों को पूरा करने वाला अति रमणीय एवं मनोरम है।

इहलोके सुखीभूत्वा परत्र च दिवं व्रजेत्।
इति नामसहस्रं तु शारिकाया मनोरम्।
गोप्यं गुह्यतमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत्॥१०॥

भौतिक संसार में यह अति गोपनीय है, गुह्य रूप में गठित है, एवं गुप्त है। जिस प्रकार हे भैरवी! योनि मुद्रा गोपनीय है, उसी प्रकार देवी शारिका के बीजाक्षर भी गोपनीय रहस्यमयी है।

इति श्री शारिका देव्याः सहस्रनाम स्तोत्रम्॥

श्रीचक्र की अवधारणा

शक्ति भी शान्ति भी देवी के स्तवन में, **अष्टोत्तर शतनाम** में तथा सहस्त्रनाम में निहित हैं। परा शक्ति स्वयं वर्णात्मिका स्वरूपिणी है। बीजाक्षर उसी शक्ति के विभिन्न हिरण्यमयी स्वरूप हैं। शाक्तमत के अनुसार स्तोत्र, मंत्र, शब्द, यंत्र, अनुष्ठान, छन्द, देवता, तत्त्व का पारस्परिक सम्बंध है। जहाँ मंत्र की श्रेष्ठता पाई जाती है, वहीं पर यंत्र की अपनी विशेषता भी है। **यंत्र, मंत्र** तथा **तंत्र** देवी का स्वरूप तीन प्रकारों से वर्णित हो सकता है। ऐसा अभिप्राय है, कि परा शक्ति के विलास, वैभव तथा उल्लास मंत्र साधना से, **बिन्दु-त्रिकोण, वसुकोण** आदि दशार युगम एवं भूपुर से आकृत करके मंत्र साधना, तंत्रोक्त विधान से की जाती है। शक्ति साधक, तंत्र एवं आगम शास्त्र के उपचारों के अनुसार चलकर, गुरु से दीक्षा प्राप्त करके **'चैतन्यमात्मा'** की अनुभूति कर सकता है। पराशक्ति का प्रसार सृष्टियात्मक स्वरूप है। इसी सष्टि नियम के द्वारा श्रीविद्या की उपासना की जानी है। वेद सम्मत निरूपण श्रुति की आधारशिला है। अत: वैदिक रात्रि सूक्त, देवी सूक्त, श्री सूक्त, लक्ष्मी सूक्त, पृथ्वी सूक्त आदि आगम शास्त्रों के विकास में अधिक महत्त्वपूर्ण है।

श्रीविद्या की सुन्दरता भावपूर्ण रस रूपिणी महा विद्या है, जो **श्रीयंत्र** युक्त सौंदर्य की अवधारणा से है। इस विद्या में **कुण्डलिनी** को अनुभव करना, तथा उसको जाग्रत करना है। **तद्भव** से **तत्स्वरूप** का होना ही **श्रीविद्या** का महत्त्व है। कुण्डलिनी जाग्रण ही शाक्तमत के अनुसार मोक्ष का मार्ग है। अत: इस यौगिक प्रक्रिया को बहिर्याग कहा गया है। अन्तर्याग में बीजाक्षर पर केन्द्रित जाप, नाम स्मरण, शब्द पर आधारित स्पन्दन है। कौलाचार में स्वर्ण निर्मित श्रीयन्त्र अथवा रजत् या भूर्जपत्र (भोजपत्र) अथवा ताम्र पट पर रेखाङ्कित यन्त्र अभिषिक्त करके पूजा जाता है। कौलाचार के साधक अवरोहण चक्र में ही **श्रीचक्र** का आभास कर लेते हैं। इस प्रकार **कौलाचार** एवं

दक्षिणाचार दोनों प्रकार से श्रीचक्र की पूजा, अर्चना, साधना वाञ्छनीय है।

श्रीचक्रेश्वर, महालक्ष्मी का ही रेखाकार रूप है, जिसका प्रारूप आरोहण भी है और अवरोहण भी। **अष्टादशभुजा श्री शारिका** का अति मृदुल भव चक्र, सर्व सौख्य प्रद चक्र है। इस चक्र के भीतर नव चक्र–आरोहण के पांच त्रिकोण, शक्ति का स्वरूप है, और अवरोहण के चार त्रिकोण शिव का स्वरूप है। **वामकेश्वर** तंत्र के आधार पर भोग एवं मोक्ष प्रदान करने वाला है।

शिव रात्रि, होराष्टमी, श्री पञ्चमी, ज्येष्ठाष्टमी, आषाड नवमी एवं माघ कृष्ण पक्ष शिव चतुर्दशी के दिन श्रीचक्र के यंत्र को अणुप्राणित किया जाता है।

समन्वयात्मक रूप से देवी–देवताओं का वास श्रीचक्र में ही है अतः नवचक्रों की अवधारणा इस प्रकार है–

1+1+8+10+10+14+8+16+ भूपुर

भूपुर के चारों द्वारों में क्रमशः दस मुद्रा शक्ति, दस दिक्पाल, आठ मातृकाएं + दस सिद्धियाँ वास करती हैं।

काम कला विलास के अनुसार श्रीयंत्र माता त्रिपुर सुन्दरी का शब्द शरीर, रेखा शरीर, वर्णात्मक स्वरूप, मंत्र महौषधि हैः

माता मानं मेयं बिन्दुत्रयभिन्न बीजरूपाणि।
धामत्रयपीठ त्रय शक्ति त्रयभेद भावितान्यपि च॥
तेषु क्रमेण लिङ्ग त्रितयं तद्वच्च मातृकात्रितयम्।
इत्थं त्रितयपुरी या तुरीयपीठादि मेदिनी विद्या॥
इति काम कला विद्या देवी चक्र क्रमात्मिका सेयम्।
विदिता येन स मुक्तो भवति महात्रिपुरसुन्दरी ह्रपः॥

(काम कला विलास 13, 8)

प्र (माता), प्र (मान), प्र (मेय) अथवा ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय की त्रिपुटी त्रिपुर है। इनकी अधिष्ठातृ स्वरूपिणी त्रिपुरा देवी है। यह त्रिबिन्दु बीजरूप हैं। **त्रिशक्ति-महाकाली, महालक्ष्मी, महा सरस्वती** भेद रूप से तीन हैं, अन्यथा शक्ति केवल **पराशक्ति** है। पराशक्ति क्रम से त्रिलिङ्ग-त्रि **मातृका, त्रिपुरा प्रादुर्भाव** में आती है। यही तुरीय पीठ आदि मेदिनी विद्या है। इसी विद्या स्वरूपिणी शक्ति को देवी (श्रीचक्र) के अन्तर्गत क्रम से **कामकला** विद्या से जाना जाता है।

ह्लादिनी सन्धिनी संविदभिधानान्तरङ्गिका।

तटस्था बहिरङ्गा च जेयन्ति प्रभुशक्तयः॥

श्रीचक्र के अन्तर्गत पाञ्च शक्ति चक्रों एवं चार शिवचक्रों की संधि आह्लादिनी शक्ति, अंकित है, अन्तरङ्ग चक्रों का अन्तर्याग के कारण इस का अभिधान-नाम, संज्ञा से संवित् शक्ति है, और बहिरङ्ग से तटस्थ होकर, शक्ति के प्रभाव से **जयन्ति देवी** कहलाई जाती है।

समयाचार परम्परा के शक्ति उपासक श्रीचक्र को सृषि क्रम के अन्तर्गत देखते हैं। पहले एक त्रिकोण का निर्माण किया जाता है, ठीक उसके मध्य में बिन्दु डाला जाता है, फिर उसी को आधार बनाकर वसुकोण / अष्टकोण को समरूप से बनाया जाता है। तत्पश्चात् अन्तर्दशार-दस अर युक्त चक्राकार और बहिर्दशार से होते हुए चतुर्दशार बनाया जाता है।

अष्टदल, षोडश दल का निर्माण होता है, जिसे 'चन्द्र ज्ञान विद्या से अभिहित किया जाता है। इस पद्धति में चतुः चक्र-बिन्दु, अष्टदल, षोडशदल, शिव तत्त्व (चक्र) कहलाये जाते हैं। यही मूल त्रिकोण, अष्टकोण, दशकोण, चतुर्दश कोण शक्ति चक्र (तत्व) से पारस्परिक संधि में होते हैं।'

समयाचार की दूसरी विधि में अष्टदल कमल, षोडशदल कमल, वृत्त त्रय, भूग्रह (भूपुर), शिव चक्र कहलाते हैं। इस प्रकार मूल त्रिकोण शिव तथा शक्ति चक्र का समन्वयात्मक चक्र कहलाया जाता

है। वामकेश्वर तंत्र के अनुसार बिन्दु भी अपने आप में पूर्ण चक्र है, परन्तु वृत्तत्रय चक्र नहीं है। इस कथन के अनुसार, मध्य में बिन्दु, त्रिकोण, अष्टकोण, दशार युग्म, चतुर्दशार, बहिर्वृत्त में अष्टदलकमल, षोडशदशकमल एवं भूपुर हैं। नामकरण इस प्रकार हैं–

1. बिन्दु – सर्वानन्दमय चक्र – रक्तवर्ण केन्द्रस्थ
2. त्रिकोण – सर्वसिद्धि प्रद चक्र – पीतवर्ण आदि त्रिकोण
3. वसुकोण – सर्वरक्षा चक्र – हरितवर्ण–अष्ट त्रिकोण
4. दशार – सर्वरोग हर चक्र – कृष्ण वर्ण - दश त्रिकोण
5. दशार – सर्वार्थ साधक चक्र – रक्तवर्ण–दश त्रिकोण
6. मन्वसग्र – सर्वसौभाग्य दायक चक्र – नीलवर्ण–चतुर्दश त्रिकोण
7. अष्टदल – सर्वसंक्षोभण चक्र – पाटलवर्ण–अष्टपद्म
8. षोडशदल – सर्वाथा परिपूरक चक्र – पीतर्वण–षोडश पद्म
9. भूपुर – त्रैलोक्य मोहन चक्र – हरितवर्ण–चर्तुद्वार

बिन्दु भगवती त्रिपुर सुन्दरी का अव्यक्त होते हुए भी व्यक्त स्वरूप है।यही श्री ललिता, बाला त्रिपुर सुन्दरी एवं अष्टादश भुजा श्री शारिका है। आदि बिन्दु नाद एवं चन्द्र बिन्दु के तीन बिन्दु ँ के संयोग से बना है।

निम्नलिखित कश्मीर प्रदेश में होराष्टमी के दिन भी श्रीचक्र का अभिषेक किया जाता है। विविध पदार्थों से श्रीयंत्र का निर्माण संभव है :

१. पारद, २. स्फटिक, ३. स्वर्ण, ४. मणि, ५. रजत, ६. भोजपत्र इसके लिए अनुष्ठान का समय दीपावली की रात्रि, पूर्णिमा बताई जाती है।

ॐ श्री चक्रेश्वराय नमः श्रीचक्रराजनिलयायै नमः
ॐ श्री शारिकायै नमः श्री अष्टादशभुजायै नमः
ॐ श्री राजराजेश्वर्यै नमः श्रीत्रिपुरसुन्दर्यै नमः

मूल मंत्र

क ए ई ल ह्रीं, ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

श्रीराजराजेश्वरी स्तुतिः

ॐ नमोभवान्यै

ॐ छन्दः पादयुगा निरुक्त सुमुखा शिक्षा च जंघा युगा
ऋग्वेदोरुयुगा युजुः सुजघना या सामवेदो दरा।
तर्कन्यायकुचा श्रुति स्मृति युक् काव्यादि वेदानना
वेदान्तामृतलोचना भगवती श्रीराज राजेश्वरी॥ १॥

श्री राजराजेश्वरी, श्री चक्ररूपिणी चक्रेश्वरी के युगलपाद वेदों में वर्णित छन्द शास्त्र हैं। निरुक्त-वैदिक शब्द व्युत्पत्ति, शिक्षा-शब्द उच्चारण एवं काव्याभ्यास, उसकी दो जाँघें हैं। ऋग्वेद उसके दो ऊरू हैं, यजुर्वेद सुशोभित जंघा है, सामवेद उदर है। तर्क तथा न्याय शास्त्र कुचा एवं वक्षस्थल हैं। श्रुति और स्मृति युक् अर्थात् अस्थि संधि Bone Joints हैं। काव्यादि वेद रूपी मुख हैं। वेदान्त अमृतमयी नेत्र हैं। ऐसी ही भगवती परा शक्ति राज राजेश्वरी का प्रिय बिन्दु स्वरूप है। ॥ १॥

क – कल्याणायुत पूर्ण-बिम्बि-वदना पूर्णेश्वरी नन्दिनी।
पूर्णा पूर्णतरा परेश महिषी पूर्णामृतास्वादिनी॥
सम्पूर्णा परमोत्तमामृतकला विद्यावती भारती।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥२॥

क – कल्याण देने वाली–(सूर्य चन्द्रमा से युक्त गोलाकार) मुख वाली, पूर्णेश्वरी, नन्दनवन जैसे दिखने वाली, पूर्णिमा की भांति तथा पूर्णतासे जो कुछ भी है, ऐसी परमेश्वरी, पूर्ण अमृत देने वाली चक्रेश्वरी सम्पूर्ण है। परमा-अमृतकला से आवृत्त परम उत्तम विद्या स्वरूपिणी विद्यावती सरस्वती शारदे! श्री राज राजेश्वरी! श्री चक्र के मध्य में उल्लसित प्रिय बिन्दु परा पूजा में ही वास करती है॥ २॥

ए – एकाकारमनेकवर्ण विविधाकारैक चिद्रूपिणी
चैतन्यात्मक एकचक्ररचिता चक्रांग-एकाकिनी॥

भावावावविभाविनी भयहरा सद्भक्त चिन्तामणि:
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥३॥

ए – ए से अनेक वर्णों में भी एकाकार हो। विविध आकारों में भी चिद्स्वरूपिणी शक्ति हो। चैतन्य स्वरूपा हो, एक चक्र में तेरा 'निलयम्' है। नव चक्रों में भी एक ही हो। अकेला-'एकमेव' तुम्हारा आभास है। भाव, अभाव, विभाव-होना, न होना, विशेष रूप से होना ही तुम्हारी प्रकृति है। भय को दूर करने वाली सद्भक्तों के लिए चिन्तामणि रूपी श्रेयस्यकर विभूति हो। श्रीचक्र के मध्य में उल्लसित प्रियबिन्दु में ही परा शक्ति का वास है॥ ३॥

ई – ईशाधीश्वर योगिवृन्द विधृता स्वानन्द-भूता परा
पश्यन्तीत्यनु मध्यमा विलसती श्रीवैखरी रूपिणी।
आत्मानात्म-विचारिणी त्रिनयना विद्यावती भारती
श्रीचक्र प्रियबिन्दु तर्पणपरा श्रीराज राजेश्वरी॥ ४॥

ई – ईश्वरी तथा सर्वेश्वरी! योगियों में चिन्मयभाव से आनन्द प्रदान करने वाली हो, परा, पश्यन्ती, मध्यमा एवं वैखरी रूपिणी, 'श्रीवाक्' की अभिव्यक्ति हो। आत्मभाव से ही जीवात्मा में वास करने वाली त्रिनयना-सूर्य, सोम, अग्नि स्वरूपा नयनों वाली, विद्यावती राजराजेश्वरी हो। श्रीचक्र के मध्य में उल्लसित प्रिय बिन्दु में ही पराशक्ति का वास है॥ ४॥

ल – लक्ष्यालक्ष्य निरीक्षणा निरुपमा रुद्राक्षमाला धरा।
साक्षात्कारण दक्षवंश कलिता दीर्घाति-दीर्घेश्वरी॥
भद्राभद्र वरप्रदा भगवती भद्रेश्वरी भद्रदा।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥ ५॥

ल – लक्ष्य-ध्येय हो! सर्वत्र तुम्हारा ही निरीक्षण है, अत: अलक्ष्या कहलाती हो। निरुपमा होने के कारण तुम्हारी उपमा हो ही नहीं सकती। सदैव रूद्राक्ष माला धारण करती हो। दक्ष के वंश में जन्मी सती तुम ही हो। दीर्घातिदीर्ध गति तक तुम्हारा

ध्वन्यात्मक शब्द-शरीर है। भद्र-पीठ पर आसीन, वरदा भगवती, भद्रेश्वरी होकर भद्र-कल्याण प्रदान करने वाली देवी! तुम्हारा वास श्री चक्र के मध्य में आसीन, जो सब प्रकार से भद्रपदा है, वही राजराजेश्वरी परा शक्ति हो॥ ५॥

ह्रीं - **ह्रींबीजानल नाद बिन्दु भरिता ओंकार नादात्मिका।**
ब्रह्मानन्द घनोदरी गुणवती ज्ञानेश्वरी ज्ञानदा॥
इच्छा-ज्ञान-क्रियावती जितवती गन्धर्व संसेविता।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥६॥

ह्रीं - ह्रीं बीजाक्षर जो लज्जाबीज से समादृत है, वही अग्नि स्वरूप नाद बिन्दु है। सत्कार-सद्रूपी ओंकार नादात्मिका रूपी ब्रह्मानन्द में लीन, मेघों से आच्छादित त्रिगुणमयी-सत्त्व, रजस् तमस् से पूर्ण ज्ञान की देवी शारिका-वर्णात्मिका तुम ही हो। ज्ञानेश्वरी ज्ञानमयी देवी-इच्छा, ज्ञान, क्रिया से पूरित हो। जितवती हो; गंधर्वों से सुसेवित हो। श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण से उल्लसित श्रीराज राजेश्वरी पराशक्ति हो॥ ६॥

ह - **हर्षोन्मत्त सुवर्ण पात्रभरिता पार्श्वोन्नता घूर्णिता।**
हुँकार प्रिय शब्दब्रह्म निरता स्वारस्वतोल्लासिनी॥
सारासार विचार चारुचरिता वर्णाश्रमाकारिणी।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥ ७॥

ह - हर्ष से उन्मत्त होकर सुवर्ण (सोने) के पात्र-हिरण्य गर्भ में तेरा भरण होता रहता है। पास (समीप) में उन्नत होकर अर्थात् विशालकाय होकर हुङ्कार करती हुयी सृष्टि को हिलाती हो। शब्द ब्रह्म का प्रिय ॐकार नाद करती हुई सारस्वत शब्द 'ऐं क्लीं सौः' का उल्लास भरती हो। सारभूत तत्त्व एवं असार रूप अंधकार का विचार चरितार्थ करके वर्णाश्रम का विधान बनाती हो। तुम ही श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण से उल्लसित श्री राजराजेश्वरी पराशक्ति हो॥ ७॥

स – सर्वज्ञान कलावती सकरुणा सन्नादिनी नन्दिनी।
सार्वान्तर्गत शालिनी शिवतनू सन्दीपिणी दीपिनी
संयोग-प्रियरूपिणी प्रियवती प्रीता प्रतापोन्नता।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥ ८॥

स – सर्व ज्ञान, सम्पूर्ण कलाओं से युक्त होकर करुणामयी देवी सत् नाद (सन्नाद) रूपिणी कामधेनु नन्दिनी हो। सभी के अन्तःकरण में स्थित् शालिनी हो। शिव की कोमलाङ्गी शिवा हो। ज्वलनशील-संदीपिणी दीपिका हो। प्रिय रूपिणी प्रियवती प्रीता, प्रताप-शौर्य से उन्नत हो, तो तुम ही इनका समन्वित रूप भी हो। श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण से उल्लासित श्री राजराजेश्वरी पराशक्ति हो॥ ८॥

क – कर्माकर्म विवर्जिता कुलवती कर्मप्रदा कौलिनी
कारूण्यावधि सर्व कर्म निरता सिन्धुप्रिया शालिनी॥
पूर्ण ब्रह्म सनातनान्तरगता ज्ञेया स्वयोगात्मिका।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥ ९॥

क – कर्म तथा अकर्म का त्याग करके 'कुलाचार' कौलिनी में तल्लीन होकर करुणा की मूर्ति हो। निरत स्वर से आवृत होकर सिन्धु सरिता रूपिणी प्रिय स्वभाववाली जननी हो। सनातन, शाश्वत, अनन्त, निरन्तर प्रवाहित योगिनी स्वरूपा ज्ञान द्वारा जानी हुई, स्वयोगात्मिका हो। श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पण से उल्लसित श्री राजराजेश्वरी परा शक्ति हो॥ ९॥

ह – हस्तिकुम्भ सदृकपयोधर वरा पीनोन्नता नम्रगा।
हाराद्याभरणा सुरेन्द्र विनुता शृङ्गाटपीठालया॥
योन्याकारक योनिमुद्रित-करा नित्यं सुवर्णात्मिका।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥१०॥

ह – हस्ति कुम्भ (हाथी के मस्तक का ललाट स्थल) के सदृश्य तुम्हारे पीनोन्नत (अति स्थूल) स्तन अमृत रूपी दूध को धारण करते हुई झुक जाते हैं। दिव्य हार आदि आभूषणों से पूजित

हो, सुरेन्द्र -इन्द्र शृङ्गपीठ-पर्वत्तीय पीठालय में विनम्र होकर भव्य रूप में पूजता है। योनि मुद्रा में योन्याकर द्वारा नित्य ही तुम्हारे सुशोभित वर्णात्मिक भव्य स्वरूप का ध्यान भक्त करते हैं। श्रीचक्र का प्रिय बिन्दु तृप्ति प्राप्त राजराजेश्वरी का परा स्वरूप है॥ १०॥

ल – **लक्ष्मी लक्षणपूर्ण कुम्भवरदा लीला विनोदस्थिता।**
लाक्षारञ्जित पद्मपाद युगला ब्रह्माण्ड संसेविता॥
लोकालोकित लोककाम जयिनी लोका श्रयाङ्काश्रया।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥११॥

ल – लक्ष्मी लक्षणा शब्द-शक्ति से युक्त पूर्ण कुम्भ रूपी देवी वरदा हो। लीला से युक्त विनोद में आसीन होकर लाख से रञ्जित तुम्हारे दो पद्म पाद सारे ब्रह्माण्ड को समाये हुए हैं। तीनों भुवनो-भूः, भुवः, स्वः को आलोकित करने वाली देवी, काम कला को अपने अधीनस्थ रखकर, त्रिलोकी को अपने आश्रय में लेती हो। श्रीचक्र का प्रिय बिन्दु से तृप्ति प्राप्त राजराजेश्वरी परा प्रकृति हो॥ ११॥

ह्रीं – **ह्रींकाराङ्कित शङ्कर प्रियतनुः श्री योग पीठेश्वरी।**
माङ्गल्यायुत पङ्कजाभनयना माङ्गल्यसिद्धिप्रदा॥
तारुण्यात्तपसार्चिता तरुणिका तन्त्रोपमातन्विता।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥१२॥

ह्रीं – ह्रींकार से अंकित अर्थात् लज्जा बीज में गर्भित शंकर की प्रियतनु-अर्द्धाङ्गिनी हो, श्रीयुक्त योग स्वरूपा हो। प्रद्युम्न पीठ (शारिका पर्वत) पर आसीन हो। मंगल मूर्ति, नेत्र कमल से कटाक्ष करती हुई, मङ्गल की ममतामयी देवी सिद्धिधात्री हो। तरुण आकृत्ति वाली देवी, तपस्या की प्रतिमूर्ति, तन्त्रों से तन्वित/आवृत्त अथवा समाहित होना ही चैतन्य का आभास है। श्रीचक्र का प्रिय बिन्दु, तर्पणपरा दूर्गा श्री राज राजेश्वरी परा शक्ति का स्वरूप हो॥ १२॥

स – **सर्वेशाङ्गविहारिणी सकरुणा सर्वेश्वरी सर्वगा।**
सत्या सर्वमयी सहस्त्रदलगा सप्तार्णवोपस्थिता॥
सङ्गासङ्ग विवर्जिता सुखकरी बालार्क कोटिप्रभा।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥१३॥

स – सर्वेश्वर–शिव के अङ्गों में विहार करती हुई, करुणा की ममता मयी जगत्–जननी सर्वश्वरी नाम से समाहित हो। सर्वत्र तुम ही हो, सर्वत्र तेरा ही आभास है, अतः सर्वत्र 'साम गायन' द्वारा पूजी जाती हो। सत्य स्वरूपा जननी, सहस्त्रारके चक्र में स्थित होकर सप्त समुद्रों में तुम ही हो। सङ्ग एवं असङ्ग (युक्ति एवं अयुक्ति) को लाँघ कर ही सम्पूर्ण सुख को देने वाली, बालार्क–अरुणोदय की कोटि प्रभा (अनेकों सूर्य किरणों) से युक्त राज राजेश्वरी श्रीचक्र प्रिय बिन्दु ही पराशक्ति का सौम्य स्वरूप हो॥ १३॥

क – **कादिक्षान्त सुवर्ण बिन्दु सुतनुः स्वर्णादि सिंहासना**
नानारत्न विचित्रिचित्ररचिता चातुर्य चिन्तामणिः॥
चितानन्द विधायिनी सुविपुला कोटित्रयीश्यम्बिका
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥१४॥

क – कादि–विद्या की अधिष्ठात्री देवी कवर्ग से क्ष (संयुक्त अक्षरों) तक तुम्हारा ही शब्द विस्तार है, उसी में हिरण्यमयी आभायुक्त बिन्दु–'चन्द्र बिन्दु', अपने आप में सुदृढ़ शरीर है, अर्थात् सभी बीजाक्षरों में ँ की अनुनासिक ध्वनि ही जिसका स्वरूप है, जैसे ऐं, ह्रीँ, क्लीँ, श्रीँ, आँ, फ्राँ, अँ, कँ, टँ, तँ, पँ इत्यादि वर्णों से गर्भित तुम्हारा पीठासन सुशोभित है। वही सर्वश्रेष्ठ कल्याण पद, चित्त को आनन्द देने वाली, विपुल विस्तृत आभा वाली, त्रिकोटि देवताओं की अधीश्वरी अम्बिका हो। श्रीचक्र का प्रिय बिन्दु, तृप्ति एवं परातृप्ति का वैभव ही पराशक्ति का स्वरूप है॥ १४॥

ल – **लक्ष्मीशादि विरिञ्चि चक्र मुकुटाद्यष्टाङ्ग पीठार्चिता**
सूर्येन्द्वग्निमयैक-पीठनिलया चिन्मात्र कौलेश्वरी।
गोप्त्री गुर्विणि गर्विता गगनगा गङ्गा गणेशप्रिया।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।॥१५॥

ल – लक्ष्मी के स्वामी नारायण, विरञ्चि ब्रह्मा, चक्र-मुकुट आदि आयुधों-आभूषणों से युक्त अष्टाङ्ग पीठ (प्रद्युम्न पीठ) द्वारा पूजित एवं अर्चित हो। सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा जिसके तीन नेत्र हैं, ऐसी श्रेयस्करी गुणमयी शक्ति, चैतन्य स्वरूपिणी, चिन्मात्र कौलेश्वरी हो, अर्थात कुलार्णव तंत्र द्वारा अभिप्सित हो। गुप्त से गुप्त तुम्हारी साधना है, उसी से अति गर्विता उद्दण्ड भी हो, गगन-आकाश की अनन्त आभा हो। आदिदेव गणेश की आराध्या प्रिय जननी हो। श्री चक्र में वास करने वाली, प्रिय बिन्दु की विमर्श शक्ति ही तुम्ही परा शक्ति का स्वरूप है।॥ १४॥

ह्रीं – **ह्रींकार त्रयरूपिणी समयिनी संसारिणी हंसिनी।**
वामाचार परायणा सुमुकुटा बीजावती मुद्रिणी॥
कामाक्षी करुणा विचित्र रचिता श्री श्री त्रिमूर्त्यात्मिका।
श्रीचक्र प्रिय बिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी॥१६॥

ह्रीं – **ह्रीं**-कारिणी त्रयरूपिणी-महाकाली, महालक्ष्मी, महा सरस्वती हो। समयाचार-दक्षिणाचार द्वारा सुपूजित, वैष्णवी स्वरूपा (ह स क ह ल युक्त १५ अक्षरात्मिका हो)। संसार को सृजन करने वाली, हंसः/हंसिनी (सः + अहं = सोऽहं) की शुद्धसत्व चैतन्यमयी शक्ति है। वामाचार में भी विचरण करने वाली देवी हो। मुकुट से सुशोभित सकल बीज जननी हो। अतः 'आदिक्षान्तं' अक्षर मूर्ति हो। मुद्रिणी-नैवेद्य मंत्र के प्रारम्भरिक शब्द-अमृतेश मुद्रया, अमृतीकृतं, अमृत वस्तु की मुद्रिणी शक्ति हो। कामेश्वरी कामाक्षी अपने नेत्र कटाक्ष से उद्भवकारिणी जननी हो तथा करुणा की प्रतिमूर्ति हो। विचित्र रूपा चित्रिणी हो। श्रीमहालक्ष्मी हो, श्री त्रिमूत्तिमयी, कीर्ति, वाक् तुम ही हो। श्रीचक्र का मूल

त्रिकोण बिन्दु सहित, अति प्रिय-सौम्य स्वरूप परा शक्ति का ही रूप हो॥ १६॥

सा बिम्ब-प्रतिबिम्बलम्बित लसत्-बिम्बाधरा याम्बिका।
जम्बीरोत्पल कर्णशोभितमुखा जम्बूफल श्रीकुचा॥
नानारत्न किरीट दीप्ति लसिता प्रत्यक्ष दीक्षात्मिका।
श्रीचक्र प्रियबिन्दु तर्पणपरा श्रीराज राजेश्वरी॥ १७॥

बिम्ब-सूर्य, चन्द्रमा का मण्डलाकार तथा उसी का प्रतिबिम्ब तुम में ही है। विश्व क्रीढ़ा में लम्बित होना अर्थात् लटकन भी तुम्हारा ही रूप है। तुम्हारे होंठ बिम्भ पुष्प की भांति रक्तवर्ण के हैं। कर्णफूल तुम्हारे जम्बीर और उत्पल पुष्पों के हैं, मुख की आकृति जम्बूफल की भान्ति है, तुम्हारा वक्षस्थल श्रीयुक्त है। मुकुट में नाना प्रकार के रत्न हैं, जिसकी विभासा दीप्तिमान है। तुम्हारे द्वारा प्रदत्त वर्णात्मिका दीक्षा, तुम्हारा ही वर्ण स्वरूप है। श्रीचक्र का प्रिय बिन्दु, तर्पण से परिपूर्ण श्री राजराजेश्वरी का परात्पर स्वरूप हो॥ १७॥

यत्तेजो निधिभिस्त्वनन्त-घृणिभि-र्नोपाह्यते प्रेरितुं।
हार्दं ध्वान्तमपास्य सिक्षणपि तद्धयान मात्रा दृशा।
यत्सद्भादनुभाति सर्वमुदितं भानुं यथा पद्मिनी॥
प्रत्यग्दाम नमामि तत्तव वपुः श्रीराज राजेश्वरी॥ १८॥

जिसका तेज अनन्त निधियों में भी समाया नहीं जाता है। सर्वत्र जहाँ घृणि:/प्रकाश की किरणें हैं। उसी आभा से हम भी प्रेरित होकर, ध्यान मात्र से क्षण मात्र में ही कृपा के पात्र बनते हैं। सारा ध्वान्त/अन्धकार नष्ट होता है। सद् का आभास जो भी है, उसी के उन्मेष में दीप्ति उदित होती है। जिस प्रकार सूर्य से पद्मिनी विकसित एवं उल्लसित होती है उसी प्रकार बिन्दु का प्रिय स्वरूप उद्भासित होता है। श्री राज राजेश्वरी, प्रत्येक रूप से प्रत्यक्ष रूप से तुम्हारे अतुलित दाम को नमन-प्रणाम करता हूँ॥ १८॥

॥ इति शुभम्॥

श्री शारिके! शरण्ये त्वां मयि दासे कृपां कुरु।
ऋणं-रोगं-भयं-शोकं रिपुनाशाय सत्वरम्॥

हे शारिके। मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। मुझ दास पर कृपा करके ऋण, रोग, भय, शोक और समस्त शत्रुओं का नाश शीघ्र कर लो।

शान्ति पाठ

ॐ शं नो मित्रः। शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा।
शं नो इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरूक्रमः।
नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामावेत्, तद्वक्तारमावेत्, आवेत् माम्, आवेत् वक्तारम्।

(ऋग्वेद का मन्त्र)

ॐ यानि कानि च पापनि, ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति, प्रदक्षिणा पदे-पदे॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
सर्वं वै पूर्णमस्तु॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अथ शारिका स्तुतिः

बीजैः सप्तभिः उज्जवला कृतिरसौ या सप्त सप्तिद्युतिः।
सप्तर्षि प्रणताङ्घ्रि पङ्कजयुगा या सप्तलोकर्तिहृर्त॥
काश्मीर प्रवरेश मध्य नगरे प्रद्युम्न पीठे स्थिता।
देवी सप्तक संयुता भगवती श्रीशारिका पातु नः॥

ॐ जय भगवति विन्ध्यावासिनि कैलासवासिनि श्मशानवासिनि हुङ्कारिणी कालायनि कात्यायनि हिमगिरितनये कुमार मातः गोविन्द भगिनि शितिकण्ठाभरणे अष्टादशभुजे भुजङ्गवलय मण्डिते केयूर हाराभरणे अजेय खड्ग डमरू मुद्गर चषककल शरचाप वरा-अभय पाश पुस्तक कपाल खट्वाङ्ग गदा मुसुल तोमर चक्रहस्ते कृपापरे प्रभूतिः विविध आयुधे चण्डिके चण्डघण्टे किरात वेशे ब्रह्माणि रूद्राणि नारायणि ब्रह्मचारिणी दिव्य तपः विद्यायिनि वेदमातः गायत्रि, सावित्रि, सरस्वति सर्वाधारे सर्वेश्वरि विश्वेश्वरी विश्वकर्त्ति समाधि विश्रान्तिमये चिन्मये चिन्तामणि स्वरूपे कैवल्ये शिवे निराश्रये निरूपाधिमये निरामयपदे ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नमिते मोहिनि तोषिणि भयङ्कर नाशिनि दितिसुत प्रमथिनि काले कालकिङ्कर - मथिनी कालाग्नि शिखे कालरात्रि अजे नित्ये सिरन्ते योगरते योगेश्वर नमिते भक्तजन-वत्सले सुरप्रिय कारिणि दुर्गे दुर्जय हिरण्ये कुरूमां दयाम्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

॥ श्री शारिका देवी स्तुति ॥

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां,
लोकातीतै-योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु रूहा-क्षीम् अहम्-ईड्ये॥
शारिकां अम्बाम् अम्बु रूहाक्षीं अहम्-ईड्ये ॥१ ॥

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरूषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ्गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये॥
शारिकां अम्बाम् अम्बु रूहाक्षीं अहम्-ईड्ये ॥२ ॥

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां,
नित्य चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कल्यन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहाक्षीं-अहम् ईड्ये॥
शारिकां अम्बाम् अम्बु-रूहाक्षीं-अहम्-ईड्ये ॥३ ॥

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये॥
शारिकां अम्बाम् अम्बु-रूहाक्षीं-अहम्-ईड्ये ॥४ ॥

नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि,
व्याप्त स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये॥
शारिकां अम्बाम् अम्बु-रूहाक्षीं-अहम्-ईड्ये ॥५ ॥

ऐं क्लीं सौः

ॐ सम्वित् स्वरूपाय श्री चक्रेश्वराय नमः

ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा शारिका प्रकीर्तिता॥

॥ श्री शारिका देवी स्तुति ॥

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां,
लोकातीतै-योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु रूहा-क्षीम् अहम्-ईड्ये॥
शारिकां अम्बाम् अम्बु रूहाक्षीं अहम्-ईड्ये॥१॥

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां,
पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरूषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ्गार्ध हरां तां तनुमध्यां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये॥
शारिकां अम्बाम् अम्बु रूहाक्षीं अहम्-ईड्ये॥२॥

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां,
नित्य चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कल्यन्तीम्।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहाक्षीं-अहम् ईड्ये॥
शारिकां अम्बाम् अम्बु-रूहाक्षीं-अहम्-ईड्ये॥३॥

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला-लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये॥
शारिकां अम्बाम् अम्बु-रूहाक्षीं-अहम्-ईड्ये॥४॥

नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि,
व्याप्त स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां,
गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रूहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये॥
शारिकां अम्बाम् अम्बु-रूहाक्षीं-अहम्-ईड्ये॥५॥

ऐं क्लीं सौः

ॐ सम्वित् स्वरूपाय श्री चक्रेश्वराय नमः

ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा शारिका प्रकीर्तिता।।

OUR PUBLICATION

1. "The Saint Extra-ordinary, Bhagavaan Gopinath Ji" by Sh. T.N. Dhar, 'Kundan'
   Hard Bind = Rs. 150.00
   Paper Back = Rs. 100.00
2. "Lord Gopinath, Brevity His Beauty" by Sh. B.L. Kak (Journalist) Rs. 50.00
3. सद्गुरुदेवस्य नामावली (प्रो. मखनलाल कुकिलू, डा. चमन लाल रैणा) Rs. 45.00
4. Bhagavaan Gopinath-Akaid-O-Afquar (Urdu) By Dr. Premi Romani Rs. 50.00
5. 'भगवान गोपीनाथ जी एक विलक्षण संत' अनुवादक श्री दिलीप कुमार कौल Rs. 20.00
6. "Prakash Bhagavaan Gopinath", a multingual, quarterly Journal (some back issues also available) Rs. 50.00
7. 'क्षमा-अष्टक' लेखक श्री चमन लाल राजदान Rs. 5.00
8. टाठि बबस 'आलव' लेखक श्रीमती रानी कौल Rs. 5.00
9. श्री गुरुपादुकास्तुति रचयिता–प्रो. मखनलाल कुकिलू Rs. 5.00
10. प्रातः आराधना सम्पादक – श्री प्राण नाथ कौल Rs. 5.00
11. दो अनमोल रत्न – (नामावली, गुरु गीता) Rs. 5.00
12. पूजा संग्रह (आरती, जापमाला, गुरुपादुका स्तुति भगवान चालीसा) Rs. 10.00
13. Casettes and CD - sung by Sh. Ashok Raina also available Rs. 35.00 to 50.00
14. भाव सोदूर – प्रो. शीला नकैब, पृथ्वीनाथ कौल 'सायिल' Rs. 100.00
15. भगवान गोपीनाथ जी शतक – श्रेयांश कुमार जैन Rs. 5.00
16. Gospel of Bhagavaan Gopinath Ji edited by Sh. T.N. Dhar 'Kundan' Rs. 100.00
17. द्रव्याभिषेक विधिः – प्रो. मखनलाल कुकिलू Rs. 10.00
18. श्री शारिका सहस्रनामस्तोत्रम् एवं स्वाहाकार निरूपणम्– लेखक डॉ. चमन लाल रैना Rs. 150.00